राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

जुलाई- 2026

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

www.swarnimumbai.com

राजनीतिक शादियां...
सिर्फ रस्में नहीं,
शक्ति, संबंध और संदेश का मंच!

खान-पान से लेकर दवाओं तक...
मिलावट का खेल!

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

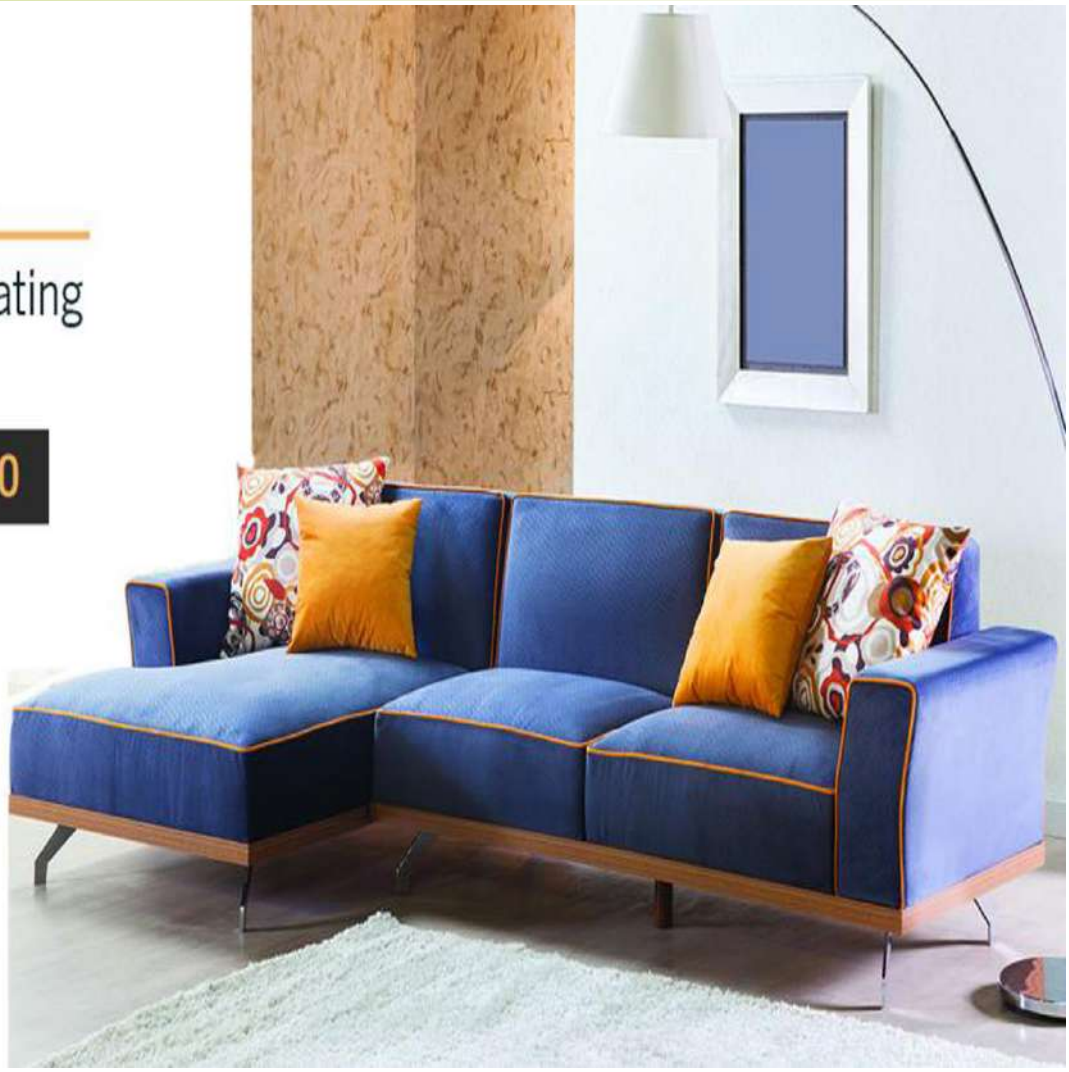

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

• वर्ष : 11 • अंक: 04 • मुंबई • जुलाई 2026

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे, तोषेश शुक्ला
एस. मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः एस.आर.प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W), Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप. हाउसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (पश्चिम)-४२११०३, जिला ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित तथा श्री सोमेश प्रिन्टर्स, कल्याण द्वारा मुद्रित।
RNI No. : MAHHIN/2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

थाली में ज़हर, तिजोरी में नोट	05
एक जन्मतिथि, दो दृष्टिकोणः जे.स्वामीनाथन और बिकाश भट्टाचार्य	16
पकवान	18
कर्मचारियों की कमी से जूझ रही मुंबई	20
क्या सीवेज का शुद्ध पानी भविष्य की प्यास बुझाएगा?	22
राशिफल	24
गोवाः सिर्फ समुद्र तट नहीं, एक जीवंत संस्कृति	26
सिनेमा	29
कीट-कीस के विद्यार्थियों ने रचा इतिहासः संताली में मंचित किए शेक्सपियर के नाटक	30
भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्राः२०२६	32
छेरापहंरा की परम्परा!	34
किराएदार लड़की	36
रजाई	44
स्मार्टफोन की बढ़ती लत	49
'सौहार्द या सियासत? एक ही मंच पर जुटे देश के धुर विरोधी नेता'	50
रबड़ की खेती	56

सुविचार :

'अगर रास्ता आसान दिख रहा है, तो संभव है कि वह आपको कहीं खास न ले जा रहा हो।'

संपादकीय

क्षणिक आवेश, असहिष्णुता और संवेदनहीनता...

मुंबई लोकल की मामूली बहस से लेकर लोहगढ़ की खाई तक... क्या हम संवेदनाओं के अंत की ओर बढ़ रहे हैं? देश की सबसे तेज़ रफ्तार शहरों में एक–मुंबई। सुबह की भागती लोकल ट्रेनें, लाखों चेहरों की भीड़, धक्कामुक्की, सीट के लिए बहस, दरवाज़े पर खड़े यात्रियों की तकरार–यह सब मुंबई की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा है। दशकों से लोग इसी भीड़ में सफर करते आए हैं। बहसें भी हुईं, झगड़े भी हुए, लेकिन अधिकांश विवाद अगले स्टेशन तक खत्म हो जाते थे। लोग गुस्से में दो बातें कहकर अपने-अपने रास्ते निकल जाते थे। लेकिन अब तस्वीर बदल रही है। हाल ही में मुंबई लोकल में मामूली कहासुनी ने देखते ही देखते एक युवक की जान ले ली। कुछ मिनटों का विवाद, कुछ पल का आवेश और एक परिवार हमेशा के लिए उजड़ गया। मुंबई लोकल की भीड़ में बिखरा हुआ एक जीवन हमें एक ही चेतावनी दे रहे हैं। खतरा केवल अपराधियों से नहीं है, बल्कि उस मानसिकता से है जिसमें गुस्सा तर्क को मार देता है, अहंकार रिश्तों को कुचल देता है और असहमति हत्या में बदल जाती है। एक समय था जब लोग रिश्ते बचाने के लिए समझौता करते थे, बहस होने पर बड़े-बुजुर्ग बीच-बचाव करते थे और गुस्सा शांत होने का इंतजार किया जाता था। आज तस्वीर बदल गई है। छोटी-सी बहस सीधे हिंसा तक पहुंच जाती है। असहमति दुश्मनी बन जाती है और क्षणिक गुस्सा किसी की जान ले लेता है। ऐसा लगता है कि धैर्य, सहनशीलता और आत्मसंयम जैसे शब्द धीरे-धीरे युवाओं की शब्दावली से गायब होते जा रहे हैं।

इसी बीच पुणे के पास लोहगढ़ किले की पहाड़ियों से आई एक और खबर ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। एक संपन्न युवक, जिसे युवती के परिवार ने विवाह के लिए पसंद किया था, भविष्य के रिश्ते की उम्मीद लेकर उसके साथ घूमने गया। लेकिन लौटकर कभी घर नहीं आया। आरोप है कि युवती ने उसे पहाड़ी से धक्का दे दिया। कारण सुनकर समाज और भी सन्न रह गया। कहा गया कि युवती उससे विवाह नहीं करना चाहती थी। उसे युवक का हकलाना पसंद नहीं था, सिर पर कम बाल होना पसंद नहीं था और शायद उसकी कल्पनाओं का 'आदर्श जीवनसाथी' भी वह नहीं था। यहाँ प्रश्न यह नहीं है कि किसी लड़की को विवाह का अधिकार है या नहीं। निस्संदेह, हर स्त्री और हर पुरुष को अपनी पसंद से जीवनसाथी चुनने का पूरा अधिकार है। यदि रिश्ता स्वीकार नहीं था, तो उसे सम्मानपूर्वक ठुकराया जा सकता था। परिवार को समझाया जा सकता था। कानून और समाज दोनों इसके रास्ते देते हैं। लेकिन क्या किसी इंसान की शारीरिक कमियों या व्यक्तिगत नापसंदगी का उत्तर उसकी हत्या हो सकता है?

मुंबई लोकल की हत्या और लोहगढ़ की वारदात एक ही कहानी के दो अध्याय हैं। दोनों हमें बता रही हैं कि हमारे समाज में बर्दाश्त करने की क्षमता खतरनाक रूप से घट रही है। आज का युवा पहले से अधिक शिक्षित है, तकनीक से लैस है, दुनिया उसकी मुट्ठी में है। लेकिन क्या वह पहले से अधिक धैर्यवान भी है? उत्तर शायद 'नहीं' है। आज छोटी-सी आलोचना अपमान बन जाती है। असहमति दुश्मनी बन जाती है। रिश्तों में 'ना' सुनना असहनीय हो जाता है। सड़क पर ओवरटेक करना अहंकार की लड़ाई बन जाता है। सोशल मीडिया पर एक टिप्पणी महीनों की दुश्मनी में बदल जाती है। ऐसा लगता है जैसे गुस्सा अब भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि जीवनशैली बनता जा रहा है। आज सोशल मीडिया ने सुंदरता के नए मानक गढ़ दिए हैं। हर चेहरा फ़िल्टर से चमकता है। हर जीवन सफलता की तस्वीर बनकर सामने आता है। ऐसे माहौल में वास्तविक जीवन के सामान्य लोग कई बार 'अपर्याप्त' लगने लगते हैं। कम बाल, हकलाना, रंग, कद, मोटापा, दुबलापन–जो बातें कभी इंसान की पहचान नहीं थीं, आज वही किसी के स्वीकार या अस्वीकार का आधार बन रही हैं। यह केवल सौंदर्यबोध का परिवर्तन नहीं है, बल्कि संवेदनाओं का क्षरण है। जब समाज इंसान को इंसान नहीं, बल्कि 'परफेक्ट पैकेज' की तरह देखने लगे, तब रिश्ते भी बाजार की वस्तु बन जाते हैं। हमने बच्चों को सफल होना सिखाया, असफल होना नहीं। हमारी शिक्षा व्यवस्था बच्चों को प्रतियोगिता जीतना सिखाती है, लेकिन हार स्वीकार करना नहीं। हम उन्हें ऊँचे अंक लाना सिखाते हैं, लेकिन गुस्से पर नियंत्रण रखना नहीं। हम उन्हें करियर बनाना सिखाते हैं, लेकिन रिश्ते निभाना नहीं। हम उन्हें अंग्रेज़ी बोलना सिखाते हैं, लेकिन संवाद करना नहीं।

यही कारण है कि जब जीवन उनकी इच्छा के अनुसार नहीं चलता, तो वे टूटते भी हैं और कई बार दूसरों को भी तोड़ देते हैं। भावनात्मक परिपक्वता केवल डिग्री से नहीं आती। वह परिवार, समाज और संस्कारों से आती है। मोबाइल ने दुनिया दी, लेकिन धैर्य छीन लिया। आज हर चीज़ एक क्लिक पर मिल जाती है। खाना चाहिए–दस मिनट में। मनोरंजन चाहिए–तुरंत। खरीदारी करनी है–कुछ सेकंड में। धीरे-धीरे प्रतीक्षा करने की आदत समाप्त हो गई है। जब जीवन में कोई बात तुरंत नहीं होती, तब निराशा पैदा होती है। यही अधैर्य कई बार हिंसा का रूप ले लेता है। डिजिटल दुनिया ने सुविधा दी है, लेकिन मनुष्य को अधीर भी बना दिया है।

हर घटना के बाद केवल पुलिस, अदालत या सरकार को दोष देना पर्याप्त नहीं होगा। हमें अपने घरों की ओर भी देखना होगा। क्या हम अपने बच्चों से रोज़ दस मिनट भी खुलकर बात करते हैं? क्या हमने उन्हें यह सिखाया है कि असहमति का सम्मान कैसे किया जाता है? क्या हमने कभी यह समझाया कि 'ना' सुनना भी जीवन का हिस्सा है? क्या हमने उन्हें यह बताया कि किसी की शारीरिक कमी उसका अपराध नहीं होती? यदि इन प्रश्नों का उत्तर 'नहीं' है, तो समस्या केवल युवाओं की नहीं, पूरे समाज की है। हर युवा दोषी नहीं है। यह भी उतना ही आवश्यक है कि कुछ भयावह घटनाओं के आधार पर पूरी युवा पीढ़ी को कठघरे में खड़ा न किया जाए।

आज लाखों युवा अपने परिवार का सहारा बने हुए हैं। कोई सीमा पर देश की रक्षा कर रहा है, कोई अस्पताल में मरीजों की सेवा कर रहा है, कोई प्रयोगशालाओं में शोध कर रहा है, कोई खेतों में मेहनत कर रहा है, तो कोई स्टार्टअप के माध्यम से रोजगार पैदा कर रहा है। समस्या पूरी पीढ़ी नहीं, बल्कि तेजी से फैलती वह मानसिकता है, जिसमें आवेग विवेक पर भारी पड़ रहा है और संवेदनाएं स्वार्थ के सामने हार रही हैं। हत्या करने वालों को कठोर सजा मिलनी ही चाहिए। कानून अपना काम करेगा। लेकिन यदि समाज वही रहा, परिवार वही रहे और शिक्षा वही रही, तो अपराधियों के चेहरे बदलेंगे, घटनाएँ नहीं। हमें स्कूलों में भावनात्मक शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और क्रोध-नियंत्रण को उतनी ही गंभीरता से पढ़ाना होगा, जितनी गणित और विज्ञान को पढ़ाया जाता है। परिवारों को बच्चों के साथ संवाद बढ़ाना होगा। सोशल मीडिया की कृत्रिम दुनिया और वास्तविक जीवन के बीच का अंतर समझाना होगा। और सबसे बढ़कर, हमें फिर से यह सिखाना होगा कि किसी इंसान का मूल्य उसके चेहरे, बालों, कद या बोलने के तरीके से नहीं, बल्कि उसके चरित्र से तय होता है। ■ -मंगला नटराजन

थाली में ज़हर, तिजोरी में नोट

चंद रुपयों के लिए हमारी सांसों का सौदा...

आजकल हमारे देश में खाने-पीने की चीजों में मिलावट का धंधा बड़े पैमाने पर पैर पसार चुका है। दूध, घी, मसाले, तेल से लेकर फल और सब्जियों तक, ऐसा कोई खाद्य पदार्थ नहीं बचा है जिसे चंद पैसों के लालच में जहरीला न बनाया जा रहा हो। चंद मुनाफाखोर अपना बैंक बैलेंस बढ़ाने के लिए मासूम लोगों की जिंदगी और सेहत के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। नकली मावा, केमिकल से पकाए गए फल, और चॉक पाउडर मिली हुई मिठाइयां आज बाजार में धड़ल्ले से बिक रही हैं। यह सिर्फ एक व्यापारिक धोखाधड़ी नहीं है, बल्कि सीधे तौर पर मानव जीवन के खिलाफ एक गंभीर अपराध है। इस मिलावटखोरी के कारण कैंसर, लिवर की बीमारियां और पेट के गंभीर रोग घर-घर की कहानी बनते जा रहे हैं। जब तक सरकार कड़े कानून लागू नहीं करेगी, भ्रष्ट अधिकारियों पर लगाम नहीं कसेगी और हम खुद एक जागरूक उपभोक्ता बनकर आवाज नहीं उठाएंगे, तब तक इन मिलावटखोरों का यह 'स्लो पॉइजन' (धीमा जहर) बेचने का काला कारोबार ऐसे ही फलता-फूलता रहेगा। अब समय आ गया है कि इस मुनाफे की भूख के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएं ताकि आने वाली पीढ़ी को एक स्वस्थ भविष्य दिया जा सके।

'जब चंद रुपयों के लालच में पूरा का पूरा सिस्टम मिलावटखोरों के आगे घुटने टेक दे... जब सुबह का दूध यूरिया बन जाए, त्योहारों की मिठाई स्लो-पॉइजन बन जाए, और आपकी थाली में आने वाली हरी सब्जियां कैंसर का जरिया बन जाएं... तब इस काले साम्राज्य को उखाड़ने के लिए सिर्फ कागजी कानून काम नहीं आते। तब जरूरत होती है एक ऐसे चेहरे की, जिसके नाम से मिलावटखोरों की रीढ़ में कंपन होने लगे। एक ऐसा अधिकारी, जिसके लिए न तो राजनेताओं के सिफारिशी फोन मायने रखते हैं और न ही किसी सिंडिकेट का रसूख। जी हां, हम बात कर रहे हैं महाराष्ट्र के खाद्य एवं औषधि प्रशासन (FDA) के पूर्व कमिश्नर और बेहद कड़क आईएएस अधिकारी तुकाराम मुंढे जैसे जांबाज अफसरों के उस 'सिंघम स्टाइल' की, जिसने मिलावटखोरी के धंधे को जड़ों से हिलाकर रख दिया।

मिलावट का यह जानलेवा खेल सिर्फ हमारी थाली (दूध, पनीर, मसालों) तक ही सीमित नहीं

है, बल्कि यह हमारी जिंदगी बचाने वाली दवाओं तक भी फैल चुका है। हाल ही में नकली दवाओं के बड़े सिंडिकेट्स और फैक्ट्रियों पर प्रशासन ने जो ताबड़तोड़ कार्रवाई की है, वह बेहद चौंकाने वाली है। मिलावटखोरों की बेरहमी का सबसे खौफनाक चेहरा हाल ही में सामने आया है, जब खाद्य एवं औषधि प्रशासन (FDA) और पुलिस की संयुक्त टीमों ने राज्य और देश के कई हिस्सों में छापेमारी करके करोड़ों रुपये की नकली और घटिया दवाएं (Counterfeit Drugs) जब्त की हैं। यह कार्रवाई इसलिए डराने वाली है क्योंकि ये नकली दवाएं कोई मामूली कॉस्मेटिक्स नहीं हैं, बल्कि इनमें कैंसर, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर और दिल की बीमारियों जैसी गंभीर जानलेवा बीमारियों की दवाएं (Life-saving Drugs) शामिल थीं।

ये मिलावटखोर इतने शातिर हैं कि वे नामी-गिरामी फार्मा कंपनियों के हूबहू नकली रैपर और डिब्बे (Packaging) तैयार करते हैं। इन दवाओं के अंदर असली सॉल्ट या केमिकल की जगह सिर्फ चौक का पाउडर, स्टार्च या साधारण ग्लूकोज भरा होता है। आम मरीज असली और नकली की पहचान कतई नहीं कर सकता। जब एक गंभीर मरीज अस्पताल में जिंदगी और मौत से लड़ रहा होता है, तब उसे दी जाने वाली दवाएं सिर्फ बेअसर मिट्टी साबित होती हैं। हालिया जब्ती और कई अवैध फैक्ट्रियों को सील किए जाने के बाद यह साफ हो गया है कि अब तुकाराम मुंढे जैसे कड़क अफसरों वाले 'जीरो टॉलरेंस' एक्शन की जरूरत सिर्फ फूड इंडस्ट्री में ही नहीं, बल्कि इस पूरे फार्मा सिंडिकेट को जड़ों से उखाड़ने के लिए भी है। मिलावटी खाना बीमार बनाता है, लेकिन नकली दवाएं सीधे मौत के दरवाजे पर ले जाती हैं। दवाएं हमेशा भरोसेमंद और प्रमाणित मेडिकल स्टोर से ही खरीदें और कैश मेमो (बिल) जरूर मांगें।'

दवाओं के काले कारोबार पर कानून का हथौड़ा हालिया बड़ी कार्रवाइयां

पिछले एक महीने (मई-जून २०२६) के भीतर राज्य के अलग-अलग हिस्सों में ड्रग डिवीज़न द्वारा ५५ से अधिक बड़े छापों (Raids) को अंजाम दिया गया है, जिसमें करीब ₹५.५ करोड़ मूल्य की नकली दवाएं, अवैध मेडिकल डिवाइस और प्रतिबंधित ड्रग्स ज़ब्त किए गए हैं। प्रमुख शहरों और ठिकानों की मुख्य कार्रवाइयां इस प्रकार हैं:

१. कोल्हापुर और पुणे (करोड़ों का अवैध स्टॉक और फर्जी ब्रांडिंग) कोल्हापुरः एफडीए की टीम ने यहाँ एक बड़ी फार्मास्युटिकल फर्म पर छापा मारा। जांच में पाया गया कि कंपनी बिना किसी वैध लाइसेंस और दस्तावेज़ों के भारी मात्रा में एलोपैथिक दवाएं और एंटीबायोटिक इंजेक्शन्स का स्टॉक छिपाकर बैठी थी। मौके से २९ अलग-अलग प्रकार की दवाएं और ₹१३.६२ लाख का अवैध माल जब्त किया गया। पुणे (चाकण/वाढकी गोदाम): यहाँ एक नामी कंपनी के गोदाम पर छापा मारकर 'Schedule H' दवाओं (जैसे रेक्टिन प्लस टैबलेट) का करीब ₹११.१९ लाख का स्टॉक ज़ब्त किया गया, जिसका नियम कायदों के खिलाफ जाकर गलत तरीके से प्रचार और वितरण किया जा रहा था। पुणे (चतुःश्रृंगी क्षेत्र): हाल ही में बेहद लोकप्रिय स्किन केयर ब्रांड 'सेटाफिल' (Cetaphil Cleanser) की हूबहू नकली और स्पूरियस (Spurious) बोतलें बेचते हुए एक रैकेट पकड़ा गया। इसकी पैकेजिंग और लेबल असली जैसी ही थी। इसके खिलाफ पुलिस में FIR दर्ज कराई गई है।

२. नागपुर (बिना लाइसेंस के भारी एंटीबायोटिक्स और नकली गिरोह)सावनेर (नागपुर): यहाँ ग्रामीण इलाके (कोथुर्ना) में एक फर्जी डॉक्टर द्वारा चलाए जा रहे अवैध ट्रीटमेंट सेंटर का भंडाफोड़ हुआ। बिना किसी वैध ड्रग लाइसेंस के यहाँ भारी मात्रा में एंटीबायोटिक्स, एंटीफंगल दवाएं और जानलेवा स्टेरॉयड इंजेक्शन्स जमा करके रखे गए थे, जिन्हें ग्रामीण मरीजों को धड़ल्ले से बेचा जा रहा था। प्रशासन ने ₹१.०७ लाख से अधिक की दवाएं ज़ब्त कीं। सरकारी अस्पताल रैकेटः इससे पहले नागपुर के ही इंदिरा गांधी शासकीय मेडिकल कॉलेज (IGGMC) में २१,६०० से अधिक नकली एंटीबायोटिक गोलियां (सिप्रोफ्लोक्सासिन) पकड़ी गई थीं। जांच में सामने आया कि 'रिफाइंड फार्मा' नाम की जिस कंपनी के नाम पर यह दवाएं सप्लाई की गई थीं, वो कंपनी असल में वजूद में ही नहीं है यानी पूरी तरह बोगस है!

३. मुंबई और कोंकण रीजन (फर्जी कॉस्मेटिक्स और मेडिकल डिवाइसेज)क्रॉफर्ड मार्केट और कांदिवली (मुंबई): कॉस्मेटिक्स के नाम पर बिकने वाले अवैध और चमत्कारी दावों वाले उत्पादों पर कार्रवाई करते हुए ₹५.१६ लाख से अधिक का माल जब्त किया गया। इसी तरह के एक और बड़े एक्शन में कराड (Karad) क्षेत्र से ₹२९.५ लाख का मिसब्रांडेड कॉस्मेटिक स्टॉक सील किया गया। दवाइयों की आड़ में नशाः मुंबई और पुणे बेल्ट में प्रतिबंधित 'ट्रामाडोल कैप्सूल' (Tramadol) और कोडीन युक्त कफ सिरप (ण्दाग्हा ऐब्लिज) की तस्करी करने वाले नेटवर्क पर भी NDPS एक्ट के तहत सख्त कार्रवाई की गई है।

चायपत्ती में चमड़े का रंग (Leather Dye/ Industrial Colors) और आयरन फिलिंग्स (लोहे का चूरा) मिलाने का खेल वजन बढ़ाने और घटिया माल को भी एकदम कड़क और ताज़ा दिखाने के लिए किया जाता है। चूंकि भारत में चाय हर घर की जरूरत है, इसलिए मिलावटखोर इसमें सबसे ज्यादा मार्जिन कमाते हैं। आइए इन दोनों मिलावटों को विस्तार से समझते हैं कि यह कैसे की जाती हैं और हमारी सेहत के लिए कितनी खतरनाक हैंः

१. आयरन फिलिंग्स (लोहे का चूरा / Iron Filings)

वजन बढ़ानाः लोहे का चूरा (बारीक पाउडर) भारी होता है। चायपत्ती में इसे मिलाने से बोरी का वजन काफी बढ़ जाता है, जिससे मिलावटखोरों को सीधा मुनाफा होता है।

मशीनों की लापरवाही या जानबूझकरः कई बार चायपत्ती की प्रोसेसिंग के दौरान पुरानी हो चुकी मशीनों के घिसने से लोहे के बारीक कण चाय में मिल जाते हैं। लेकिन बड़े पैमाने पर मुनाफाखोर वजन बढ़ाने के लिए जानबूझकर मैग्नेटिक कटर से निकला हुआ लोहे का बारीक बुरादा इसमें मिला देते हैं।

सेहत पर असर (Health Hazards):
जब इस चायपत्ती को उबाला जाता है, तो लोहे के ये बारीक कण पानी में घुलकर हमारे पेट में चले जाते हैं। यह पेट की अंदरूनी दीवारों (Stomach Lining) को नुकसान पहुंचाते हैं। लगातार ऐसी चाय पीने से अल्सर (Ulcer), पेट में गंभीर इन्फेक्शन और पाचन तंत्र पूरी तरह खराब हो सकता है।

२. चमड़े का रंग / इंडस्ट्रियल डाई (Leather Dye / Re-used Tea)

इस्तेमाल की हुई चायपत्ती का री-यूज़ः बड़े होटलों, ढाबों या कैंटीन से निकलने वाली 'इस्तेमाल की हुई' (Used) चायपत्ती को मिलावटखोर कौड़ियों के दाम खरीद लेते हैं।

रंगने का खेलः इस इस्तेमाल की हुई चायपत्ती का रंग उड़ चुका होता है। इसे दोबारा असली और कड़क दिखाने के लिए सुखाया जाता है और फिर इस पर चमड़ा उद्योग (Leather Industry) में इस्तेमाल होने वाले खतरनाक केमिकल कलर्स या सिंथेटिक रंगों की कोटिंग की जाती है।

दिखने में धोखाः रंग चढ़ने के बाद यह घटिया या इस्तेमाल की हुई चायपत्ती भी दिखने में एकदम फ्रेश, काली और चमकदार लगने लगती है। जैसे ही आप इसे गर्म पानी में डालेंगे, यह तुरंत गहरा लाल या काला रंग छोड़ देती है, जिसे आम लोग 'कड़क चाय' समझकर धोखा खा जाते हैं।

सेहत पर असर
चमड़े को रंगने वाले रंगों में भारी धातुएं (Heavy Metals) जैसे क्रोमियम और हानिकारक केमिकल्स होते हैं। यह सीधे हमारे लिवर और किडनी पर हमला करते हैं। लंबे समय तक ऐसी रंगी हुई चाय पीने से कैंसर (Cancer) जैसी जानलेवा बीमारी का खतरा बहुत ज्यादा बढ़ जाता है।

'लाइव टेस्ट'

टेस्ट १ः लोहे का चूरा पकड़ने के लिए (मैग्नेट टेस्ट)ः एक प्लेट में थोड़ी सी चायपत्ती फैलाएं। अब एक आम चुंबक (Magnet) को उस चायपत्ती के ऊपर घुमाएं। अगर चायपत्ती में लोहे का चूरा होगा, तो वह तुरंत चुंबक से चिपक जाएगा।

टेस्ट २ः चमड़े का रंग पकड़ने के लिए (कोल्ड वॉटर टेस्ट) : एक कांच के गिलास में साफ और ठंडा पानी लें। उसमें एक चम्मच चायपत्ती डालें और बिना हिलाए २ मिनट के लिए छोड़ दें। असली चायपत्ती ठंडे पानी में तुरंत रंग नहीं छोड़ती (वह उबलने पर रंग छोड़ती है)। लेकिन अगर चायपत्ती पर केमिकल या चमड़े का रंग लगा होगा, तो ठंडे पानी का रंग तुरंत गहरा लाल या भूरा होने लगेगा।

'जो हरी सब्जियां आप सेहत बनाने के लिए घर ला रहे हैं, कहीं वो आपको कैंसर की राह पर तो नहीं ले जा रहीं? बाजार की चमक पर मत जाइए, अपनी आंखों पर टेस्ट का चश्मा लगाइए!' हरी सब्जियों को चमकीला और हमेशा ताज़ा दिखाने के लिए मिलावटखोर 'मैलाकाइट ग्रीन' (Malachite Green) नाम के एक बेहद खतरनाक केमिकल डाई (रंग) का इस्तेमाल करते हैं। यह खेल मंडियों और बाजारों में ग्राहकों को धोखा देने के लिए बड़े पैमाने पर खेला जाता है। आइए इस मिलावट के पीछे के काले सच, इसके नुकसान और इसे पकड़ने के तरीके को विस्तार से समझते हैं:

१. 'मैलाकाइट ग्रीन' क्या है और इसका इस्तेमाल क्यों होता है?

औद्योगिक उपयोग: मैलाकाइट ग्रीन असल में कोई फूड कलर (खाद्य रंग) नहीं है। यह एक इंडस्ट्रियल डाई है जिसका उपयोग कपड़ा (Textile), कागज और चमड़ा उद्योगों में चीजों को हरा रंगने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग मछलियों के टैंकों में फंगस मारने के लिए (Antifungal) भी होता है।

सब्जियों पर इस्तेमाल: जब सब्जियां (जैसे- भिंडी, परवल, हरी मिर्च, मटर, बोरी/लोबिया, कड़वे कद्दू या हरी पत्तेदार सब्जियां) बासी हो जाती हैं, सड़ने लगती हैं या उनका प्राकृतिक हरा रंग फीका पड़ जाता है, तब मिलावटखोर उन्हें मैलाकाइट ग्रीन के पानी से भरे टब में डुबो देते हैं। इस केमिकल के संपर्क में आते ही सूखी और बेजान सब्जियां भी एकदम गहरे हरे रंग की, चमकदार और ताज़ा दिखने लगती हैं। आम ग्राहक इसे 'खेत से टूटी हुई ताज़ा सब्जी' समझकर महंगे दामों पर खरीद लेता है।

२. सेहत पर इसका खौफनाक असर

मैलाकाइट ग्रीन एक अत्यधिक विषैला (Toxic) केमिकल है। जब हम इन सब्जियों को धोकर पकाते हैं, तब भी इस केमिकल का कुछ हिस्सा सब्जियों के भीतर तक मौजूद रहता है, जो हमारे शरीर में जाता है:

कैंसर का खतरा (Carcinogenic): कई वैज्ञानिक शोधों में यह साबित हो चुका है कि मैलाकाइट ग्रीन कैंसर पैदा करने वाले तत्वों से युक्त होता है। इसके लगातार सेवन से लिवर, ब्रेस्ट और पेट के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है।

लिवर और किडनी को नुकसान: यह केमिकल हमारे शरीर के फिल्टर सिस्टम यानी लिवर और किडनी पर सीधा हमला करता है और उन्हें धीरे-धीरे डैमेज कर देता है।

भ्रूण को नुकसान (Genotoxic): गर्भवती महिलाओं के लिए यह और भी खतरनाक है, क्योंकि यह पेट में पल रहे बच्चे (भ्रूण) के विकास को प्रभावित कर सकता है।

टेस्ट का तरीका

सामग्री: थोड़ा सा साफ रुई (Cotton) का फाहा लें और उसे लिक्विड पैराफिन (Liquid Paraffin) या साधारण कुकिंग ऑयल (नारियल या सरसों का तेल) में भिगो लें। अब इस भीगे हुए रुई के टुकड़े को संदिग्ध हरी सब्जी (जैसे भिंडी या हरी मिर्च) के बाहरी हिस्से पर थोड़ी देर तक रगड़ें। यदि सब्जी प्राकृतिक रूप से हरी है, तो रुई का रंग साफ या सामान्य रहेगा। यदि सब्जी पर मैलाकाइट ग्रीन लगाया गया है, तो रुई का रंग तुरंत गहरा हरा हो जाएगा।

'कलेक्शन से लैब टेस्ट' का सफर

'दुकान से उठाया गया एक छोटा सा सैंपल, कैसे सीलबंद होकर गुप्त कोड के साथ लैब की चमचमाती मशीनों तक पहुंचता है और कैसे साइंटिस्ट की एक रिपोर्ट मिलावटखोर के लिए जेल का वारंट बन जाती है... जानिए FDA की इस खुफिया लैब का पूरा सच!'

खुफिया जानकारी और जाल (The Raid& Selection)

FDA (खाद्य एवं औषधि प्रशासन) के अधिकारियों को या तो जनता से गुप्त शिकायत मिलती है या त्योहारों के सीजन में वे खुद नियमित औचक निरीक्षण (Surprise Inspection) के लिए निकलते हैं। **ऑन-द-स्पॉट एक्शनः** जब कोई टीम किसी डेयरी, मसाले की मिल या गोदाम में पहुंचती है, तो वे तुरंत वहां का स्टॉक अपने कब्जे में ले लेते हैं ताकि मिलावटखोर माल को छुपा या बहा न सकें।

सैंपल कलेक्शन का कानूनी तरीका (The Legal Protocol)

यह सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि अगर यहाँ गलती हुई, तो मिलावटखोर कोर्ट में कानून के लूपहोल (कमियों) का फायदा उठाकर छूट जाता है। चार हिस्सों में बंटवारा (Dividing into 4 Parts): कानून के मुताबिक, इंस्पेक्टर पकड़ी गई सामग्री (जैसे दूध या पनीर) के चार अलग-अलग सैंपल तैयार करता है। पंचनामा और सीलिंगः इन सैंपल्स को कांच की बोतलों या विशेष थैलियों में रखकर 'खाद्य सुरक्षा अधिकारी' (FSO) अपनी सील लगाता है और वहां मौजूद गवाहों (पंचों) और खुद दुकानदार के हस्ताक्षर (Sign) कराता है।

ये ४ सैंपल कहाँ जाते हैं?

पहला सैंपलः जांच के लिए सीधे सरकारी फूड टेस्टिंग लैब भेजा जाता है।

दूसरा और तीसरा सैंपलः 'डेजिग्नेटेड ऑफिसर' (DO) के पास सुरक्षित लॉकर में रखा जाता है (ताकि अगर पहला सैंपल खराब हो जाए या रिपोर्ट को चुनौती दी जाए, तो इनका उपयोग हो सके)।

चौथा सैंपलः मिलावटखोर दुकानदार की पसंद की किसी मान्यता प्राप्त प्राइवेट लैब में जांच के लिए भेजा जा सकता है (अगर वह सरकारी रिपोर्ट से असहमत हो)।

सरकारी लैब टेस्ट का वैज्ञानिक सफर (The Lab Investigation)

जब सैंपल सीलबंद हालत में 'पब्लिक एनालिस्ट' (Government Food Analyst) के पास लैब पहुंचता है, तो वहां का सफर कुछ ऐसा होता हैः कोडिंग (Secret Coding): लैब में पक्षपात या रिश्वतखोरी से बचने के लिए सैंपल पर से दुकानदार या ब्रांड का नाम हटाकर एक सीक्रेट कोड डाल दिया जाता है। केमिस्ट को यह नहीं पता होता कि वह किस बड़े ब्रांड या दुकान के माल की जांच कर रहा है।

आधुनिक मशीनें और टेस्टः दूध में डिटर्जेंट या यूरिया देखने के लिए रासायनिक क्रोमैटोग्राफी की जाती है। मसालों में कैंसरकारी 'मैलाकाइट ग्रीन' या सिंथेटिक रंगों को पकड़ने के लिए Spectrophotometer या HPLC (High-Performance Liquid Chromatography) जैसी एडवांस मशीनों का इस्तेमाल होता है।

रिपोर्ट तैयार होना (The Verdict): जांच के बाद सरकारी विश्लेषक (Analyst) एक ऑफिशियल रिपोर्ट जारी करता है, जिसमें साफ लिखा होता है कि सैंपल 'सुरक्षित' (Safe) है, 'घटिया क्वालिटी' (Substandard) का है या 'असुरक्षित/जहरीला' (Unsafe) है।

कोर्ट का फंदा और जेल (The Legal Action)

अधिनियम के तहत कार्रवाईः यदि रिपोर्ट में 'असुरक्षित या मिलावटी' (Unsafe) होने की

पुष्टि हो जाती है, तो FDA सीधे उस रिपोर्ट को कोर्ट में मुख्य सबूत (Primary Evidence) के रूप में पेश करता है। खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम (FSSAI Act, २००६) के तहत इस सरकारी रिपोर्ट को अकाट्य माना जाता है। इसी रिपोर्ट के दम पर मिलावटखोर की जमानत खारिज होती है, उसकी दुकान का लाइसेंस हमेशा के लिए रद्द होता है और उसे उम्रकैद या भारी जुर्माने की सजा मिलती है।

कानून की ताकत, कमजोरियां और चुनौतियां...

'कानून के हाथ लंबे जरूर हैं, लेकिन जब तक स्टाफ की कमी और लचर व्यवस्था की बेड़ियां नहीं टूटेंगी, तब तक मिलावटखोर इन कमियों की खिड़की से भागते रहेंगे। कानून की ताकत सिर्फ किताबों में नहीं, बल्कि हर मिलावटखोर के मन में खौफ के रूप में दिखनी चाहिए!'

१. कानून की ताकत (The Strength of Law)

भारत में खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए FSSAI अधिनियम (खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, २००६) और नई भारतीय न्याय संहिता (BJS) के तहत बेहद कड़े प्रावधान किए गए हैं। अगर प्रशासन चाहे, तो इन कानूनों के दम पर मिलावटखोरों का धंधा हमेशा के लिए चौपट कर सकता हैः

आजीवन कारावास (उम्रकैद): यदि मिलावटी खाद्य पदार्थ या केमिकल के सेवन से किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है या उसके स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान (जैसे कैंसर, अंग खराब होना) पहुंचता है, तो कानून में आरोपी को आजीवन कारावास (Life Imprisonment) और भारी जुर्माने की सजा का साफ प्रावधान है।

गैर-जमानती धाराएं (Non-Bailable): जनता की सेहत को सीधे खतरे में डालने वाले मिलावटखोरों के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी होते हैं, जिससे उन्हें आसानी से कोर्ट से राहत नहीं मिलती।

लाइसेंस और संपत्ति पर वारः कानून के तहत FDA को यह अधिकार है कि वह दोषी पाए जाने पर उस ब्रांड या डेयरी का FSSAI लाइसेंस हमेशा के लिए रद्द (Blacklist) कर सकती है। इसके अलावा, अवैध रूप से चलाई जा रही निर्माण इकाइयों (जैसे सिंथेटिक पनीर की फैक्ट्रियां) को तुरंत सील करने और कुर्क करने की ताकत भी कानून देता है।

त्वरित कार्रवाई की शक्तिः तुकाराम मुंढे जैसे कड़क अधिकारियों ने इसी कानून की ताकत का इस्तेमाल करके बिना किसी पूर्व नोटिस के, सीधे ऑन-द-स्पॉट छापेमारी (Surprise Raids) की और मिलावटखोरों को सीधे सलाखों के पीछे भेजा।

२. कानून की कमजोरियां और चुनौतियां (The Loophearted Reality)

कागज पर कानून जितना सख्त और कड़क दिखाई देता है, जमीन पर उसे लागू करने में उतनी ही बड़ी खामियां और लाचारियां सामने आती हैं। मिलावटखोर अक्सर इन्हीं कमजोरियों का फायदा उठाकर बच निकलते हैंः

स्टाफ और इंस्पेक्टरों की भारी कमी (Shortage of Workforce): यह इस सिस्टम की सबसे बड़ी कमजोरी है। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र के किसी बड़े जिले या मुंबई जैसे महानगर में लाखों की संख्या में होटल, डेयरियां, किराना दुकानें और कारखाने हैं, लेकिन उनके मुकाबले फील्ड में तैनात खाद्य सुरक्षा अधिकारियों (FSOs / FDA Inspectors) की संख्या उंगलियों पर गिनने लायक होती है। इतने कम स्टाफ के भरोसे हर जगह नजर रखना नामुमकिन हो जाता है।

अदालतों में लंबा खिंचता केस (Judicial Delay): सैंपल पकड़े जाने और लैब रिपोर्ट आने के बाद जब मामला कोर्ट पहुंचता है, तो तारीख-पर-तारीख का सिलसिला शुरू हो जाता है। कई बार केस का फैसला आने में ५ से १० साल लग जाते हैं। तब तक मिलावटखोर जमानत पर बाहर रहकर किसी दूसरे नाम से अपना काला धंधा चालू रखता है।

लैब की कछुआ चाल और सीमित संख्याः देश और राज्यों में हाई-टेक सरकारी फूड टेस्टिंग लैबोरेट्रीज (Food Labs) की संख्या बहुत कम है। इस वजह से पकड़े गए सैंपल्स की जांच रिपोर्ट आने में हफ्तों और कभी-कभी महीनों का समय लग जाता है। दूध-पनीर जैसी जल्दी खराब होने वाली चीजों के मामलों में यह देरी सबूतों को कमजोर कर देती है।

स्थानीय साठगांठ और भ्रष्टाचार (Local Nexus): कड़क और ईमानदार शीर्ष अधिकारियों के ट्रांसफर होते रहते हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर कुछ भ्रष्ट कर्मचारियों और स्थानीय मिलावटखोरों का एक नेक्सस (गठजोड़) बन जाता है। छापेमारी की खबर लीक होना या सैंपल बदलते समय हेराफेरी हो जाना इस सिस्टम की एक कड़वी सच्चाई है।

दुकानदार की चालाकी (Legal Loopholes): कई बार मिलावटखोर कोर्ट में यह साबित कर देते हैं कि मिलावट उन्होंने नहीं, बल्कि पीछे से सप्लायर ने करके भेजी थी। कानून की तकनीकी बारीकियों का फायदा उठाकर मुख्य आरोपी बच जाता है और छोटे कर्मचारियों को बलि का बकरा बना दिया जाता है।

STEP INTO
CELEBRATION
FESTIVE
Collection
ELEVATE EVERY MOMENT WITH
VIBRANT COLOURS & MODERN ELEGANCE
SHOP NOW
www.festivecollection.com
BRIDAL WEAR
PARTY WEAR
WHERE TRADITION
MEETS
TRENDS
PREMIUM QUALITY
Finest fabrics for a luxurious feel
VIBRANT COLOURS
A wide range of beautiful shades
EXCLUSIVE DESIGNS
Trendy styles for every occasion
PERFECT FOR EVERY OCCASION
Weddings, festivals, parties & more
VISIT OUR STORE
123, Fashion Street, Your City – 400001
CALL US
+91 98765 43210
FOLLOW US
PAN INDIA DELIVERY

FSSAI की 'DART Book': आपकी रसोई की अपनी लैब

मिलावट के इस दौर में आम उपभोक्ताओं को जागरूक और आत्मनिर्भर बनाने के लिए भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (इएएंइ) ने एक बेहद अनूठी और उपयोगी बुकलेट जारी की है, जिसे 'DART Book' (Detect Adulteration with Rapid Test) कहा जाता है। इस गाइडबुक का सीधा और मुख्य उद्देश्य यह है कि हर नागरिक बिना किसी महंगी मशीन या लैब के, अपने घर की रसोई में ही केवल ५ मिनट के भीतर भोजन में होने वाली मिलावट को खुद पकड़ सके। इस पूरी बुकलेट में दूध, घी, तेल, मसालों, अनाज और सब्जियों जैसी रोजमर्रा की खाद्य सामग्रियों में शुद्धता की जांच करने के ५० से ज्यादा बेहद आसान और घरेलू तरीके (Rapid Tests) विस्तार से बताए गए हैं।

इस बुकलेट की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें दिए गए सभी टेस्ट पूरी तरह से वैज्ञानिक हैं, लेकिन इन्हें करने के लिए आपको सिर्फ घर में मौजूद साधारण चीजों जैसे–साफ पानी, रुई, कांच का गिलास, आयोडीन या नींबू के रस की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए, चायपत्ती में लोहे का चूरा पकड़ने के लिए चुंबक का इस्तेमाल, हरी सब्जियों पर 'मैलाकाइट ग्रीन' केमिकल को पकड़ने के लिए लिक्विड पैराफिन या कुकिंग ऑयल में भीगी रुई का टेस्ट, और काली मिर्च में पपीते के बीजों की पहचान करने जैसे कई जादुई तरीके इस बुकलेट में सचित्र (इमेज के साथ) समझाए गए हैं। साधारण शब्दों में कहें तो यह बुकलेट हर उस परिवार के लिए एक सुरक्षा कवच है, जो बाजार की चमक-दमक के पीछे छिपे मिलावट के जहर से अपनों की सेहत को बचाना चाहता है।

१. दूध और डेयरी उत्पाद

दूध में डिटर्जेंट की जांचः एक कांच की शीशी या बोतल में थोड़ा सा दूध लें। उसमें बराबर मात्रा में पानी मिलाएं और शीशी को जोर-जोर से हिलाएं। अगर दूध में झाग (Lather) बनता है और वह देर तक टिका रहता है, तो दूध में डिटर्जेंट मिलाया गया है। शुद्ध दूध में बहुत कम झाग बनता है जो तुरंत गायब हो जाता है।

दूध-पनीर में स्टार्च (मावा/आलू) की जांचः दूध, खोया या पनीर का एक सैंपल लें। उसे पानी में उबालें और फिर ठंडा होने दें। इसके बाद इसमें आयोडीन सॉल्यूशन (Iodine) की २-३ बूंदें डालें। अगर सैंपल का रंग गहरा नीला (Blue) हो जाता है, तो इसका मतलब है कि इसमें स्टार्च या उबला हुआ आलू मिलाया गया है।

दूध में पानी की मिलावट (Slipping Test): दूध की एक बूंद को लकड़ी या पत्थर की ढलान वाली सतह पर टपकाएं। शुद्ध दूध धीरे-धीरे बहेगा और अपने पीछे एक सफेद लकीर (Traces) छोड़ जाएगा। पानी मिला हुआ दूध बिना कोई निशान छोड़े तेजी से बह जाएगा।

२. मसाले और तेल (Spices & Oils)

सिल्वर फॉयल (चांदी का वर्क) बनाम एल्युमिनियमः मिठाइयों पर लगे चांदी के वर्क को उंगलियों के बीच रखकर रगड़ें। अगर वह आसानी से टूटकर गायब हो जाता है, तो वह शुद्ध चांदी है। अगर वह उंगलियों पर चिपक जाता है और भूरा/काला पड़ने लगता है, तो वह सेहत के लिए खतरनाक एल्युमिनियम फॉयल है। आप इसे आग पर जलाकर भी देख सकते हैं; शुद्ध चांदी का वर्क आग में नहीं जलता, जबकि एल्युमिनियम तुरंत जलकर काली राख बन जाता है।

सरसों के तेल में अर्जीमोन (सत्यानाशी) का तेलः एक टेस्ट ट्यूब या कांच के गिलास में थोड़ा सा सरसों का तेल लें। इसमें कुछ बूंदें कॉन्सेन्ट्रेटेड नाइट्रिक एसिड (Nitric Acid) की मिलाएं और धीरे से हिलाएं। अगर तेल की निचली परत में लाल या मटमैला लाल रंग दिखाई दे, तो तेल में अर्जीमोन के जहरीले तेल की मिलावट है।

हल्दी पाउडर में लेड क्रोमेट (पीला सिंथेटिक रंग)ः एक गिलास गुनगुने पानी में एक चम्मच हल्दी पाउडर डालें। इसे बिना हिलाए १५-२० मिनट के लिए छोड़ दें। शुद्ध हल्दी नीचे बैठ जाएगी और पानी हल्का साफ पीला रहेगा। अगर पानी का रंग गाढ़ा, चमकदार पीला बना रहता है और हल्दी नीचे नहीं बैठती, तो उसमें सिंथेटिक रंग या लेड क्रोमेट मिला हुआ है।

३. रोजमर्रा की अन्य चीजें (Daily Groceries)

शहद में चाशनी या पानी की मिलावटः एक कांच के गिलास में पानी भरें। इसमें ऊपर से एक चम्मच शहद सीधे गिराएं। शुद्ध शहद बिना पानी में घुले सीधा गिलास की तली (Bottom) में जाकर बैठ जाएगा। अगर शहद पानी में गिरते ही घुलने लगे या फैल जाए, तो उसमें चीनी की चाशनी या पानी मिलाया गया है।

कॉफी पाउडर में चिकोरी (Chicory) या खजूर के बीजों का चूराः एक गिलास साफ पानी लें और उसकी सतह पर एक चम्मच कॉफी पाउडर छिड़कें। शुद्ध कॉफी पाउडर पानी की सतह पर तैरता रहेगा और आसानी से नीचे नहीं बैठेगा। चिकोरी का चूरा पानी सोखकर तुरंत नीचे बैठना शुरू कर देगा और पानी में अपना भूरा रंग छोड़ने लगेगा।

नमक में चौक का चूरा या रेतः एक गिलास पानी में एक चम्मच नमक घोलें। शुद्ध नमक पानी में पूरी तरह घुल जाएगा और पानी साफ रहेगा। अगर नमक में चौक का चूरा या सफेद बालू रेत मिली होगी, तो वह पानी को धुंधला (TuRid) कर देगी और अघुलनशील पाउडर गिलास के नीचे जमा हो जाएगा।

- एम. नटराजन

नोटः ये टेस्ट FSSAI द्वारा प्रमाणित हैं और इन्हें करने के लिए किसी वैज्ञानिक अनुभव की आवश्यकता नहीं है। इन आसान तरीकों को अपनाकर हर परिवार जागरूक उपभोक्ता बन सकता है।

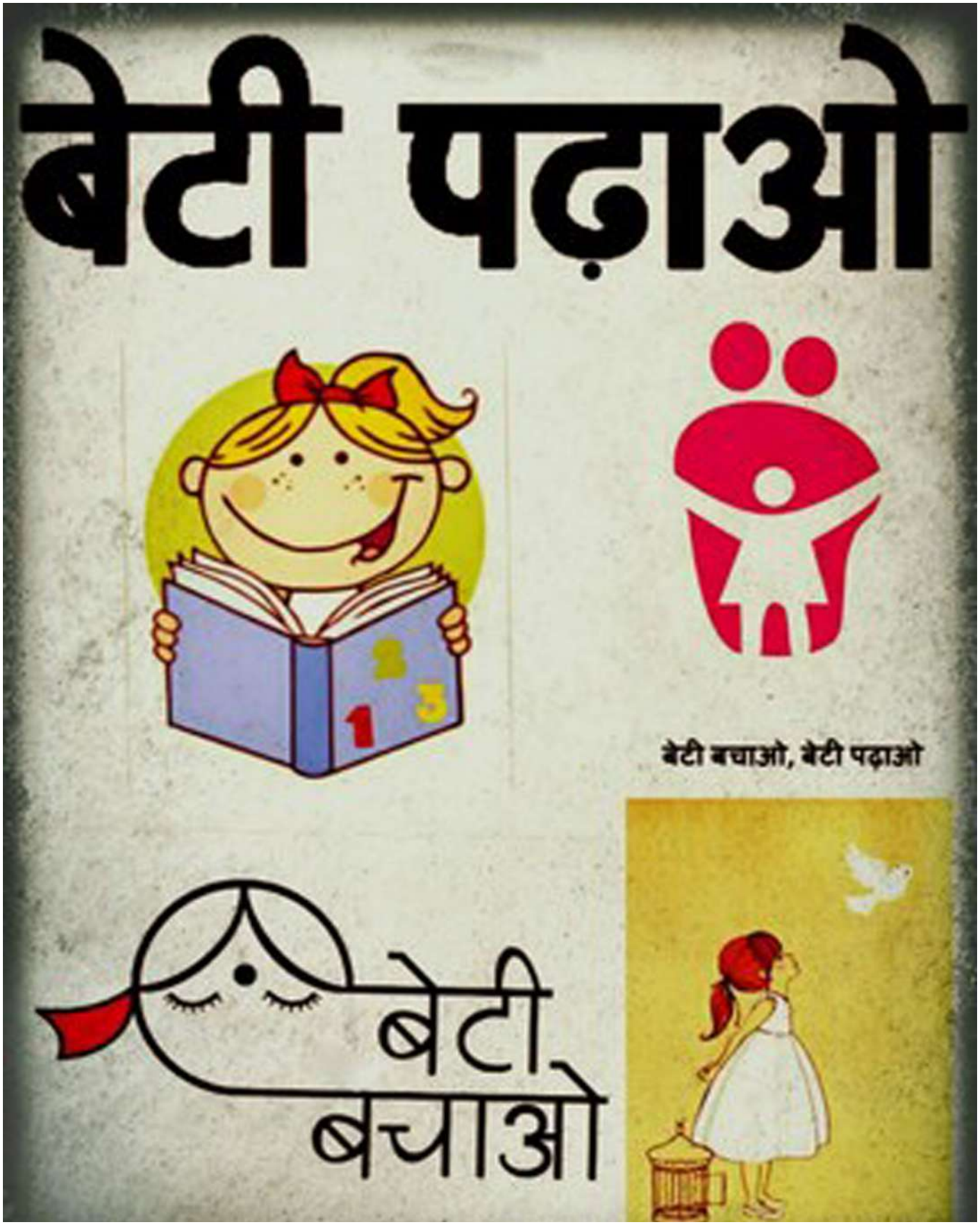
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

fssai
FOOD SAFETY AND STANDARDS AUTHORITY OF INDIA
Inspiring Trust, Assuring Safe & Nutritious Food
Ministry of Health and Family Welfare, Government of India
Food Safety Connect
Compliance@fssai.gov.in
Toll-Free-No.
18 0011 2100
Whats App
98 6868 6868
FSSAI
FSSAI
SMS
98 6868 6868
@fssaiindia
foodlicensing.fssai.gov.in
/cmsweb/

WE ARE HIRING!

स्वर्णिम मुंबई

(News & Regional Magazine)

AD SALES INTERN / EXECUTIVE

- WORK FROM ANYWHERE
- ATTRACTIVE STIPEND ₹2,500 - ₹5,000 PER MONTH
- HIGH PERFORMANCE INCENTIVES AVAILABLE
- EXPERIENCE CERTIFICATE FOR VALUABLE EXPERIENCE
- RECOMMENDATION LETTER TO BOOST YOUR PROFESSIONAL PROFILE

Role: Ad Sales Intern / Executive

Type: Part-time / Hybrid (Work From Home)

Location: Anywhere in Mumbai

Stipend: ₹2,500 - ₹5,000 / Month

Incentives: High Performance Incentives Available

Perks: Experience Certificate & Recommendation Letter

Who can apply: Students, Freshers & Experienced Professionals

APPLY NOW (Call / WhatsApp) | **9082391833 / 9820820147**

Email: swarnim_mumbai@yahoo.in

Website: www.swarnimumbai.com

LIMITED OPENINGS APPLY TODAY!

FLEXIBLE TIMINGS • LEARN • EARN • GROW WITH SWARNIM MUMBAI

एक जन्मतिथि, दो दृष्टिकोणः
जे.स्वामीनाथन और बिकाश भट्टाचार्य

हर वर्ष २१ जून को भारतीय कला जगत आधुनिक भारतीय कला के दो महान कलाकारों को याद करता है, जिनका जन्मदिन एक ही दिन था, लेकिन कला को देखने और समझने का उनका दृष्टिकोण बिल्कुल अलग था। एक ने पर्वतों, पक्षियों और जनजातीय प्रतीकों के माध्यम से कला की आदिम भाषा की खोज की, जबकि दूसरे ने यथार्थवादी चित्रों के जरिए शहरी जीवन की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को सामने रखा। साथ मिलकर, जगदीश स्वामीनाथन और बिकाश भट्टाचार्य ने आधुनिक भारतीय कला की दिशा बदल दी। उनकी साझा जन्मतिथि केवल एक ऐतिहासिक संयोग नहीं है। यह दो समानांतर कलात्मक यात्राओं का प्रतीक है, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद भारत के सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास किया–आधुनिक भारतीय कला कैसी होनी चाहिए? स्वतंत्रता के बाद के दशकों में, दोनों कलाकार ऐसे कला परिवेश में उभरे, जहाँ एक ओर बंगाल स्कूल का रोमांटिक राष्ट्रवाद प्रभावशाली था और दूसरी ओर यूरोपीय आधुनिकतावाद का प्रभाव बढ़ रहा था। लेकिन दोनों ने इन परम्पराओं को बिना सवाल किए स्वीकार नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने भारतीय अनुभवों और वास्तविकताओं पर आधारित अपनी स्वतंत्र कलाभाषा विकसित की।

१९२८ में शिमला में जन्मे जगदीश स्वामीनाथन केवल चित्रकार ही नहीं, बल्कि कवि, आलोचक, विचारक और संस्थान निर्माता भी थे। उन्होंने यूरोपीय आधुनिकतावाद की 'संकर शैली' और बंगाल स्कूल की अतीतवादी सोच, दोनों का विरोध किया। समूह १८९० के प्रभावशाली घोषणापत्र के माध्यम से उन्होंने कला में एक मूलभूत और आदिम दृश्य चेतना की वापसी का आह्वान किया। स्वामीनाथन के लिए कला वास्तविकता की नकल नहीं थी, बल्कि देखने के मूल और सहज तरीकों को पुनः खोजने का माध्यम थी। उनकी प्रसिद्ध बर्ड-माउंटेन-ट्री श्रृंखला में प्रकृति को सरल और मूल रूपों में प्रस्तुत किया गया। रंगों के उज्ज्वल विस्तार में तैरते पक्षी,

एक ने पर्वतों, पक्षियों और जनजातीय प्रतीकों के माध्यम से कला की आदिम भाषा की खोज की, जबकि दूसरे ने यथार्थवादी चित्रों के जरिए शहरी जीवन की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को सामने रखा। साथ मिलकर, जगदीश स्वामीनाथन और बिकाश भट्टाचार्य ने आधुनिक भारतीय कला की दिशा बदल दी।

शांत पर्वत और अकेले वृक्ष समय और स्थान की सीमाओं से परे दिखाई देते हैं। जनजातीय कला और भारतीय लघुचित्र परम्परा से प्रेरित होकर उन्होंने ऐसी दृश्य भाषा विकसित की, जो एक साथ समकालीन और गहराई से भारतीय थी।

उनका सबसे बड़ा योगदान केवल चित्रों तक सीमित नहीं था। भोपाल स्थित भारत भवन के रूपंकर संग्रहालय के प्रमुख प्रेरक के रूप में उन्होंने जनजातीय और लोक कला को तथाकथित 'उच्च कला' से अलग मानने वाली सोच को चुनौती दी। गोंड कलाकार जंगढ़ सिंह श्याम को पहचान दिलाने और आगे बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका ने भारत की समकालीन जनजातीय कला की दिशा बदल दी। जहाँ स्वामीनाथन मिथकीय चेतना और सामूहिक स्मृति की ओर उन्मुख थे, वहीं बिकाश भट्टाचार्य ने मानव जीवन और उसके अनुभवों को अपने कला-संसार का केन्द्र बनाया। १९४० में कोलकाता में जन्मे बिकाश भट्टाचार्य उस समय भारत के प्रमुख यथार्थवादी चित्रकारों में उभरे, जब कला जगत में अमूर्त कला का प्रभाव बढ़ रहा था। उन्होंने अकादमिक दक्षता, मनोवैज्ञानिक गहराई और सूक्ष्म अतियथार्थवाद को मिलाकर ऐसे चित्र बनाए, जो आधुनिक शहरी जीवन की चिंताओं, विरोधाभासों और छिपे हुए भय को सामने लाते हैं।

उत्तर कोलकाता में आर्थिक कठिनाइयों और राजनीतिक अशांति के बीच पले-बढ़े भट्टाचार्य ने रोज़मर्रा के जीवन की भावनात्मक जटिलताओं को गहराई से महसूस किया। नक्सल आंदोलन के अशांत दौर में बनाई गई उनकी डॉल श्रृंखला आधुनिक भारत में राजनीतिक हिंसा पर सबसे प्रभावशाली कलात्मक प्रतिक्रियाओं में से एक मानी जाती है। टूटी हुई गुड़िया संघर्ष और असुरक्षा से बिखरती मासूमियत का प्रतीक बन गई। उनकी कला में महिलाओं का विशेष स्थान था। दुर्गा श्रृंखला और माताओं, विधवाओं तथा सामान्य महिलाओं के चित्रों के माध्यम से उन्होंने उन्हें संघर्ष, सहनशीलता और त्याग के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। उनका यथार्थवाद केवल बाहरी रूप का चित्रण नहीं था, बल्कि साधारण दिखने वाले जीवन के भीतर छिपी मनोवैज्ञानिक गहराइयों को उजागर करता था।

पहली नज़र में स्वामीनाथन और भट्टाचार्य कला के दो अलग ध्रुवों पर दिखाई देते हैं। स्वामीनाथन मानव आकृति से दूर जाकर प्रतीकों और ब्रह्मांडीय रूपों की ओर बढ़े, जबकि भट्टाचार्य ने मानवीय अनुभव को अपनी कला का केन्द्र बनाया। एक ने चित्रों में गहराई और भ्रमात्मक स्थान को अस्वीकार किया, तो दूसरे ने प्रकाश, बनावट और शारीरिक संरचना को अद्भुत कौशल के साथ चित्रित किया। फिर भी, इन भिन्नताओं के भीतर एक महत्वपूर्ण समानता छिपी हुई थी। दोनों कलाकारों ने नकल का विरोध किया, पश्चिमी प्रभावों के प्रभुत्व को चुनौती दी और स्वतंत्र भारत के लिए एक प्रामाणिक कलाभाषा की खोज की। दोनों गहरी सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित थे। स्वामीनाथन ने जनजातीय कला के माध्यम से स्थापित कलात्मक मान्यताओं को चुनौती दी, जबकि भट्टाचार्य ने अपनी भावनात्मक यथार्थवादी कला के जरिए समकालीन भारत के सामाजिक तनावों और नैतिक प्रश्नों को सामने रखा।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि दोनों मानते थे कि कला केवल सजावट नहीं, बल्कि परिवर्तन का माध्यम है। आज उनकी विरासत पहले से अधिक प्रासंगिक है। स्वामीनाथन ने भारतीय कला इतिहास की सीमाओं का विस्तार किया, जबकि भट्टाचार्य ने शहरी भारत की मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं का अद्वितीय दस्तावेज तैयार किया। दोनों कलाकार यह साबित करते हैं कि भारतीय आधुनिकता कोई एक शैली नहीं, बल्कि पहचान, स्मृति और अनुभव के अनेक दृष्टिकोणों के बीच एक सतत संवाद है। एक ने भारत की आदिम कल्पना को संरक्षित किया, तो दूसरे ने उसकी भावनात्मक सच्चाइयों को अभिव्यक्त किया। एक ही दिन जन्मे जगदीश स्वामीनाथन और बिकाश भट्टाचार्य ने अलग-अलग संसारों को अमर चित्रों में रूपांतरित किया और आधुनिक भारतीय कला के समानांतर स्थापत्यकार बनकर उभरे।

-प्रबुद्ध घोष

ब्रोकली की सब्जी

सामग्री
ब्रोकली २०० ग्राम (टुकड़ों में काटलें)
प्याज़ का पेस्ट १ चम्मच
लहसुन अदरक का पेस्ट १ चम्मच
१ टमाटर की प्यूरी
जीरा १ छोटी चम्मच
तेजपत्ता १
हल्दी पाउडर १ छोटी चम्मच
धनिया पाउडर १ चम्मच
लाल मिर्च पाउडर १ चम्मच
तेल - २ बड़े चम्मच
स्वाद अनुसार नमक
हरा धनिया थोड़ा सा

विधिः ब्रोकली की सब्जी बनाने के लिए सबसे पहले ब्रोकली के टुकड़ों को पानी में डालकर उबालें। ध्यान रहे कि ब्रोकली को ज्यादा नहीं उबालना है, वरना सब्जी में टूट सकती है। अब एक पैन में तेल डालकर गर्म करें। गरम तेल में तेजपत्ता और जीरा डालकर चटकाए। अब प्याज का पेस्ट डालकर १ मिनट मध्यम आंच पर भूनें। अब लहसुन अदरक का पेस्ट डालें और १ मिनट भूनें। जब मसाले भून चुके हो तब टमाटर प्यूरी डालें और साथ ही हल्दी, नमक, मिर्च पाउडर और धनियां पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाते हुए २ मिनट पकाएं। मसालों से तेल अलग हो जाए तब उबली हुई ब्रोकली डालकर हल्के हाथ से मिलाते रहे। अब थोड़ा ग्रेवी के लिए पानी मिला सकते हैं और मध्यम आंच पर ५-७ मिनट पकने दें। ब्रोकली की सब्जी बनकर तैयार है। इसमें कटा हुआ हरा धनिया डालकर मिला दें और गरम-गरम रोटी या पराठा के साथ सर्व करें।

हरी मिर्च ठेचा

सामग्रीः
१५-२० हरी मिर्च
२-४ लहसुन की कलियां
नमक स्वादानुसार
१ छोटा चम्मच नींबू का रस
१ बड़ा चम्मच तेल
१ छोटा चम्मच जीरा

विधिः सबसे पहले हरी मिर्च को धोकर उसके दो टुकड़े कर लें. साथ ही लहसुन भी छिल लें. हल्की आंच में पैन में तेल गर्म कर लें. तेल के गर्म होते ही हरी मिर्च और लहसुन को तीन-चार मिनट के लिए भून लें. अब भूनी हुई मिर्च और लहसुन में नमक डालकर सिलबट्टे में दरदरा पीस लें। फिर उसी पैन में तेल गर्म कर जीरा का छौंक लगाएं.

इसमें पिसी हुई हरी मिर्च और लहसुन डालकर थोड़ा-सा भून लें. मिर्च के भुनते ही नींबू का रस मिलाएं. तैयार है स्वादिष्ट हरी मिर्च का ठेचा. आप इसे रोटी, पराठा और दाल चावल के साथ भी खा सकते हैं।

पापड़ की चटनी

सामग्रीः
४ मूंग दाल के पापड़
१ टीस्पून जीरा
१ /४ टीस्पून लाल मिर्च पाउडर
१/४ टीस्पून चाट मसाला
१ टेबलस्पून तेल
नमक स्वादानुसार

विधिः पापड़ की चटनी बनाने के लिए सबसे पहले पापड़ को गैस पर दोनों तरफ सेंक लें. सेंकने के बाद पापड़ को क्रश करके एक प्लेट पर रख लें. इसके बाद एक पैन में मीडियम आंच पर तेल गर्म करें. तेल में जीरा डालकर चटकने तक भून लें. फिर आंच धीमा करें और क्रश किया हुआ पापड़ इसमें डालें और करछी से १ से २ बार चलाएं. अब लाल मिर्च पाउडर, चाट मसाला, नमक डालकर मिलाएं. इसे १ मिनट के लिए ढककर पका लें और आंच बंद कर दें. तैयार पापड़ की चटनी. इसे रोटी के साथ खाएं.

पोटैटो हब

सामग्रीः
२ छोटे आलू
१/४ ऑलिव ऑयल
१/४ टीस्पून लौंग पाउडर
१/४ टीस्पून काली मिर्च पाउडर
१/४ टीस्पून काला नमक
१ टीस्पून चीनी
१ टीस्पून ऑरिगैनो
१ टेबलस्पून हरा धनिया

विधिः सबसे पहले आलू को धोकर बिना छीले इन्हें टुकड़ों में काट लें. मीडियम आंच पर एक पैन में तेल डालकर गर्म करने के लिए रख दें. गर्म तेल में आलू डालकर हल्का फ्राई कर लें. फ्राइड आलू को प्लेट में निकाल लें और काली मिर्च पाउडर, नमक, ऑरिगैनो और चीनी डालकर मिक्स करें. तैयार है पोटैटो हब. हरा धनिया डालकर सर्व करें.

चीज़ गार्लिक ब्रेड

सामग्रीः
ब्रेड स्लाइस - ४
बटर - २ बड़े चम्मच
लहसुन - १ बड़ा चम्मच (कद्दूकस किया हुआ)
चीज़ - ½ कप (कद्दूकस किया हुआ)
मिक्स्ड हर्ब्स - १ छोटा चम्मच
चिली फ्लेक्स - ½ छोटा चम्मच

विधिः बटर में लहसुन, हर्ब्स और चिली फ्लेक्स मिलाएं। ब्रेड के ऊपर यह मिश्रण लगाकर चीज़ डालें। इसे तवे पर धीमी आंच पर सेकें या ओवन में ५ मिनट के लिए बेक करें। गर्मागर्म परोसें!

मक्का चाट

सामग्रीः
उबला हुआ मक्का (स्वीट कॉर्न) - १ कप
प्याज़ - १ (बारीक कटा)
टमाटर - १ (बारीक कटा)
हरी मिर्च - १
नींबू का रस - १ चम्मच
नमक - स्वादानुसार
चाट मसाला - ½ चम्मच
मक्खन - १ चम्मच (ऑप्शनल)

विधिः मक्खन में उबले कॉर्न को हल्का भून लें। उसमें सब्जियाँ, नमक, नींबू और मसाला मिलाएँ। गर्मागर्म मक्का चाट परोसें।

वेजिटेबल सूप

सामग्रीः
गाजर, बीन्स, मटर, पत्तागोभी - १ कप (बारीक कटी)
अदरक - ½ चम्मच (कद्दूकस)
नमक - स्वादानुसार
काली मिर्च - ¼ चम्मच
पानी - ३ कप
कॉर्न फ्लोर - १ चम्मच (पानी में घोलकर)

विधिः सब्जियाँ और अदरक पानी में उबालें। नमक, काली मिर्च डालें। गाढ़ा करने के लिए कॉर्नफ्लोर घोल डालें। ५ मिनट पकाकर गर्मागर्म परोसें।

कर्मचारियों की कमी से जूझ रही मुंबई सेवाओं पर बढ़ता दबाव

मुंबई केवल इमारतों और आर्थिक गतिविधियों का शहर नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों का शहर है। ऐसे में बेस्ट की सेवाओं को मजबूत करना और कर्मचारियों की कमी दूर करना केवल प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, बल्कि मुंबईकरों की सुविधा और शहर की गतिशीलता से जुड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा है।

मुंबई की जीवनरेखा कही जाने वाली बेस्ट (BEST) सेवा इन दिनों कर्मचारियों की भारी कमी और प्रशासनिक चुनौतियों से जूझ रही है। लाखों यात्रियों को प्रतिदिन परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने वाली संस्था में रिक्त पदों की बढ़ती संख्या अब सेवा संचालन पर सीधा असर डालने लगी है। स्थिति यह है कि सरकार और प्रशासन के निर्देशों के बावजूद कर्मचारियों की कमी दूर नहीं हो पा रही है, जिसका खामियाजा आम मुंबईकरों को भुगतना पड़ रहा है। हाल ही में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बेस्ट प्रशासन को कर्मचारियों की कमी दूर कर सेवाएं सुचारु बनाने के निर्देश दिए थे। इसके बावजूद बड़ी संख्या में पद खाली पड़े हुए हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार बेस्ट उपक्रम में हजारों पद रिक्त हैं, जिनमें चालक, वाहक (कंडक्टर), तकनीकी कर्मचारी और निरीक्षक जैसे महत्वपूर्ण पद शामिल हैं। परिणामस्वरूप उपलब्ध कर्मचारियों पर अतिरिक्त कार्यभार बढ़ता जा रहा है।

स्थिति तब और गंभीर हो गई जब कुछ समय पहले बेस्ट कर्मचारियों की हड़ताल के कारण बस सेवाएं प्रभावित हुई थीं। हड़ताल के दौरान प्रशासन ने करीब १०० कर्मचारियों को निलंबित कर दिया था। इसके बाद कई कर्मचारियों को सेवा से हटाने और अनुशासनात्मक कार्रवाई की प्रक्रिया भी शुरू हुई। कर्मचारी संगठनों का आरोप है कि इससे पहले से मौजूद कर्मचारियों की कमी और बढ़ गई है, जबकि प्रशासन का कहना है कि सेवा व्यवस्था बनाए रखने के लिए अनुशासन आवश्यक है। बेस्ट कर्मचारियों के संगठन लगातार मांग कर रहे हैं कि रिक्त पदों को जल्द भरा जाए और सेवा शर्तों में सुधार किया जाए। उनका कहना है कि सीमित कर्मचारियों के भरोसे विशाल परिवहन व्यवस्था चलाना संभव नहीं है। वहीं प्रशासन का तर्क है कि वित्तीय दबाव और भर्ती प्रक्रियाओं से जुड़ी जटिलताओं के कारण नई नियुक्तियों में अपेक्षित गति नहीं आ पा रही है।

कर्मचारियों की कमी का सीधा असर बस सेवाओं की नियमितता पर दिखाई दे रहा है। कई मार्गों पर बसों की संख्या कम हो रही है, यात्रियों को लंबा इंतजार करना पड़ रहा है और भीड़भाड़ बढ़ रही है। तकनीकी कर्मचारियों की कमी से बसों के रखरखाव और मरम्मत कार्य भी प्रभावित होने की आशंका जताई जा रही है।

विशेषज्ञों का मानना है कि मुंबई जैसे महानगर में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने के लिए पर्याप्त मानव संसाधन अनिवार्य है। यदि समय रहते रिक्त पदों को नहीं भरा गया तो भविष्य में स्थिति और जटिल हो सकती है। बढ़ती आबादी और बढ़ती यात्रा मांग के बीच बेस्ट जैसी महत्वपूर्ण संस्था को पर्याप्त कर्मचारी, संसाधन और वित्तीय समर्थन उपलब्ध कराना आवश्यक होगा।

महिला सशक्तिकरण- देश का गौरव!

जब पढ़ेगी बेटी, तभी बढ़ेगा देश।

उन्हें पंख दें, उन्हें शिक्षित और सशक्त बनाएं।

हर महिला में शक्ति है - उसे पहचानें और सम्मान दें!

क्या सीवेज का शुद्ध पानी भविष्य की प्यास बुझाएगा? जल संकट के दौर में एक नई सोच, लेकिन कई सवाल भी

पानी को लेकर दुनिया भर में चिंता लगातार बढ़ रही है। कभी नदियों और तालाबों से समृद्ध माने जाने वाले शहर आज बूंद-बूंद पानी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। तेजी से बढ़ती आबादी, शहरीकरण, औद्योगीकरण और जलवायु परिवर्तन ने स्थिति को और गंभीर बना दिया है। ऐसे में अब उन विकल्पों पर चर्चा शुरू हो गई है, जिनकी कुछ दशक पहले कल्पना करना भी कठिन था। इन्हीं विकल्पों में से एक है–सीवेज यानी गंदे पानी को शुद्ध कर दोबारा उपयोग में लाना। आज अधिकांश शहरों में घरों, दफ्तरों और उद्योगों से निकलने वाला लाखों लीटर अपशिष्ट जल नालों और समुद्र में बहा दिया जाता है। इससे न केवल जल स्रोत प्रदूषित होते हैं, बल्कि पानी का एक बड़ा हिस्सा हमेशा के लिए बर्बाद भी हो जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इसी पानी को आधुनिक तकनीक की मदद से शुद्ध किया जाए, तो यह जल संकट को काफी हद तक कम कर सकता है।

दुनिया के कई देशों ने इस दिशा में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। सिंगापुर, इजराइल और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में शोधन किए गए अपशिष्ट जल का उपयोग कृषि, उद्योग और यहां तक कि पेयजल आपूर्ति के लिए भी किया जा रहा है। इन देशों का अनुभव बताता है कि सही तकनीक और कड़े गुणवत्ता मानकों के साथ गंदे पानी को सुरक्षित और उपयोगी बनाया जा सकता है। भारत में भी अब इस दिशा में गंभीर प्रयास शुरू हो चुके हैं। महानगरों में बड़े पैमाने पर सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं। इन संयंत्रों में कई चरणों में पानी को साफ किया जाता है। ठोस कचरे को अलग करने से लेकर जैविक उपचार, रासायनिक शोधन और उन्नत फिल्ट्रेशन तक की प्रक्रिया अपनाई जाती है। इसके बाद प्राप्त पानी का उपयोग बाग-बगीचों, निर्माण कार्यों और औद्योगिक इकाइयों में किया जा सकता है।

हालांकि, तकनीकी सफलता के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती लोगों की मानसिक स्वीकार्यता है। आम नागरिक के मन में यह सवाल स्वाभाविक रूप से उठता है कि जो पानी कभी सीवर में बहता था, क्या वह वास्तव में पीने योग्य बन सकता है? यही वह मनोवैज्ञानिक बाधा है, जिसे दूर किए बिना कोई भी योजना पूरी तरह सफल नहीं हो सकती। विशेषज्ञों का कहना है कि आधुनिक शोधन तकनीकें पानी से हानिकारक जीवाणु, वायरस, रसायन और अशुद्धियों को लगभग पूरी तरह हटाने में सक्षम हैं। कई मामलों में उपचारित पानी की गुणवत्ता प्राकृतिक जल स्रोतों के पानी से भी बेहतर पाई गई है। इसके बावजूद लोगों का विश्वास जीतने के लिए पारदर्शिता, नियमित जांच और वैज्ञानिक जानकारी का प्रसार जरूरी होगा।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू पर्यावरण का है। यदि शहरों का गंदा पानी बिना उपचार के नदियों, झीलों और समुद्र में छोड़ा जाता रहेगा, तो जल प्रदूषण लगातार बढ़ता जाएगा। इसके विपरीत, शोधन और पुनर्चक्रण की व्यवस्था न केवल जल स्रोतों को बचाएगी बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। भविष्य का जल प्रबंधन केवल नए बांध बनाने या दूर-दराज के स्रोतों से पानी लाने तक सीमित नहीं रहेगा। अब पानी के हर स्रोत का अधिकतम उपयोग करना समय की आवश्यकता बन चुका है। वर्षा जल संचयन, भूजल संरक्षण और अपशिष्ट जल पुनर्चक्रण को एक साथ अपनाना होगा। इनमें भी सीवेज जल का पुनः उपयोग सबसे व्यावहारिक और टिकाऊ विकल्पों में से एक माना जा रहा है।

सवाल यह नहीं है कि शुद्ध किया गया सीवेज जल उपयोगी है या नहीं, बल्कि सवाल यह है कि क्या हम बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अपनी सोच बदलने के लिए तैयार हैं? आने वाले वर्षों में पानी की बढ़ती मांग और घटते संसाधनों को देखते हुए संभव है कि आज जिस विचार पर बहस हो रही है, वही कल हमारी आवश्यकता बन जाए। इसलिए तकनीक के साथ-साथ जनजागृति और विश्वास निर्माण पर भी उतना ही ध्यान देना होगा। तभी गंदे पानी को संसाधन में बदलने की यह सोच वास्तव में सफल हो सकेगी। – जल संकट से जूझती दुनिया में सीवेज का शुद्ध पानी केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि भविष्य की अनिवार्यता बन सकता है।

आज अधिकांश शहरों में घरों, दफ्तरों और उद्योगों से निकलने वाला लाखों लीटर अपशिष्ट जल नालों और समुद्र में बहा दिया जाता है। इससे न केवल जल स्रोत प्रदूषित होते हैं, बल्कि पानी का एक बड़ा हिस्सा हमेशा के लिए बर्बाद भी हो जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इसी पानी को आधुनिक तकनीक की मदद से शुद्ध किया जाए, तो यह जल संकट को काफी हद तक कम कर सकता है।

भगवान जगन्नाथ द्वारा कांची-विजय और छेरापहंरा की परम्परा!

रथयात्रा के दिन पुरी के गजपति महाराजा (राजाओं के राजा) श्रीश्री दिव्य सिंहदेव द्वारा तीनों ही रथों पर छेरापहंरा (चंदन मिश्रित पवित्र और शीतल जल का छिड़कावकर सोने की मूंठ वाले झाड़ू से) अटूट आस्था, विश्वास, अपार श्रद्धा और विनम्रतासहित झाड़ू देने का दायित्व निभाते हैं।

भारत के अन्यतम धाम पुरुषोत्तम क्षेत्र के बड़दाण्ड (चौड़ी सड़क) पर प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीय तिथि को अनुष्ठित होती है भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा जो सादगी भरे राजतंत्रीय परम्परा पर आध्यात्मिक व प्रताजांत्रिक मूल्यों की रक्षा का पावन संदेश है। रथयात्रा के दिन पुरी के गजपति महाराजा (राजाओं के राजा) श्रीश्री दिव्य सिंहदेव द्वारा तीनों ही रथों पर छेरापहंरा (चंदन मिश्रित पवित्र और शीतल जल का छिड़कावकर सोने की मूंठ वाले झाड़ू से) अटूट आस्था, विश्वास, अपार श्रद्धा और विनम्रतासहित झाड़ू देने का दायित्व निभाते हैं। भगवान जगन्नाथ द्वारा अपने गजपति पुरुषोत्तम देव की कांची-विजय के लिए स्वयं युद्ध में जाना कांची विजय और छेरापहंरा से जुड़ी एक रोचक कथा भी है। रथयात्रा से जुड़ी ऐसी ही एक अमर कहानी है गजपति राजा पुरुषोत्तम देव और कांची की राजकुमारी पद्मावती की, जिसमें भगवान स्वयं अपने भक्त के स्वाभिमान की रक्षा करते हैं। कहते हैं कि वह समय ओडिशा साम्राज्य के वैभव का स्वर्णकाल था। पुरी के गजपति महाराज पुरुषोत्तम देव शक्तिशाली शासक होने के साथ-साथ भगवान जगन्नाथ के अनन्य भक्त थे। उनका दिन भगवान के नाम से शुरू होता और भगवान की सेवा पर ही समाप्त। हर वर्ष आषाढ़ मास में जब पुरी की सड़कों पर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के विशाल रथ निकलते, तब लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती। उसी समय एक अनूठी परंपरा निभाई जाती है।

दक्षिण भारत के शक्तिशाली राज्य कांचीपुरम में राजा साल्व नरसिंह का शासन था। उनकी पुत्री पद्मावती रूप, गुण और विद्या में अनुपम थीं। जब कांची के दरबार में गजपति पुरुषोत्तम देव की वीरता और वैभव की चर्चा पहुंची, तब दोनों राजवंशों के बीच विवाह प्रस्ताव की बात चली। कांची नरेश ने प्रारंभ में सहमति दे दी। लेकिन कुछ समय बाद उनके दरबारियों ने उन्हें बताया कि 'पुरी का राजा स्वयं रथ पर झाड़ू लगाता है। यह सुनकर कांची नरेश का चेहरा बदल गया। उन्हें लगा कि जो व्यक्ति झाड़ू लगाता हो, वह भला उनकी राजकुमारी के योग्य कैसे हो सकता है। उन्होंने इसे राजसी प्रतिष्ठा के विरुद्ध माना और विवाह प्रस्ताव ठुकरा दिया।

जब यह समाचार पुरी पहुंचा, तो गजपति पुरुषोत्तम देव का हृदय आहत हो उठा। उन्हें अपने अपमान का दुख कम था, लेकिन भगवान की सेवा का अपमान सहन नहीं हुआ। कहा जाता है कि उसी समय राजगुरु ने राजा से कहा कि 'महाराज, संसार नहीं समझता कि आप झाड़ू नहीं लगाते, बल्कि स्वयं जगन्नाथ महाप्रभु की सेवा करते हैं। सेवक होना अपमान नहीं, सबसे बड़ा गौरव है। फिर भी राजा का मन व्यथित रहा। उन्होंने प्रण लिया कि इस अपमान का उत्तर अवश्य देंगे। कुछ समय बाद गजपति सेना कांची की ओर बढ़ी। किंतु पहली लड़ाई में पुरुषोत्तम देव को पराजय का सामना करना पड़ा। निराश होकर वे पुरी लौटे और सीधे जगन्नाथ मंदिर पहुंचे। मंदिर में उन्होंने भगवान के सामने सिर झुका दिया और कहा कि 'प्रभु, यह युद्ध मेरे अहंकार का नहीं, आपकी सेवा के स्वाभिमान का है।

लोककथा कहती है कि उस रात मंदिर के सेवकों ने देखा कि भगवान जगन्नाथ और बलभद्र के विग्रहों के घोड़ों पर मिट्टी और पसीने के निशान थे। किसी को समझ नहीं आया कि ऐसा कैसे हुआ। अगले दिन राजा को संकेत मिला कि स्वयं भगवान उनके साथ युद्ध में जाएंगे। दूसरी बार जब गजपति सेना कांची की ओर बढ़ी, तब मार्ग में सैनिकों ने दो रहस्यमयी योद्धाओं को घोड़ों पर आगे-आगे जाते देखा। एक श्यामवर्ण और दूसरा गौरवर्ण। वे सेना को मार्ग दिखा रहे थे। रास्ते में एक वृद्धा ने उन दोनों योद्धाओं को दही-पखाल खिलाया। बाद में जब राजा वहां पहुंचे और उस वृद्धा ने उन योद्धाओं का वर्णन किया, तब राजा समझ गए कि वे स्वयं भगवान जगन्नाथ और बलभद्र थे। इस बार कांची पर विजय प्राप्त हुई। राजकुमारी पद्मावती को सम्मानपूर्वक पुरी लाया गया। लेकिन अपमान की स्मृति अभी भी राजा के मन में जीवित थी। क्रोध में उन्होंने राजगुरु से कहा कि 'इस राजकुमारी का विवाह किसी झाड़ू लगाने वाले से कर दो। राजगुरु बुद्धिमान थे। उन्होंने कुछ नहीं कहा और समय की प्रतीक्षा करने लगे। एक वर्ष बीत गया। फिर पुरी में रथयात्रा आई। लाखों श्रद्धालुओं के बीच गजपति महाराज फिर सोने की झाड़ू लेकर भगवान के रथ के सामने खड़े थे। वे पूरे समर्पण से 'छेरा पहंराऽ कर रहे थे। तभी राजगुरु राजकुमारी पद्मावती को लेकर वहां पहुंचे। उन्होंने ऊंचे स्वर में कहा कि राजकुमारी के लिए पूरे संसार में सबसे योग्य वर वही है, जो स्वयं भगवान जगन्नाथ का सबसे बड़ा सेवक हो और इस समय भगवान के रथ पर झाड़ू लगाने वाला यह सेवक और कोई नहीं, ओडिशा के गजपति महाराज हैं। राजा कुछ क्षण स्तब्ध रह गए। धीरे-धीरे उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। उनका क्रोध समाप्त हो चुका था।

वहीं रथयात्रा के पवित्र वातावरण में राजगुरु ने राजा पुरुषोत्तम देव और राजकुमारी पद्मावती का विवाह संपन्न कराया। कहते हैं, उस समय पुरी की सड़कों पर जय जगन्नाथ के स्वर गूंज उठे थे। लोगों ने देखा कि भगवान ने अपने भक्त की सेवा को संसार के सबसे बड़े स्वाभिमान में बदल दिया। आज भी पुरी की रथयात्रा में जब गजपति महाराज सोने की झाड़ू से रथ साफ करते हैं, तब यह कथा लोगों को याद दिलाती है कि सच्चा वैभव सत्ता में नहीं, सेवा और विनम्रता में होता है। ■

-अशोक पाण्डेय

१. मेष (Aries): जुलाई २०२६ मेष राशि के जातकों के लिए नई संभावनाओं और उपलब्धियों का महीना साबित हो सकता है। लंबे समय से रुके हुए कार्यों में गति आएगी और कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत का उचित सम्मान मिलेगा। नौकरीपेशा लोगों को नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं, जो भविष्य में पदोन्नति का मार्ग प्रशस्त करेंगी। व्यापार से जुड़े लोगों के लिए नए निवेश और विस्तार की योजनाएं लाभदायक साबित हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से यह महीना संतोषजनक रहेगा, हालांकि अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखना आवश्यक होगा। पारिवारिक जीवन में सुख-शांति बनी रहेगी और घर में किसी शुभ कार्य की योजना बन सकती है। प्रेम संबंधों में विश्वास और निकटता बढ़ेगी। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलने के संकेत हैं। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, लेकिन थकान और तनाव से बचने के लिए पर्याप्त आराम करना जरूरी होगा। महीने के अंतिम सप्ताह में कोई शुभ समाचार मन को प्रसन्न कर सकता है।

२. वृषभ (Taurus): वृषभ राशि वालों के लिए जुलाई का महीना धैर्य, मेहनत और व्यावहारिक निर्णयों का रहेगा। नौकरी में कार्यभार बढ़ सकता है, लेकिन आपकी लगन और समर्पण वरिष्ठों को प्रभावित करेगा। व्यवसायियों को नए साझेदारों या ग्राहकों से लाभ मिलने की संभावना है। आर्थिक स्थिति स्थिर रहेगी और पुराने निवेश से लाभ प्राप्त हो सकता है। पारिवारिक जीवन में सामंजस्य बना रहेगा तथा परिवार के साथ किसी यात्रा की योजना बन सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मनोबल बढ़ाएगा। प्रेम संबंधों में भावनात्मक जुड़ाव मजबूत होगा। विद्यार्थियों को पढ़ाई में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होगी, क्योंकि छोटी लापरवाही भी नुकसान पहुंचा सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से खानपान पर नियंत्रण रखें और नियमित व्यायाम को प्राथमिकता दें। महीने के अंत में कोई महत्वपूर्ण निर्णय आपके भविष्य को नई दिशा दे सकता है।

३. मिथुन (Gemini): मिथुन राशि के जातकों के लिए जुलाई २०२६ उत्साह और अवसरों से भरा रहेगा। करियर में नई उपलब्धियां हासिल होने की संभावना है। नौकरीपेशा लोगों को किसी विशेष परियोजना में सफलता मिल सकती है, जिससे प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यापारियों को नए संपर्कों और सौदों से लाभ मिलेगा। आर्थिक रूप से यह महीना मजबूत रहेगा और रुका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। परिवार में खुशी और उत्साह का माहौल रहेगा। किसी रिश्तेदार से शुभ समाचार मिलने की संभावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी और अविवाहित लोगों के लिए विवाह प्रस्ताव आ सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए यह समय विशेष रूप से अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, लेकिन अनियमित दिनचर्या से बचना आवश्यक होगा। सामाजिक गतिविधियों में आपकी भागीदारी बढ़ेगी और नए मित्र बन सकते हैं।

४. कर्क राशि वालों के लिए जुलाई का महीना भावनात्मक और व्यावहारिक संतुलन का रहेगा। करियर में कुछ चुनौतियां सामने आ सकती हैं, लेकिन आपकी समझदारी और धैर्य आपको सफलता दिलाएंगे। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतने की आवश्यकता होगी। अनावश्यक खर्चों से बचें और बचत पर ध्यान दें। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा तथा किसी धार्मिक या मांगलिक कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिल सकता है। प्रेम संबंधों में भावनात्मक गहराई बढ़ेगी। विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम पाने के लिए अतिरिक्त मेहनत करनी होगी। स्वास्थ्य के मामले में पेट और पाचन संबंधी समस्याओं से सावधान रहें। आध्यात्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ सकती है और मानसिक शांति का अनुभव होगा। महीने के अंतिम दिनों में कोई रुका हुआ कार्य पूरा होने से राहत मिलेगी।

५. सिंह (Leo): सिंह राशि के जातकों के लिए जुलाई २०२६ सफलता और सम्मान लेकर आ सकता है। नौकरीपेशा लोगों को पदोन्नति या वेतन वृद्धि का लाभ मिल सकता है। कार्यक्षेत्र में आपकी नेतृत्व क्षमता की सराहना होगी। व्यापार में विस्तार और लाभ के अच्छे संकेत हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और आय के नए स्रोत विकसित हो सकते हैं। परिवार में किसी सदस्य की उपलब्धि से खुशी का माहौल बनेगा। प्रेम संबंधों में विश्वास और रोमांस दोनों बढ़ेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, लेकिन अत्यधिक व्यस्तता के कारण थकान महसूस हो सकती

है। सामाजिक क्षेत्र में आपका प्रभाव बढ़ेगा और लोग आपकी सलाह को महत्व देंगे।

६. कन्या (Virgo): कन्या राशि वालों के लिए जुलाई का महीना योजनाओं को वास्तविकता में बदलने का समय रहेगा। नौकरी और व्यवसाय दोनों में प्रगति के संकेत हैं। आपकी मेहनत और अनुशासन आपको दूसरों से अलग पहचान दिलाएंगे। आर्थिक मामलों में स्थिरता बनी रहेगी तथा बचत बढ़ाने में सफलता मिलेगी। परिवार में पुराने मतभेद समाप्त हो सकते हैं और रिश्तों में मधुरता आएगी। प्रेम संबंधों में पारदर्शिता बनाए रखना आवश्यक होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा, विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वालों को सफलता मिल सकती है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, लेकिन मानसिक तनाव से बचने के लिए योग और ध्यान का सहारा लें। महीने के अंत तक कई अधूरे कार्य पूरे होने से संतोष मिलेगा।

७. तुला (Libra): तुला राशि के जातकों के लिए जुलाई २०२६ नई उम्मीदों और अवसरों का महीना रहेगा। नौकरी में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं और वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार में लाभ के संकेत हैं तथा नई साझेदारी फायदे का सौदा साबित हो सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और आय के नए स्रोत खुल सकते हैं। परिवार में खुशी और सौहार्द का वातावरण रहेगा। प्रेम जीवन में रोमांस बढ़ेगा और रिश्तों में मजबूती आएगी। विद्यार्थियों को नई प्रेरणा मिलेगी और पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, लेकिन यात्रा के दौरान सावधानी बरतना आवश्यक होगा। सामाजिक जीवन में सक्रियता बढ़ेगी और आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

८. वृश्चिक (Scorpio): वृश्चिक राशि वालों के लिए जुलाई का महीना आत्मविश्वास और दृढ़ इच्छाशक्ति का रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपके प्रयासों को पहचान मिलेगी और करियर में प्रगति के नए रास्ते खुलेंगे। व्यापार में निवेश से लाभ मिलने की संभावना है। आर्थिक रूप से समय अनुकूल रहेगा और पुराने कर्ज से राहत मिल सकती है। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा तथा घर में किसी शुभ आयोजन की संभावना है। प्रेम संबंधों में विश्वास बढ़ेगा और गलतफहमियां दूर होंगी। विद्यार्थियों के लिए समय सफलता दिलाने वाला रहेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा, लेकिन नियमित दिनचर्या बनाए रखना जरूरी है। आध्यात्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ेगी और मानसिक शांति प्राप्त होगी।

९. धनु (Sagittarius): धनु राशि के जातकों के लिए जुलाई २०२६ भाग्य और परिश्रम दोनों का साथ लेकर आएगा। नौकरीपेशा लोगों को नई जिम्मेदारियां और सम्मान प्राप्त हो सकता है। व्यापार में विस्तार की योजनाएं सफल होंगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और निवेश से लाभ मिलने की संभावना है। परिवार में किसी शुभ समाचार से प्रसन्नता का माहौल बनेगा। प्रेम संबंधों में सकारात्मक बदलाव आएंगे और रिश्ते मजबूत होंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे अवसर प्राप्त हो सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, लेकिन यात्रा के दौरान सावधानी रखना आवश्यक होगा। महीने के अंत तक कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि आपका आत्मविश्वास बढ़ा सकती है।

१०. मकर (Capricorn): मकर राशि वालों के लिए जुलाई का महीना मेहनत और उपलब्धियों का रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी लगन और अनुशासन सफलता दिलाएंगे। नौकरी में पदोन्नति या नई जिम्मेदारी मिलने के संकेत हैं। व्यापार में लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी, लेकिन खर्चों पर नियंत्रण बनाए रखना जरूरी होगा। परिवार का सहयोग मिलेगा और घर का वातावरण सुखद रहेगा। प्रेम जीवन में स्थिरता बनी रहेगी। विद्यार्थियों को मेहनत के अनुरूप परिणाम मिलेंगे। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, लेकिन पर्याप्त नींद और आराम की आवश्यकता होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और लोग आपके विचारों का सम्मान करेंगे।

११. कुंभ (Aquarius): कुंभ राशि के जातकों के लिए जुलाई २०२६ रचनात्मकता और नवाचार का महीना रहेगा। नौकरी और व्यवसाय दोनों में नए विचार सफलता दिला सकते हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी तथा निवेश से लाभ मिलने की संभावना है। परिवार में खुशी का माहौल रहेगा और किसी पारिवारिक समारोह में शामिल होने का अवसर मिलेगा। प्रेम संबंधों में नजदीकियां बढ़ेंगी और आपसी समझ बेहतर होगी। विद्यार्थियों के लिए यह समय विशेष रूप से अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, लेकिन अनियमित दिनचर्या और खानपान से बचना होगा। सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ेगी। महीने के अंतिम दिनों में कोई सुखद समाचार प्राप्त हो सकता है।

१२. मीन (Pisces): मीन राशि वालों के लिए जुलाई २०२६ आध्यात्मिकता, प्रगति और संतुलन का महीना रहेगा। करियर में नए अवसर मिल सकते हैं और आपकी मेहनत का उचित फल प्राप्त होगा। व्यापारियों को लाभ के अच्छे संकेत हैं तथा पुराने निवेश से फायदा हो सकता है। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और बचत में वृद्धि होगी। परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलेगा तथा रिश्तों में मधुरता आएगी। प्रेम संबंधों में भावनात्मक जुड़ाव बढ़ेगा। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा और प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलने की संभावना है। स्वास्थ्य सामान्य से बेहतर रहेगा, लेकिन नियमित व्यायाम को दिनचर्या का हिस्सा बनाना लाभकारी रहेगा। धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ेगी, जिससे मानसिक शांति और आत्मविश्वास दोनों में वृद्धि होगी। महीने का अंतिम सप्ताह विशेष रूप से शुभ और लाभदायक सिद्ध हो सकता है। ■

गोवा: सिर्फ समुद्र तट नहीं, एक जीवंत संस्कृति

लहरों के पार बसी एक ऐसी दुनिया, जहाँ इतिहास बोलता है, संगीत सांस लेता है और परंपराएँ आज भी जीवित हैं

जब भी गोवा का नाम लिया जाता है, तो अधिकांश लोगों के मन में समुद्र तटों, विदेशी पर्यटकों, रंगीन नाइट लाइफ और छुट्टियों की तस्वीर उभर आती है। पर्यटन विज्ञापनों और फिल्मों ने भी गोवा की यही छवि बनाई है। लेकिन जो लोग गोवा को केवल बीच, पार्टी और छुट्टियों के चश्मे से देखते हैं, वे वास्तव में गोवा की आत्मा को नहीं देख पाते। गोवा सिर्फ एक पर्यटन स्थल नहीं है। यह भारत की बहुसांस्कृतिक विरासत का जीवंत दस्तावेज है। यह वह भूमि है जहाँ भारतीय और यूरोपीय संस्कृतियाँ टकराती नहीं, बल्कि एक-दूसरे में घुल-मिलकर एक नई पहचान बनाती हैं। यहाँ इतिहास सिर्फ किताबों में नहीं, बल्कि गलियों, चर्चों, मंदिरों, घरों और लोगों के जीवन में दिखाई देता है।

सच यह है कि समुद्र तट गोवा का चेहरा हैं, लेकिन उसकी आत्मा नहीं। हर साल लाखों पर्यटक गोवा आते हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश बागा, कलंगुट, अंजुना और पालोलेम जैसे समुद्र तटों तक ही सीमित रह जाते हैं। वे गोवा के उस हिस्से को नहीं देख पाते जहाँ सदियों पुरानी परंपराएँ आज भी जीवित हैं। गोवा की पहचान उसके समुद्र तटों जितनी ही उसके गाँवों, चर्चों, मंदिरों, लोकगीतों, त्योहारों और लोगों की जीवनशैली से भी जुड़ी हुई है। यही वह पक्ष है जो गोवा को केवल पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक प्रदेश बनाता है।

इतिहास की परछाइयों में बना वर्तमान गोवा

गोवा का इतिहास भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे रोचक इतिहासों में से एक है। प्राचीन काल में यह कदंब राजाओं का महत्वपूर्ण केंद्र था। बाद में विभिन्न राजवंशों और सल्तनतों का शासन यहाँ रहा। १५१० में पुर्तगाली सेनापति अफोंसो द अल्बुकर्क ने गोवा पर अधिकार किया और इसके साथ ही शुरू हुआ लगभग साढ़े चार सौ वर्षों का पुर्तगाली शासन। इतनी लंबी अवधि तक विदेशी शासन में रहने के बावजूद गोवा ने अपनी मूल भारतीय सांस्कृतिक पहचान को पूरी तरह खोने नहीं दिया। यही कारण है कि यहाँ भारतीय और यूरोपीय प्रभावों का अद्भुत मिश्रण दिखाई देता है। १९६१ में 'ऑपरेशन विजय' के माध्यम से गोवा भारत में शामिल हुआ। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण की शुरुआत भी थी।

चर्च और मंदिर: सहअस्तित्व की अनूठी मिसाल

गोवा की सबसे बड़ी सांस्कृतिक ताकत उसकी धार्मिक विविधता है।

यहाँ चर्चों की घंटियाँ और मंदिरों की आरती एक साथ सुनाई देती हैं। पुराने गोवा के विशाल चर्च आज भी पुर्तगाली स्थापत्य कला की भव्यता को दर्शाते हैं। वहीं मंगेशी, शांतादुर्गा और महालसा जैसे मंदिर गोवा की

प्राचीन आध्यात्मिक परंपरा को जीवित रखते हैं। विशेष बात यह है कि यहाँ धार्मिक पहचान संघर्ष का कारण नहीं, बल्कि सामाजिक सामंजस्य का माध्यम रही है। कई परिवार ऐसे हैं जहाँ विभिन्न धार्मिक समुदायों के लोग दशकों से पड़ोसी और

मित्र के रूप में साथ रहते आए हैं। यही कारण है कि गोवा भारत में सांप्रदायिक सद्भाव की एक सफल मिसाल माना जाता है।

गाँवों में बसती है गोवा की असली आत्मा

यदि कोई व्यक्ति गोवा की वास्तविक संस्कृति को समझना चाहता है, तो उसे समुद्र तटों से निकलकर गाँवों की ओर जाना होगा। गोवा के गाँव किसी चित्रकार की कल्पना जैसे लगते हैं। लाल टाइलों वाली छतें, रंगीन पुर्तगाली शैली के मकान, नारियल और सुपारी के पेड़ों से घिरी पगडंडियाँ, छोटे-छोटे खेत और मछली पकड़ने निकलते लोग–यह सब मिलकर एक अलग ही संसार रचते हैं। यहाँ जीवन की गति महानगरों की तुलना में धीमी है, लेकिन रिश्ते कहीं अधिक मजबूत हैं।

सच यह है कि समुद्र तट गोवा का चेहरा हैं, लेकिन उसकी आत्मा नहीं। हर साल लाखों पर्यटक गोवा आते हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश बागा, कलंगुट, अंजुना और पालोलेम जैसे समुद्र तटों तक ही सीमित रह जाते हैं। वे गोवा के उस हिस्से को नहीं देख पाते जहाँ सदियों पुरानी परंपराएँ आज भी जीवित हैं। गोवा की पहचान उसके समुद्र तटों जितनी ही उसके गाँवों, चर्चों, मंदिरों, लोकगीतों, त्योहारों और लोगों की जीवनशैली से भी जुड़ी हुई है। यही वह पक्ष है जो गोवा को केवल पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक प्रदेश बनाता है।

गाँवों में आज भी सामुदायिक भावना जीवित है। किसी के घर विवाह हो, त्योहार हो या कोई संकट–पूरा गाँव एक परिवार की तरह साथ खड़ा दिखाई देता है।

कोंकणी भाषाः पहचान और स्वाभिमान की धुरी

गोवा की आत्मा को समझना है तो कोंकणी भाषा को समझना होगा। कोंकणी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि गोवा की सांस्कृतिक स्मृति है। लोककथाएँ, लोकगीत, कहावतें और साहित्य इसी भाषा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़े हैं। हालाँकि आधुनिकता और अंग्रेज़ी

के बढ़ते प्रभाव के कारण कोंकणी को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, फिर भी गोवा के साहित्यकार, कलाकार और सामाजिक संगठन इसे जीवित रखने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। आज भी गोवा के सांस्कृतिक आयोजनों में कोंकणी भाषा गर्व के साथ सुनाई देती है।

संगीतः गोवा की धड़कन

यदि किसी ने गोवा को ध्यान से देखा हो तो वह जानता होगा कि यहाँ संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन का हिस्सा है। गोवा के लोकगीत, चर्च संगीत, पश्चिमी बैंड संस्कृति और आधुनिक संगीत का अनूठा संगम यहाँ देखने को मिलता है। विवाह समारोह हो, धार्मिक उत्सव हो या गाँव का कोई सामाजिक आयोजन–संगीत हर जगह मौजूद रहता है। गोवा की यही संगीत परंपरा उसे भारत के अन्य राज्यों से अलग पहचान देती है।

त्योहारः संस्कृति का जीवंत उत्सव

गोवा के त्योहार केवल धार्मिक आयोजन नहीं होते, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम भी होते हैं। गोवा कार्निवल, शिगमो, गणेशोत्सव, क्रिसमस, ईस्टर और दिवाली जैसे पर्व यहाँ पूरे उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। विशेष बात यह है कि इन उत्सवों में केवल एक समुदाय नहीं, बल्कि पूरे समाज की भागीदारी देखने को मिलती है। त्योहारों के दौरान गोवा की गलियाँ रंगों, संगीत और लोकनृत्यों से भर उठती हैं।

गोवा का खानपानः स्वाद में इतिहास

गोवा का भोजन उसकी सांस्कृतिक यात्रा का स्वादिष्ट दस्तावेज है। यहाँ भारतीय मसालों और पुर्तगाली प्रभाव का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। फिश करी-राइस, विंदालू, शाकुती, प्रॉन बलचाव और बेबिंका जैसे व्यंजन केवल भोजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान हैं। खानपान के माध्यम से भी गोवा अपनी विविधता और इतिहास की कहानी कहता है। पर्यटन ने गोवा को आर्थिक समृद्धि दी है, लेकिन इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी पैदा हुई हैं। बढ़ती आबादी, भूमि की बढ़ती कीमतें, पर्यावरणीय संकट, प्लास्टिक कचरा और स्थानीय संस्कृति पर बाहरी प्रभाव आज गंभीर चिंताओं का विषय हैं। कई सामाजिक कार्यकर्ता मानते हैं कि यदि संतुलित विकास नहीं हुआ, तो गोवा की सांस्कृतिक पहचान धीरे-धीरे कमजोर हो सकती है। प्रश्न यह नहीं है कि विकास होना चाहिए या नहीं, बल्कि यह है कि विकास किस कीमत पर होना चाहिए।

आज का युवा गोवा तकनीक, शिक्षा और वैश्विक अवसरों की ओर बढ़ रहा है। वहीं दूसरी ओर अपनी भाषा, संस्कृति और विरासत को भी बचाने की कोशिश कर रहा है। गोवा ने आधुनिकता को अपनाया है, लेकिन अपनी जड़ों से पूरी तरह कटने से भी इंकार किया है। गोवा को केवल समुद्र तटों और पर्यटन तक सीमित कर देना उसके वास्तविक स्वरूप के साथ अन्याय होगा। यह वह भूमि है जहाँ इतिहास जीवित है, संस्कृति साँस लेती है, संगीत धड़कता है और परंपराएँ रोजमर्रा के जीवन में दिखाई देती हैं। यहाँ का हर गाँव, हर चर्च, हर मंदिर, हर लोकगीत और हर त्योहार एक कहानी कहता है।

गोवा हमें सिखाता है कि आधुनिकता और परंपरा एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकती हैं। इसलिए अगली बार जब आप गोवा जाएँ, तो केवल समुद्र की लहरों को ही न देखें। उन लोगों को भी समझने की कोशिश करें जिन्होंने सदियों से इस भूमि की संस्कृति को जीवित रखा है। ■

दीवाली पर टकराएंगे शाहरुख खान और ऋतिक रोशन!

इस साल दीवाली का त्योहार सिनेमा प्रेमियों और बॉक्स ऑफिस के लिए बेहद धमाकेदार होने जा रहा है। भारतीय सिनेमा के इतिहास का सबसे बड़ा मुकाबला इस दीवाली पर देखने को मिलेगा, जब बॉलीवुड के 'किंग' शाहरुख खान और 'ग्रीक गॉड' ऋतिक रोशन एक ही दिन सिनेमाघरों में आमने-सामने होंगे। शाहरुख खान की मोस्ट-अवेडेट एक्शन-थ्रिलर फिल्म 'किंग' और ऋतिक रोशन की ब्लॉकबस्टर सुपरहीरो फ्रेंचाइजी की अगली कड़ी 'क्रिश ४' ने अपनी रिलीज़ के लिए दीवाली की तारीख को लॉक कर दिया है। इस आधिकारिक ऐलान के बाद से ही पूरी फिल्म इंडस्ट्री और दर्शकों के बीच हलचल तेज हो गई है।

ट्रेड एनालिस्ट्स का मानना है कि दोनों फिल्मों का कंटेंट और स्टारडम इतना मजबूत है कि यह क्लैश बॉक्स ऑफिस पर कमाई के सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ सकता है। सुजॉय घोष के निर्देशन में बन रही 'किंग' में शाहरुख खान

के साथ उनकी बेटी सुहाना खान भी नज़र आने वाली हैं, जिसे लेकर भारी उत्सुकता है। वहीं दूसरी तरफ, सालों के इंतजार के बाद लौट रही

'क्रिश ४' भारत की सबसे बड़ी सुपरहीरो फिल्म होने का दावा कर रही है। इस महा-मुकाबले के ऐलान के साथ ही मल्टीप्लेक्स एसोसिएशन और सिंगल स्क्रीन थियेटर मालिकों के बीच स्क्रीन्स और शोज़ के बंटवारे को लेकर खींचतान शुरू हो गई है। अब देखना यह होगा कि दीवाली के इस महा-उत्सव में बॉक्स ऑफिस की बाजी कौन मारता है–शाहरुख का एक्शन अवतार या ऋतिक का सुपरहीरो जादू!

स्मिता पाटिल के इनकार के बाद हेमा मालिनी को कैसे मिली 'रिहाई'

बॉलीवुड के गलियारों से अक्सर फिल्मों की कास्टिंग को लेकर ऐसे दिलचस्प किस्से सामने आते हैं जो फैंस को हैरान कर देते हैं, और ऐसा ही एक अनसुना किस्सा साल १९८८ में आई सामाजिक पृष्ठभूमि पर बनी मशहूर फिल्म 'रिहाई' से जुड़ा हुआ है। बहुत कम लोग जानते हैं कि इस फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने वाली 'ड्रीम गर्ल' यानी हेमा मालिनी से पहले यह रोल बॉलीवुड की बेहद दिग्गज और संजीदा अदाकारा स्मिता पाटिल को ऑफर किया गया था। डायरेक्टर अरुणा राजे इस रोल के लिए सबसे पहले स्मिता पाटिल के पास ही गई थीं, लेकिन जब किन्हीं कारणों से स्मिता ने इस फिल्म को करने से मना कर दिया, तब यह रोल हेमा मालिनी की झोली में जा गिरा। हेमा मालिनी ने भी जब इस फिल्म की अनोखी कहानी और इसकी खूबी को देखा, तो वो इसे करने से खुद को रोक नहीं पाईं। हाल ही में एक इंटरव्यू में खुद हेमा मालिनी ने इस बात का बड़ा खुलासा किया कि आखिर वो इस फिल्म के लिए इतनी जल्दी राजी क्यों हो गई थीं। हेमा मालिनी ने बताया कि उस दौर में उनकी एक गहरी इच्छा थी कि वह किसी महिला डायरेक्टर के साथ काम करें, और ऐसे में जब अरुणा राजे उनके पास महिलाओं के हक की एक बेहद मजबूत स्क्रिप्ट लेकर आईं, तो उन्होंने तुरंत इस रोल के लिए हामी भर दी। ग्रामीण परिवेश में महिलाओं के संघर्ष और उनके अधिकारों को बेहद बोल्ड व प्रगतिशील तरीके से दिखाने वाली इस फिल्म में हेमा मालिनी के साथ-साथ दिग्गज एक्ट्रेस नीना गुप्ता ने भी एक बेहद अहम और यादगार किरदार निभाया था, जिसकी तारीफ आज भी की जाती है।

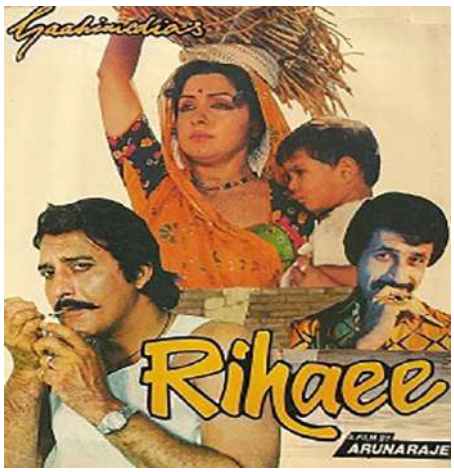

कीट-कीस के विद्यार्थियों ने रचा इतिहासः संताली में मंचित किए शेक्सपियर के नाटक

कीस के विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर संताली भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का मंचन करने वाला पहला समूह बनकर इतिहास रचा है। रोमानिया में आयोजित विश्व शेक्सपियर थिएटर महोत्सव में ४५ देशों के कुल ७१ विश्वविद्यालयों से लगभग ३,००० विद्यार्थियों ने भाग लिया था। महोत्सव के दौरान विद्यार्थियों ने शेक्सपियर की प्रसिद्ध कृतियों 'रोमियो एंड जूलियट', 'हैमलेट' और 'मैकबेथ' का संताली भाषा में मंचन कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रशंसा अर्जित की। विदेश से लौटने के बाद उन्होंने नई दिल्ली में भी विभिन्न देशों के राजदूतों, उच्चायुक्तों और विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में प्रस्तुति देकर सराहना प्राप्त की। भुवनेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने संताली भाषा में इन तीनों कालजयी नाटकों का मंचन किया।

रोमानिया में शेक्सपियर के नाटकों का सफल मंचन कर इतिहास रचने के बाद कीट-कीस के विद्यार्थियों ने भुवनेश्वर में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उनके उत्कृष्ट अभिनय को दर्शकों ने भरपूर सराहना दी। कार्यक्रम का उद्घाटन ओडिशा विधानसभा की अध्यक्ष सुरमा पाढ़ी ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। उन्होंने विद्यार्थियों की प्रतिभा और उपलब्धि की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस अवसर पर पूर्व सांसद निरंजन बिशी, कटक के महापौर सुभाष सिंह, भुवनेश्वर की महापौर सुलोचना दास, हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप तिर्की, कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक तथा राज्यसभा और कंधमाल लोकसभा के पूर्व सांसद प्रो.डॉ. अच्युत सामंत तथा कीट के कुलाधिपति अशोक कुमार परिजा सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। सभी ने विद्यार्थियों को उनकी ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए बधाई दी।

कीस के विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर संताली भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का मंचन करने वाला पहला समूह बनकर इतिहास रचा है। रोमानिया में आयोजित विश्व शेक्सपियर थिएटर महोत्सव में ४५ देशों के कुल ७१ विश्वविद्यालयों से लगभग ३,००० विद्यार्थियों ने भाग लिया था। महोत्सव के दौरान विद्यार्थियों ने शेक्सपियर की प्रसिद्ध कृतियों 'रोमियो एंड जूलियट', 'हैमलेट' और 'मैकबेथ' का संताली भाषा में मंचन कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रशंसा अर्जित की। विदेश से लौटने के बाद उन्होंने नई दिल्ली में भी विभिन्न देशों के राजदूतों, उच्चायुक्तों और विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में प्रस्तुति देकर सराहना प्राप्त की। भुवनेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने संताली भाषा में इन तीनों कालजयी नाटकों का मंचन किया। 'हैमलेट' का निर्देशन देबानुज मजूमदार ने किया और उन्होंने ही मुख्य भूमिका निभाई। अन्य कलाकारों में आद्रिका शिंजिनी (ओफेलिया), कमलिका बाग (गर्ट्रूड), बिस्वरूप दत्ता (किंग हैमलेट), सुजात्रा मुखर्जी (क्लॉडियस) तथा दिलीप श्राम्बुटिका (ओफेलिया के पिता) शामिल थे।

'मैकबेथ' का निर्देशन आद्रिका शिंजिनी ने किया। इसमें उर्मिला मुर्मू, लोपामुद्रा कांती, मिनमिनाती झोड़िया, रश्मिता तामरबी और बिष्णुप्रिया नायक ने चुड़ैलों की भूमिका निभाई। स्मृति दास ने लेडी मैकबेथ, प्रियांशु कुमार ने मैकबेथ, देबानुज मजूमदार ने बैंको, कमलिका बाग ने सर्वज्ञ कथावाचक तथा प्रतीक्षा मिश्रा ने लेडी मैकबेथ के प्रतिबिंब की भूमिका निभाई। 'रोमियो एंड जूलियट' का निर्देशन कमलिका बाग ने किया। इसमें प्रियांशु कुमार (रोमियो), हेमलता नायक (जूलियट), सुजात्रा मुखर्जी (मर्क्यूशियो), बिस्वरूप दत्ता (बेन्वोलियो), रश्मिता तामरबी (लेडी कैपुलेट), दिलीप साम्बर्तिका (लॉर्ड कैपुलेट) तथा संजना सिंह (लेडी फ्रायर) ने अभिनय किया।

प्रस्तुतियों को पिंटू माझी, बिपिन माझी, अनंत अंगरा, शौर्य अमित, आद्रिका शिंजिनी, देबानुज मजूमदार और कमलिका बाग के जीवंत संगीत ने और भी प्रभावशाली बना दिया। शेक्सपियर के नाटकों का संताली अनुवाद उर्मिला मुर्मू ने किया, जिनके प्रयासों से विश्व साहित्य की इन कालजयी रचनाओं को एक स्वदेशी भाषा में नया आयाम मिला। कार्यक्रम का समापन कीट के कुलपति प्रो. सरनजीत सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।■

टाइम्स हायर एजुकेशन सस्टेनेबिलिटी इम्पैक्ट रैंकिंग २०२६ में कीट भारत में चौथे स्थान पर पहुंचा

कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इन्डस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (डीम्ड विश्वविद्यालय) ने टाइम्स हायर एजुकेशन (THE) सस्टेनेबिलिटी इम्पैक्ट रैंकिंग २०२६ में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए भारत के सरकारी एवं निजी विश्वविद्यालयों के प्रकाशित सूची में चौथा स्थान प्राप्त किया है। गौरतलब है कि पिछले वर्ष कीट पांचवें स्थान पर था। वैश्विक स्तर पर विश्वविद्यालय को प्रतिष्ठित १०१-२०० श्रेणी में स्थान मिला है। इस वर्ष कीट को संयुक्त राष्ट्र के सभी १७ सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अंतर्गत रैंक किया गया। विशेष रूप से विश्वविद्यालय ने एअ १० (असमानताओं में कमी), SDG १४ (जलमग्न जीवन का संरक्षण) और SDG १६ (शांति, न्याय एवं सशक्त संस्थान) में भारत में प्रथम स्थान हासिल किया। इसके अलावा SDG ९ (उद्योग, नवाचार एवं अवसंरचना) में कीट को देश में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। अन्य सभी SDGs में भी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष-१० में अपनी मजबूत उपस्थिति बनाए रखी।

कीट का यह शानदार प्रदर्शन इसके संस्थापक, राज्यसभा और कंधमाल लोकसभा के पूर्व सांसद प्रोफेसर डॉ अच्युत सामंत के दूरदर्शी नेतृत्व और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के प्रति संस्थान की गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह उपलब्धि इस बात का भी प्रमाण है कि विश्वविद्यालय केवल नीतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि SDGs के प्रभावी क्रियान्वयन, मापनीय प्रगति और वास्तविक सामाजिक प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। इस अवसर पर महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर डॉ. अच्युत सामंत ने कहा, 'हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि कीट ने एक बार फिर टाइम्स हायर एजुकेशन इम्पैक्ट रैंकिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। हमने अपनी मजबूत स्थिति बनाए रखते हुए वर्ष-दर-वर्ष अपने प्रदर्शन में गुणात्मक सुधार किया है जो उत्कृष्टता और सतत विकास के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।'

उल्लेखनीय है कि टाइम्स हायर एजुकेशन (THE) संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप विश्वविद्यालयों के सामाजिक प्रभाव का आकलन कर यह रैंकिंग प्रकाशित करता है। यह रैंकिंग विश्व विश्वविद्यालय रैंकिंग के अतिरिक्त उच्च शिक्षा संस्थानों के सामाजिक योगदान और सतत विकास में उनकी भूमिका को भी मान्यता प्रदान करती है।

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय में आयोजित चार दिवसीय हिन्दी कार्यक्रम अनेकानेक उपलब्धियों के साथ संपन्न

स्थानीय कीट डीम्ड विश्वविद्यालय में दिनांकः०९ जून से १२ जून तक चार दिवसीय एक हिन्दी कार्यक्रम आयोजित किया गया।वह कार्यक्रम १२ जून को अनेकानेक उपलब्धियों के साथ अपराह्न काल में संपन्न हो गया। आयोजन की खास बात यह रही कि हिन्दी संसाधक द्य के रुप में ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय,कोरापुट के भूतपूर्व कुलपति प्रोफेसर चक्रधर त्रिपाठी तथा स्थानीय केन्द्रीय विद्यालय नं-६,पोखरीपुट के अवकाशप्राप्त प्राचार्य अशोक पाण्डेय ने योगदान दिया।हिन्दी कार्यक्रम के अंतिम दिवस के कार्यक्रम का आरंभ संसाधक द्य द्वारा भगवान जगन्नाथ और हनुमान जी की तस्वीर के समीप परम्परागत दीपप्रज्ज्वलन के साथ हुआ। अपने संबोधन में प्रोफेसर चक्रधर त्रिपाठी ने बताया कि भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी शब्द-सम्पदा है जिसमें तत्सम,तद्भव,देशज तथा विदेशी शब्द है। यह राजभाषा बोल-चाल की सबसे सशक्त और उपयोगी राजभाषा है। यह हिन्दी प्रेम की भाषा है। हिन्दी में जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा भी जाता है। हिन्दी की सम्प्रेषणियता सरल है।उन्होंने यह भी बताया कि वे अच्छी तरह से जानते हैं कि किसी भी अहिन्दी भाषी प्रदेश के डीम्ड विश्वविद्यालय में हिन्दी कार्यशाला कभी भी आयोजित नहीं होती है लेकिन संसाधक अशोक पाण्डेय ने बताया कि पिछले लगभग २० सालों से वे यहां पर यहां के तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए प्रतिवर्ष हिन्दी कार्यशाला आयोजित करते रहे हैं जो एक सुखद पहल है,खुशी की बात है क्योंकि कीट डीम्ड विश्वविद्यालय भारत का छठा सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय है जहां पर हिन्दी भाषी युवा-युवती तकनीकी और उच्च शिक्षा अर्जित करते हैं जिनमें अधिकतक हिन्दी भाषी प्रदेशों से हैं और उनके साथ उनके छात्रावासों में यहां के कर्मचारियों को सरल और व्यावहारिक हिन्दी बोलना बहुत जरुरी है। वहीं संसाधक अशोक पाण्डेय ने बताया कि कीट-कीस और कीम्स में लगभग ८० हजार युवा-युवती पढ़ते हैं जिनके लिए ओड़िशा के कार्यरत ओड़िया महिला और पुरुष कर्मचारियों को इस हिन्दी कार्यक्रम के माध्यम से दक्ष बनाया बहुत जरुरी है। उनको बोलचाल के

विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव

भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा:2026

श्रीक्षेत्र, शंखक्षेत्र, मर्त्य बैकुण्ठ, पुरुषोत्तम क्षेत्र कहें या श्रीजगन्नाथ पुरी धाम, यह प्राचीन काल से ही धर्म, दर्शन, साधना, आध्यात्मिक उन्नति, सनातनी संस्कारों और आत्म-निवेदन का प्रमुख केंद्र रहा है। यहां पर अनेक ऋषि, योगी, मुनि, सिद्धपुरुष और मानवेत्तर प्रकृति के महापुरुष आते रहे हैं। इसीलिए यह क्षेत्र साधना, सिद्धि तथा आत्ममुक्ति का पवित्र स्थल बन चुका है। शाश्वत सत्य तो यह है कि यह देवभूमि भगवान श्रीजगन्नाथ की लीला-भूमि है जहां पर वे अपनी माधुर्य लीला और ऐश्वर्य लीला से विश्व मानवता को प्रतिपल आकृष्ट करते रहते हैं। यह श्रीक्षेत्र धर्मकानन है। यह महोदधि का क्षेत्र धर्म, बौद्धिक ज्ञान, आध्यात्मिक उन्नति और वैदिक अध्ययन-अध्यापन का प्राचीन काल से ही एक प्रमुख और विशिष्ट केंद्र रहा है। यहां पर जगतगुरु आदिशंकराचार्य, चैतन्य, रामानुजाचार्य, जयदेव, विद्यापति, नानक, कबीर और गोस्वामी तुलसीदास जी आये और श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर अपने-अपने इष्टदेवों के रुप में भगवान जगन्नाथ के दर्शन किये। वे सभी महाप्रभु की इच्छा से आये और उनकी अलौकिक महिमा को

२०२६ की रथयात्रा आगामी १६ जुलाई को है। पद्मपुराण के अनुसार आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि सभी कार्यों के लिए सिद्धियात्री तिथि होती है। भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा इसीलिए अपने आपमें विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव बनकर भगवान जगन्नाथ के प्रति वास्तविक श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, आत्मनिवेदन, करुणा, लौकिक-अलौकिक विश्वास को बनोये रखने का संदेश है। मानव को भव-बंधन से मुक्ति, आत्मचेतना को पवित्र करने का सुअवसर होता है। रथयात्रा के दिन भोर में श्रीमंदिर के रत्नवेदी से चतुर्धादेव विग्रहों को एक-एककर पहण्डी विजय कराकर उनके अलग-अलग सुनिश्चित रथों पर आरुढ कराया जाता है। बलभद्रजी को तालध्वज रथ पर, सुभद्रा माता को तथा सुदर्शन जी को देवदलन रथ पर तथा भगवान जगन्नाथ को नंदिघोष रथ पर आरुढ कराया जाता है। रथयात्रा के दिन सबसे आगे तालध्वज रथ चलता है। उसके पीछे देवदलन रथ तथा सबसे आखिर में भगवान जगन्नाथ का रथ नंदिघोष रथ चलता है।

स्वीकार कर उनके अनन्य भक्त बन गये।

श्रीजगन्नाथ धाम पुरी में प्रतिवर्ष आषाढ शुक्ल द्वितीया को अनुष्ठित होनेवाली भगवान जगन्नाथ की विश्वप्रसिद्ध रथयात्रा सचमुच विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव है जिसे लगभग एक हजार वर्षों से इसे स्पष्ट रुप से देखा जाता रहा है। यह रथयात्रा धर्म, दर्शन और भक्ति की त्रिवेणी है। रथयात्रा के दिन जगन्नाथ भगवान अपने भक्तों से स्वयं आकर मिलते हैं और उन्हें मित्रवत भाव से अहंकार रहित अपनी भक्ति का पावन संदेश देते हैं। रथयात्रा को दशावतार यात्रा, पतितपावन यात्रा, जनकपुरी यात्रा, सुंदराचल यात्रा, घोष यात्रा, नव दिवसीय यात्रा तथा गुण्डिचा यात्रा भी कहते हैं। यह रथयात्रा विश्व की समस्त संस्कृतियों, सभ्यताओं, सम्प्रदायों और लौकिक सामाजिक मान्याताओं का समाहार होती है क्योंकि भगवान जगन्नाथ चतुर्धा देव रुप में जगत के नाथ हैं। विश्व मानवता के स्वामी हैं। विश्व मानवता की रक्षा, शांति और समृद्धि के केन्द्र बिन्दु हैं। वे अपने दारुविग्रह रुप में सौर, वैष्णव, शैव, शाक्त, गाणपत्य, बौद्ध और जैन भी हैं। वे अवतार नहीं, अवतारी हैं। वे १६ कलाओं से परिपूर्ण हैं। वे अपने भक्तों की अटूट आस्था एवं विश्वास के इष्टदेव हैं। रथयात्रा के दिन वे रथारुढ होकर विश्व मानवता को शांति, एकता, मैत्री और समृद्धि का पावन संदेश देते हैं।

२०२६ की रथयात्रा आगामी १६ जुलाई को है। पद्मपुराण के अनुसार आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि सभी कार्यों के लिए सिद्धियात्री तिथि होती है। भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा इसीलिए अपने आपमें विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव बनकर भगवान जगन्नाथ के प्रति वास्तविक श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, आत्मनिवेदन, करुणा, लौकिक-अलौकिक विश्वास को बनोये रखने का संदेश है। मानव को भव-बंधन से मुक्ति, आत्मचेतना को पवित्र करने का सुअवसर होता है। रथयात्रा के दिन भोर में श्रीमंदिर के रत्नवेदी से चतुर्धादेव विग्रहों को एक-एककर पहण्डी विजय कराकर उनके अलग-अलग सुनिश्चित रथों पर आरुढ कराया जाता है। बलभद्रजी को तालध्वज रथ पर, सुभद्रा माता को तथा सुदर्शन जी को देवदलन रथ पर तथा भगवान जगन्नाथ को नंदिघोष रथ पर आरुढ कराया जाता है। रथयात्रा के दिन सबसे आगे तालध्वज रथ चलता है। उसके पीछे देवदलन रथ तथा सबसे आखिर में भगवान जगन्नाथ का रथ नंदिघोष रथ चलता है।

प्रतिवर्ष तीनों रथ नये बनाये जाते हैं और पुराने रथों को तोड़ दिया जाता है। तीनों रथों पर पार्श्वदेवगण प्रतिवर्ष नये बनते हैं। ऋग्वेद तथा यजुर्वेद में रथ के उपयोग का वर्णन मिलता है। रथ निर्माण के लिए काष्ठसंग्रह का पवित्र कार्य प्रतिवर्ष वसंतपंचमी से आरंभ होता है। काष्ठसंग्रह दशपल्ला के जंगलों से प्रायः होता है। रथनिर्माण का कार्य वंशपरम्परानुसार भोई सेवायतगण अर्थात् श्रीमंदिर से जुडे बढईगण ही करते हैं। उनको पारिश्रमिक के रुप में पहले जागीर दी जाती थी लेकिन जागीर प्रथा समाप्त होने के बाद उन्हें अब श्रीमंदिर की ओर से पारिश्रमिक दिया जाता है। रथ-निर्माण में कुल लगभग २०५ प्रकार के सेवायतगण सहयोग करते हैं।

कहते हैं कि जिस प्रकार पांच तत्वों के योग से मानव शरीर का निर्माण हुआ है ठीक उसी प्रकार से पांच तत्वःकाष्ठ, धातु, रंग, परिधान तथा सजावटी सामग्रियों के योग से रथों का निर्माण होता है। रथनिर्माण का कार्य पुरी के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेवजी के राजमहल श्रीनाहर के ठीक सामने रखखल्ला में होता है। रथयात्रा के एक दिन पूर्व आषाढ शुक्ल प्रतिपदा के दिन तीनों रथों को खीचकर लाकर श्रीमंदिर के सिंहद्वार के सामने उत्तर दिशा की ओर मुंह करके खड़ा कर दिया जाता है। पहण्डी विजय कराकर चतुर्धा देवविग्रहों को रथारुढ़ कराया जाता है।

पुरी गोवर्द्धन पीठ के १४५वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य पुरी स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाभाग अपने परिकरों के साथ गोवर्द्धन मठ से आकर तीनों रथों पर एक-एककर जाकर रथों की सुव्यवस्था का अवलोकन करते हैं। चतुर्धा देवविग्रहों को अपना आत्मनिवेदन प्रस्तुत करते हैं। उसके उपरांत जगन्नाथ जी के प्रथम सेवक पुरी के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेवजी महाराजा अपने राजमहल श्रीनाहर से पालकी पर सवार होकर आते हैं और तीनों रथों पर चंदनमिश्रित जल छिडकर छेरापंहरा का पवित्र दायित्व निभाते हैं।

पुरी गोवर्द्धन पीठ के १४५वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य पुरी स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाभाग अपने परिकरों के साथ गोवर्द्धन मठ से आकर तीनों रथों पर एक-एककर जाकर रथों की सुव्यवस्था का अवलोकन करते हैं। चतुर्धा देवविग्रहों को अपना आत्मनिवेदन प्रस्तुत करते हैं। उसके उपरांत जगन्नाथ जी के प्रथम सेवक पुरी के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेवजी महाराजा अपने राजमहल श्रीनाहर से पालकी पर सवार होकर आते हैं और तीनों रथों पर चंदनमिश्रित जल छिडकर छेरापंहरा का पवित्र दायित्व निभाते हैं।

रथों को घोड़ों के साथ जोत दिया जाता है। तीनों रथों को इसप्रकार सूक्ष्म कोण से अगल-बगल ऐसे खडा किया जाता है कि रथों के रस्सों को खीचने में बडदाण्ड अर्थात् श्रीमंदिर के सिंहद्वार के ठीक सामने की चौडी और बड़ी सड़क के बीचोंबीच ही तीनों रथ चलें। रथ-संचालन के लिए झण्डियों को हिला-हिलाकर निर्देश दिया जाता है।' जय जगन्नाथ'और हरिबोल के जयघोष के साथ रथयात्रा आरंभ होती है। रथ खीचते समय रस्से दो प्रकार के उपयोग में लाये जाते हैं। एक सीधे रस्से तथा दूसरे घुमामवदार रस्से। तीनों रथों में चार-चार रस्से लगे होते हैं जिनको विभिन्न चक्कों के अक्ष से विशेष प्रणाली से लपेटकर और गांठ डालकर बांधा जाता है। गुण्डिचा मंदिर जाने के रास्ते में भगवान जगन्नाथ रास्ते में अपनी मौसी के हाथों से बना पूड़पीठा ग्रहण करते हैं। वे सात दिनों तक गुण्डिचा मंदिर में विश्राम करते हैं। श्रीमंदिर प्रशासन पुरी से प्राप्त जानकारी के अनुसार भगवान जगन्नाथ की बाहुड़ा यात्रा (वापसी श्रीमंदिर यात्रा) २४ जुलाई को है जबकि उनका सोनावेश २५ जुलाई को, अधरपड़ा २६ जुलाई को तथा नीलाद्रि विजय-२७ जुलाई को है। ■

-अशोक पाण्डेय

कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक प्रोफेसर अच्युत सामंत ने अमेरिका में किया ओएसए के ५७वें अधिवेशन का उद्घाटन

मिनियापोलिस/भुवनेश्वर, ४ जुलाईः कीट कीस कीम्स के संस्थापक तथा राज्यसभा और कंधमाल लोकसभा के पूर्व सांसद प्रोफेसर डॉ. अच्युत सामंत ने शनिवार को अमेरिका के मिनियापोलिस में आयोजित ओडिशा सोसाइटी ऑफ अमेरिका (OSA) के ५७वें अधिवेशन का बतौर मुख्य अतिथि उद्घाटन किया। अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि इस अधिवेशन में भाग लेना उनके लंबे समय से संजोए गए सपने के पूरा होने जैसा है। उन्होंने ओडिया समाज की पहचान और संस्कृति को सहेजने के साथ-साथ ओडिशा के विकास में OSA के योगदान की सराहना की। अधिवेशन में उपस्थित एक हजार से अधिक ओडिया परिवारों को संबोधित करते हुए प्रोफेसर डॉ. सामंत ने उन्हें आमंत्रित करने के लिए आयोजकों के प्रति आभार जताया और इस आयोजन को ओडिशा की भाषा, संस्कृति और विरासत का अनूठा उत्सव बताया।

उन्होंने यह भी कहा कि पूरे अधिवेशन में आत्मीयता और अपनापन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 'यह पूरा सम्मेलन ओडिशा की झलक प्रस्तुत करता है। जैसेःसजावट, गीत, नृत्य प्रतियोगिताएँ और यहाँ तक कि बातचीत भी ओड़िया भाषा में हो रही है। हजारों मील दूर रहने के बावजूद अपने सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को जीवित रखना अत्यंत प्रेरणादायक है।' डॉ. सामंत ने अमेरिका में अपनी मेहनत और समर्पण से पहचान बनाने वाले ओडिया समुदाय की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने कभी अपनी मातृभूमि को नहीं भुलाया। उन्होंने कहा, 'आपने अपने परिश्रम से सम्मान और सफलता अर्जित की है। साथ ही जब भी ओडिशा में बाढ़, तूफानी चक्रवात, कोविड-१९ महामारी या कोई अन्य संकट आया, तब आपने हमेशा राज्य के लोगों की सहायता के लिए आगे बढ़कर योगदान दिया है।'

उन्होंने कहा कि आज का ओडिशा पहले जैसा नहीं रहा। यह भारत के सबसे तेज़ी से विकसित हो रहे राज्यों में शामिल है और भुवनेश्वर देश के सबसे जीवंत शहरों में से एक बन चुका है।

प्रोफेसर डॉ. सामंत ने कहा कि कीट और कीस के अमेरिका के अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से मजबूत संबंध हैं तथा लगभग १०० विशेषज्ञ नियमित रूप से कीट और कीस में आकर विद्यार्थियों को व्याख्यान देते हैं और उनसे संवाद करते हैं। इस अवसर पर कीट- कीस -कीम्स ने ओडिशा सोसाइटी ऑफ अमेरिका (OSA) के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), नवाचार, अनुसंधान, संस्कृति और सामुदायिक सहभागिता के क्षेत्रों में दीर्घकालिक सहयोग को मजबूत बनाने के लिए एक रणनीतिक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए।

इस साझेदारी के अंतर्गत छात्रवृत्तियाँ, छात्र एवं संकाय आदान-प्रदान, इंटर्नशिप, संयुक्त अनुसंधान, वैश्विक शिक्षण कार्यक्रम तथा अन्य शैक्षणिक पहलों के माध्यम से ओडिशा और वैश्विक ओडिया समुदाय के बीच मजबूत संबंध स्थापित किए जाएंगे। समझौते के तहत 'समर ओडिशा इमर्शन' कार्यक्रम भी शुरू किया जाएगा, जिसके माध्यम से उत्तर अमेरिका के विद्यार्थी ओडिशा की भाषा, इतिहास, संस्कृति, उद्यमिता, नवाचार, ग्रामीण विकास तथा कीट और कीस के परिसर जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। इससे कीट और कीस के विद्यार्थियों और वैश्विक ओडिया समुदाय के बीच सार्थक संवाद और सहयोग को भी बढ़ावा मिलेगा।

MoU के अंतर्गत स्वास्थ्य संस्थानों, स्टार्टअप इन्क्यूबेटरों, नवाचार प्रयोगशालाओं तथा पेशेवर आदान-प्रदान कार्यक्रमों में सहयोग के साथ-साथ कीट और कीस के शिक्षकों और OSA से जुड़े शिक्षाविदों, चिकित्सकों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, उद्यमियों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों के बीच साझेदारी को भी प्रोत्साहित किया जाएगा। समझौता हस्ताक्षर समारोह और ५७वें OSA अधिवेशन में डॉ. सीताकांत दास (संस्थापक, कलिंगा हॉस्पिटल), श्री सोमनाथ घोष (IFS), शिकागो स्थित भारत के महावाणिज्यदूत, डॉ. ओंकार नाथ मोहंती, OSA के अध्यक्ष नागेश्वर राजनाला, उपाध्यक्ष उत्कल नायक, महासचिव स्निग्धा होता, कोषाध्यक्ष संजीब राउत सहित अमेरिका और कनाडा के अनेक प्रतिष्ठित शिक्षाविद, पेशेवर, वैज्ञानिक तथा ओडिया समुदाय के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती

श्री जगन्नाथपुरी धाम के अन्यतम गोवर्द्धन पीठ के १४५वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती महाभाग पिछले लगभग ३० वर्षों से अपनी दिव्य मेधाशक्ति के बल पर भारतीय सनातनी परम्परा तथा भारतीय संस्कृति के साथ-साथ समस्त सनातनी शाश्वत जीवन मूल्यों की रक्षा का पावन तथा दिव्य संदेश पूरे विश्व को रहे हैं। संदेश है-' एक सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, समृद्ध, सेवापरायण स्वस्थ व्यक्ति तथा समाज की संरचना में विश्व मेधा-रक्षा-वाणिज्य और श्रमशक्ति का उपयोग एवं विनियोग हो। विश्व को धर्मनियंत्रित, पक्षपातविहीन-सर्वहितप्रद शासन सुलभ कराने में सत्पुरुषों की प्रीति तथा प्रवृत्ति परिलक्षित हो। सेवा और सहानुभूति के नाम पर किसी वर्ग के अस्तित्व और आदर्श को विलुप्त करने के समस्त षडयंत्र विश्वस्तर पर मानवोचित शील की सीमा में जघन्य अपराध उद्घोषित हो। विकास के नाम पर पर्यावरण को विकृत और विलुप्त करनेवाले समस्त प्रकल्प निरस्त हों। स्थावर,जंगम प्राणियों के हितों में पाश्चात जगत विनियुक्त हो। पृथ्वी, पानी, प्रकाश, पवन और आकाश सर्व शांतिप्रद और सुखप्रद हों।' ■

-अशोक पाण्डेय

किराएदार लड़की

मुंबई आए हुए अनन्या को लगभग एक महीना हो चुका था। अब वह शहर की भागती-दौड़ती जिंदगी का हिस्सा बनने लगी थी। सुबह ऑफिस, शाम को लोकल ट्रेन और रात को थके हुए कमरे में लौटना उसकी दिनचर्या बन चुकी थी। लेकिन एक चीज थी जो हर दिन उसका ध्यान खींचती थी–सामने वाला फ्लैट। बिल्डिंग में रहने वाले लोग उसके बारे में तरह-तरह की बातें करते थे। 'वहाँ अजीब लोग आते हैं।' 'रात को भी दरवाजा खुला रहता है।' 'कोई ढंग का परिवार नहीं है।' 'सोसायटी वालों ने कई बार शिकायत की है।' धीरे-धीरे अनन्या के मन में भी वही धारणा बनने लगी। एक रविवार की शाम वह बालकनी में बैठी चाय पी रही थी। तभी सामने वाले फ्लैट का दरवाजा खुला। करीब बीस-बाईस साल की एक लड़की बाहर निकली। साधारण सलवार-कुर्ता, चेहरे पर थकान और हाथ में दवाइयों का पैकेट। वह किसी भी आम लड़की जैसी ही लग रही थी।

मुंबई की उस बरसाती शाम में स्टेशन पर हमेशा की तरह भीड़ उमड़ रही थी। हजारों चेहरे थे, हजारों कहानियाँ थीं, और उन्हीं कहानियों के बीच एक कहानी थी—अनन्या की। सिर्फ चौबीस साल की अनन्या अपने कंधे पर बैग और हाथ में एक सूटकेस लिए प्लेटफॉर्म पर खड़ी थी। उसकी आंखों में सपने थे, लेकिन उन सपनों के पीछे छिपा डर कोई नहीं देख पा रहा था।

वह मध्य प्रदेश के एक छोटे शहर से मुंबई नौकरी करने आई थी। घर की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। पिता सरकारी स्कूल में शिक्षक थे और माँ गृहिणी। अनन्या ने मेहनत करके पत्रकारिता की पढ़ाई पूरी की थी और अब एक डिजिटल मीडिया कंपनी में नौकरी मिली थी।

लेकिन नौकरी मिलना आसान था, शहर में रहने की जगह मिलना नहीं।

दो दिन से वह ब्रोकरों के पीछे घूम रही थी।

'अकेली लड़की हो?'

'मम्मी-पापा साथ नहीं रहेंगे?'

'रात को कितने बजे तक बाहर रहोगी?'

'दोस्त आते-जाते तो नहीं रहेंगे?'

हर घर में उससे सवाल पूछे जाते, जैसे वह किराएदार नहीं, कोई अपराधी हो।

एक जगह तो मकान मालिक ने सीधे कह दिया—

'देखिए बेटा, हम अकेली लड़कियों को घर नहीं देते। बाद में कोई लड़का-वड़का आ गया तो सोसायटी वाले हमें परेशान करेंगे।'

अनन्या चुपचाप वहां से निकल आई।

उस शाम उसने माँ को फोन किया।

'मम्मी, लगता है नौकरी छोड़कर वापस आना पड़ेगा।' दूसरी तरफ कुछ क्षण सन्नाटा रहा।

फिर माँ बोलीं—

'बेटी, इतनी जल्दी हार मत मान। सपनों की कीमत हमेशा थोड़ी ज्यादा होती है।'

माँ की बात सुनकर उसकी आँखें नम हो गईं।

अगले दिन एक ब्रोकर उसे एक पुरानी लेकिन साफ-सुथरी बिल्डिंग में ले गया।

मालकिन थीं—शारदा ताई।

करीब साठ वर्ष की, सख्त चेहरे वाली महिला।

उन्होंने अनन्या को ऊपर से नीचे तक देखा।

'क्या काम करती हो?'

'पत्रकार हूँ।'

'शादी हुई?'

'नहीं।'

'रात को देर से आना-जाना होगा?'

'कभी-कभी।'

शारदा ताई कुछ देर सोचती रहीं।

फिर बोलीं—

'घर दे दूँगी... लेकिन एक शर्त पर।'

'क्या?'

'मुझे झूठ बिल्कुल पसंद नहीं है।'

अनन्या मुस्कुरा दी।

उसे लगा जैसे आखिरकार उसे रहने की जगह मिल गई। उसे नहीं पता था कि यह घर सिर्फ रहने की जगह नहीं, बल्कि उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा मोड़ बनने वाला है।

कमरा छोटा था, लेकिन खिड़की से आसमान दिखाई देता था।

पहली रात अनन्या देर तक जागती रही।

नई नौकरी, नया शहर, नए लोग।

सब कुछ नया था।

लेकिन उसी रात उसने एक अजीब बात नोटिस की।

सामने वाले फ्लैट का दरवाजा आधी रात तक खुला रहता था।

कई लोग आते-जाते दिखाई देते थे।

कभी कोई युवक, कभी कोई बुजुर्ग, कभी कोई महिला।

बिल्डिंग के बाकी लोग भी उनके बारे में बातें करते रहते थे।

'कुछ गड़बड़ है उस फ्लैट में।'

'कोई सीधा-सादा परिवार नहीं लगता।'

'पता नहीं कौन लोग हैं।'

अनन्या को भी जिज्ञासा होने लगी।

एक पत्रकार होने के कारण उसकी आदत थी कि वह हर बात की तह तक जाना चाहती थी।

एक दिन उसने शारदा ताई से पूछ लिया—

'ताई, सामने वाले फ्लैट में कौन रहता है?'

ताई का चेहरा अचानक गंभीर हो गया।

उन्होंने सिर्फ इतना कहा—

'उस दरवाजे के बारे में जितना कम जानो, उतना अच्छा है।'

यह सुनकर अनन्या की उत्सुकता और बढ़ गई।

आखिर उस फ्लैट में ऐसा क्या था, जिसके बारे में पूरी बिल्डिंग फुसफुसाकर बातें करती थी?

और क्यों शारदा ताई पहली बार किसी सवाल पर घबरा गई थीं?

अनन्या को नहीं मालूम था कि उस बंद दरवाजे के पीछे छिपा सच सिर्फ एक परिवार का नहीं, बल्कि पूरे समाज के दोहरे चेहरे का आईना था...

मुंबई आए हुए अनन्या को लगभग एक महीना हो चुका था। अब वह शहर की भागती-दौड़ती जिंदगी का हिस्सा बनने लगी थी। सुबह ऑफिस, शाम को लोकल ट्रेन और रात को थके हुए कमरे में लौटना उसकी दिनचर्या बन चुकी थी।

लेकिन एक चीज थी जो हर दिन उसका ध्यान खींचती थी—सामने वाला फ्लैट।

बिल्डिंग में रहने वाले लोग उसके बारे में तरह-तरह की बातें करते थे।

'वहाँ अजीब लोग आते हैं।'

'रात को भी दरवाजा खुला रहता है।'

'कोई ढंग का परिवार नहीं है।'

'सोसायटी वालों ने कई बार शिकायत की है।'

धीरे-धीरे अनन्या के मन में भी वही धारणा बनने लगी।

एक रविवार की शाम वह बालकनी में बैठी चाय पी रही थी। तभी सामने वाले फ्लैट का दरवाजा खुला। करीब बीस-बाईस साल की एक लड़की बाहर निकली। साधारण सलवार-कुर्ता, चेहरे पर थकान और हाथ में दवाइयों का पैकेट।

वह किसी भी आम लड़की जैसी ही लग रही थी।

'यही है वह रहस्यमयी फ्लैट?' अनन्या ने मन ही मन सोचा।

कुछ देर बाद वही लड़की नीचे जाते समय सीढ़ियों पर फिसल गई।

अनन्या दौड़कर उसकी मदद के लिए पहुंची।

'आप ठीक हैं?'

'हाँ... धन्यवाद,' लड़की ने मुस्कुराकर कहा।

उसका नाम सना था।

पहली मुलाकात में ही सना बेहद विनम्र लगी।

बातों-बातों में पता चला कि वह एक नर्स थी और पास के एक अस्पताल में काम करती थी।

'लेकिन लोग तो...' अनन्या बोलते-बोलते रुक गई।

सना हल्का-सा हँसी।

'लोग बहुत कुछ कहते हैं।'

उसकी हँसी में एक अजीब दर्द था।

कुछ दिनों बाद ऑफिस में अनन्या को एक स्टोरी मिली—'महानगरों में अकेली महिलाओं की चुनौतियाँ।' वह इंटरव्यू लेने के लिए अलग-अलग महिलाओं से मिलने लगी।

किसी को मकान नहीं मिलता था।

किसी को नौकरी की जगह पर ताने सुनने पड़ते थे।

किसी को रात में घर लौटने पर चरित्र का प्रमाण देना पड़ता था।

हर कहानी कहीं-न-कहीं सना की कहानी जैसी लग रही थी।

एक दिन अनन्या ने हिम्मत करके सना से पूछा—

'क्या मैं आपसे इंटरव्यू कर सकती हूँ?'

सना कुछ देर चुप रही।

फिर बोली—

'अगर सच लिख सको तो जरूर।'

अगले दिन अनन्या पहली बार उस फ्लैट के अंदर गई।

अंदर का दृश्य देखकर वह हैरान रह गई।

कमरे में पाँच लड़कियाँ रहती थीं।

कोई कॉल सेंटर में काम करती थी।

कोई नर्स थी।

कोई बैंक में नौकरी करती थी।

कोई प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रही थी।

सभी अलग-अलग राज्यों से आई थीं।

सभी अपने परिवारों के सपनों का बोझ लेकर इस शहर में संघर्ष कर रही थीं।

लेकिन समाज उन्हें सिर्फ एक नजर से देखता था— 'अकेली लड़कियाँ।'

बातचीत के दौरान एक लड़की रोने लगी।

उसका नाम प्रिया था।

उसने कहा—

'पिछले महीने मैंने दस मकान देखे। हर जगह एक ही सवाल पूछा गया—अकेली क्यों रहती हो?'

दूसरी लड़की बोली—

'अगर लड़का अकेला रहता है तो उसे जिम्मेदार कहा जाता है। लड़की अकेली रहे तो लोग उसके चरित्र पर चर्चा करने लगते हैं।'

कमरे में अचानक सन्नाटा छा गया।

अनन्या के पास उन सवालों का कोई जवाब नहीं था।

उसी रात बिल्डिंग में हंगामा हो गया।

किसी ने सोसायटी के व्हाट्सएप ग्रुप में लिख दिया—

'सामने वाले फ्लैट में संदिग्ध गतिविधियाँ चल रही हैं।'

कुछ लोग बिना किसी सबूत के आरोप लगाने लगे।

किसी ने कहा पुलिस बुलानी चाहिए।

किसी ने कहा ऐसे लोगों को बिल्डिंग से निकाल देना चाहिए।

अनन्या यह सब पढ़ रही थी।

उसे गुस्सा आ रहा था।

जिन लड़कियों को उसने करीब से देखा था, वे तो रोज़ अपनी जिंदगी से लड़ रही थीं।

फिर भी कटघरे में वही थीं।

अगले दिन अचानक सोसायटी की मीटिंग बुलाई गई।

सभी लोग जमा थे।

सना और उसकी साथी लड़कियाँ भी मौजूद थीं।

आरोप लगाने वाले लोग ऊँची आवाज़ में बोल रहे थे।

लेकिन किसी के पास कोई प्रमाण नहीं था।

तभी अनन्या खड़ी हुई।

'क्या मैं कुछ कह सकती हूँ?'

हॉल में सन्नाटा छा गया।

उसने एक-एक कर उन लड़कियों की कहानी सुनानी शुरू की।

उनकी नौकरी, उनका संघर्ष, उनके परिवार, उनकी जिम्मेदारियाँ।

कई लोगों की निगाहें झुकने लगीं।

लेकिन तभी एक बुजुर्ग सदस्य अचानक खड़े हुए।

उन्होंने एक ऐसा खुलासा किया जिसने पूरी मीटिंग का माहौल बदल दिया।

और उसी क्षण अनन्या को एहसास हुआ कि इस बिल्डिंग में छिपी सबसे बड़ी कहानी अभी सामने आना बाकी थी...

सोसायटी के कम्युनिटी हॉल में सन्नाटा पसरा हुआ था। अभी कुछ देर पहले तक लोग सामने वाले फ्लैट की लड़कियों पर सवाल उठा रहे थे। कोई उन्हें 'संदिग्ध' कह रहा था, तो कोई 'सोसायटी की बदनामी' का कारण।

तभी पीछे बैठे एक बुजुर्ग सदस्य खड़े हुए।

उनका नाम था—विष्णु काका।

करीब पचहत्तर वर्ष के, शांत स्वभाव और पूरी बिल्डिंग में सम्मानित व्यक्ति।

उन्होंने धीमी लेकिन दृढ़ आवाज़ में कहा—

'आज मैं कुछ बताना चाहता हूँ।'

सभी लोग उनकी तरफ देखने लगे।

काका ने सामने बैठी सना और उसकी साथियों की ओर इशारा किया।

'पिछले साल जब मेरी पत्नी को रात दो बजे हार्ट अटैक आया था, तब एम्बुलेंस आने से पहले यही लड़कियाँ हमारे घर दौड़कर आई थीं।'

हॉल में खामोशी छा गई।

'जब मेरी पत्नी अस्पताल में भर्ती थीं, तब कई रिश्तेदार फोन पर चिंता जता रहे थे, लेकिन रोज़ अस्पताल जाकर उनका हाल पूछने वाली यही लड़कियाँ थीं।'

कुछ लोग एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे।

विष्णु काका रुके नहीं।

'आज जिनके चरित्र पर सवाल उठाए जा रहे हैं, उन्होंने बिना किसी स्वार्थ के हमारी मदद की थी।'

उनकी आँखें भर आईं।

'सवाल इन लड़कियों पर नहीं है...

सवाल हमारी सोच पर है।'

पूरा हॉल शांत था।

लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हुई।

मीटिंग के बाद जब लोग बाहर निकलने लगे, तभी सोसायटी के सचिव महेंद्र मेहता ने नाराज होकर कहा—

'भावुक बातें अपनी जगह हैं, लेकिन नियम भी कोई चीज होते हैं।'

उनका इशारा सीधे लड़कियों की ओर था।

अनन्या पहली बार खुलकर बोली—

'कौन-सा नियम?'

'रात में लोगों का आना-जाना।'

'कौन लोग?'

'वही... जो आते हैं।'

'क्या आपने कभी पूछा कि वे कौन हैं?'

मेहता जी चुप हो गए।

अगले कुछ दिनों तक यह बात अनन्या के दिमाग में घूमती रही।

पत्रकार होने के नाते उसकी आदत थी कि किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले वह तथ्य तलाशती थी।

उसने पड़ताल शुरू की।

धीरे-धीरे उसे जो जानकारी मिली,

उसने उसे हैरान कर दिया।

सना जिस अस्पताल में काम करती थी,

वहाँ वह नाइट ड्यूटी करती थी।

उसके साथ रहने वाली प्रिया बैंक में थी और देर तक काम करती थी।

एक लड़की ऑनलाइन पढ़ाई कर रही थी और विद्यार्थियों को ट्यूशन देती थी।

रात को जो लोग आते-जाते दिखते थे, उनमें से अधिकांश मरीजों के परिजन,

सहकर्मी या पढ़ाई करने वाले छात्र थे।

लेकिन अफवाहों ने इन सामान्य गतिविधियों को 'संदिग्ध' बना दिया था।

उधर अनन्या की अपनी जिंदगी भी

आसान नहीं थी।

एक दिन ऑफिस में उसके वरिष्ठ

अधिकारी ने कहा—

'तुम्हें फील्ड रिपोर्टिंग के लिए बाहर जाना होगा।'

उसने खुशी-खुशी हामी भर दी।

लेकिन कुछ सहकर्मियों ने फुसफुसाना शुरू कर दिया।

'अकेली लड़की है, इसलिए ज्यादा

आजादी मिल रही है।'

'बॉस की पसंदीदा होगी।'

अनन्या को पहली बार समझ आया कि

समस्या सिर्फ उस बिल्डिंग की नहीं थी।

समस्या हर जगह थी।

जहाँ भी कोई लड़की अपने दम पर आगे बढ़ने की कोशिश करती, उसके संघर्ष से ज्यादा उसके चरित्र पर चर्चा होती। एक शाम वह बेहद परेशान

होकर कमरे में बैठी थी।

तभी शारदा ताई उसके लिए चाय लेकर आईं।

'क्या हुआ?'

अनन्या ने सब कुछ बता दिया।

कुछ देर तक ताई चुप रहीं।

फिर उन्होंने ऐसी बात कही जो अनन्या कभी नहीं भूल सकी। 'बेटी, समाज को मेहनत करती लड़की से उतनी परेशानी नहीं होती, जितनी स्वतंत्र लड़की से होती है।'

अनन्या ने उनकी तरफ देखा।

शारदा ताई की आँखों में वर्षों का अनुभव झलक रहा था। उस रात पहली बार शारदा ताई ने अपने जीवन का राज खोला।

'जब मैं जवान थी, तब मैंने भी नौकरी करने की जिद की थी।' अनन्या चौंक गई।

'फिर?'

'पूरे मोहल्ले ने मेरे चरित्र पर सवाल उठाए थे।'

'आपने क्या किया?'

ताई मुस्कुराईं।

'रोई भी, लड़ी भी... लेकिन रुकी नहीं।'

फिर उन्होंने खिड़की से बाहर देखते हुए कहा—

'इसलिए मैंने तुम्हें घर दिया था। क्योंकि मैं जानती हूँ कि अकेले शहर में रहने वाली लड़की किन लड़ाइयों से गुजरती है।'

अनन्या की आँखें नम हो गईं।

लेकिन अगले ही सप्ताह एक ऐसी घटना होने वाली थी जो पूरी सोसायटी की असली तस्वीर सामने ला देती।

और इस बार सवाल सामने वाले फ्लैट पर नहीं, बल्कि उसी व्यक्ति पर उठने वाले थे जो सबसे ज्यादा दूसरों पर उंगली उठाता था...

सोसायटी के सचिव महेंद्र मेहता पर।

एक रात बिल्डिंग के सीसीटीवी कैमरे में जो रिकॉर्ड हुआ, उसने सबकी सोच बदलकर रख दी।

महेंद्र मेहता सोसायटी के सचिव थे।

बिल्डिंग में उनका काफी प्रभाव था। किसे फ्लैट मिलेगा, किसे नहीं मिलेगा, किसकी शिकायत सुनी जाएगी और किसकी नहीं—इन सब मामलों में उनकी राय अहम मानी जाती थी।

सबसे ज्यादा आपत्ति भी उन्हें ही थी सामने वाले फ्लैट में रहने वाली लड़कियों से।

वह अक्सर कहते थे—

'हमारी सोसायटी की संस्कृति खराब हो रही है।'

'ऐसे लोगों की वजह से माहौल बिगड़ता है।'

'नियम सबके लिए बराबर होने चाहिए।'

कुछ लोग उनकी बातों से सहमत हो जाते थे, कुछ चुप रहते थे।

लेकिन कोई नहीं जानता था कि सच कुछ और ही है।

एक रात करीब साढ़े ग्यारह बजे अनन्या अपने कमरे में बैठकर एक रिपोर्ट लिख रही थी।

अचानक नीचे पार्किंग में शोर सुनाई दिया।

लोग इकट्ठा होने लगे थे।

अनन्या भी नीचे पहुंच गई।

पता चला कि सोसायटी की एक बुजुर्ग महिला का पर्स चोरी हो गया था।

पर्स में नकदी, एटीएम कार्ड और कुछ जरूरी दस्तावेज थे।

सोसायटी में हड़कंप मच गया।

महेंद्र मेहता तुरंत बोले—

'सीसीटीवी फुटेज देखनी चाहिए।'

सभी लोग उनके साथ सिक्योरिटी रूम में पहुंचे।

फुटेज चलनी शुरू हुई।

पहले कुछ खास दिखाई नहीं दिया।

फिर कैमरे में एक युवक नजर आया।

उसने बुजुर्ग महिला के पीछे-पीछे पार्किंग तक आकर कुछ हरकत की।

लेकिन चेहरा साफ नहीं दिख रहा था।

वीडियो आगे बढ़ी।

अचानक एक और दृश्य सामने आया।

युवक सीधे महेंद्र मेहता के पास गया।

दोनों कुछ देर बात करते दिखाई दिए।

फिर युवक बिल्डिंग से बाहर निकल गया।

कमरे में सन्नाटा छा गया।

सबकी नजरें महेंद्र मेहता पर टिक गईं।

'ये कौन है?' किसी ने पूछा।

महेंद्र जी हकलाने लगे।

'मैं... मैं नहीं जानता।'

लेकिन फुटेज कुछ और ही कहानी कह रही थी।

सुरक्षा गार्ड ने धीरे से कहा—

'साहब, ये तो पिछले कई महीनों से आपके पास आता रहा है।'

महेंद्र जी का चेहरा उतर गया।

जांच आगे बढ़ी।

पुलिस को सूचना दी गई।

दो दिन बाद सच सामने आया।

वह युवक महेंद्र मेहता के दूर के रिश्तेदार का बेटा था।

कुछ समय से बेरोजगार था और कई छोटी-मोटी चोरी की घटनाओं में उसका नाम आ चुका था।

महेंद्र मेहता यह बात जानते थे, लेकिन उन्होंने कभी सोसायटी को नहीं बताया।

अब वही लोग, जो हर समय सामने वाले फ्लैट की लड़कियों पर शक करते थे, चुप थे।

क्योंकि पहली बार आरोप गलत जगह साबित हुए थे।

कुछ दिन बाद सोसायटी की विशेष बैठक बुलाई गई।

इस बार माहौल अलग था।

महेंद्र मेहता सिर झुकाकर बैठे थे।

तभी सना खड़ी हुई।

उसने किसी पर आरोप नहीं लगाया।

अनन्या की रिपोर्ट 'किराए पर घर नहीं, विश्वास चाहिए' प्रकाशित होते ही पूरे देश में चर्चा का विषय बन गई। सोशल मीडिया पर हजारों लोगों ने उसे साझा किया।

टीवी चैनलों ने बहस शुरू कर दी।

महानगरों में रहने वाली अकेली महिलाओं की समस्याएँ पहली बार इतने बड़े स्तर पर सामने आई थीं।

ऑफिस में भी अनन्या की खूब तारीफ हुई।

लेकिन हर सफलता अपने साथ कुछ असुविधाजनक सवाल भी लेकर आती है।

और वही अब अनन्या के सामने खड़े थे।

रिपोर्ट प्रकाशित होने के लगभग दस दिन बाद उसे अपने संपादक का फोन आया।

'अनन्या, कल सुबह मालिकों के साथ मीटिंग है।'

'किस बारे में?'

'कल पता चल जाएगा।'

फोन कट गया।

अगले दिन कॉन्फ्रेंस रूम में कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी बैठे थे।

अनन्या को देखते ही उनमें से एक ने मुस्कुराकर कहा— 'बहुत बढ़िया काम किया है आपने।' अनन्या ने धन्यवाद कहा।

फिर अचानक बातचीत का विषय बदल गया।

एक अधिकारी ने फाइल उसकी ओर बढ़ाई।

'अब आपको एक और स्टोरी करनी है।'

'किस विषय पर?'

'शहर के सबसे बड़े रियल एस्टेट समूह पर।'

अनन्या ने फाइल खोली।

उसमें कंपनी की उपलब्धियों, नए प्रोजेक्ट्स और समाज सेवा से जुड़ी सामग्री थी।

उसे समझते देर नहीं लगी कि यह खबर नहीं, एक प्रायोजित प्रचार सामग्री थी।

'लेकिन इसमें तो कोई रिपोर्टिंग नहीं है,' अनन्या ने कहा।

अधिकारी मुस्कुराया।

'कभी-कभी संस्थान के हित भी देखने पड़ते हैं।'

'मतलब?'

'मतलब यह कि जो कंपनी हमारे सबसे बड़े विज्ञापनदाता हैं, उनके बारे में सकारात्मक लेख प्रकाशित होना चाहिए।'

कमरे में सन्नाटा छा गया।

अनन्या समझ चुकी थी।

जिस बिल्डर की तारीफ करने को कहा जा रहा था, उसी समूह पर किराएदारों के साथ भेदभाव और कई अनियमितताओं के आरोप लग चुके थे।

उसने धीरे से कहा—

'अगर तथ्य इसके विपरीत हुए तो?'

एक वरिष्ठ अधिकारी ने कुर्सी पर पीछे झुकते हुए कहा—

'हर सच छापना जरूरी नहीं होता।'

यह वाक्य अनन्या के दिल में तीर की तरह चुभ गया। पत्रकारिता पढ़ते समय उसने सीखा था कि सच सबसे ऊपर होता है।

लेकिन अब वह देख रही थी कि कई बार सच और व्यवसाय आमने-सामने खड़े हो जाते हैं।

उस रात वह सो नहीं सकी।

एक तरफ उसका करियर था।

नई नौकरी थी।

परिवार की जिम्मेदारियाँ थीं।

पिता की बढ़ती उम्र थी।

छोटे भाई की पढ़ाई थी।

दूसरी तरफ उसका आत्मसम्मान था।

अगली सुबह वह छत पर बैठी थी।

शारदा ताई उसके पास आईं।

'क्या बात है?'

अनन्या ने सब कुछ बता दिया।

कुछ देर तक ताई चुप रहीं।

फिर बोलीं—

'बेटी, जिंदगी में दो तरह के नुकसान होते हैं।'

'कैसे?'

'एक पैसा खोने का नुकसान... और दूसरा खुद को खोने का नुकसान।'

अनन्या चुप रही।

ताई ने आगे कहा—

'पहला नुकसान समय के साथ भर जाता है। दूसरा नहीं।'

उधर सना और बाकी लड़कियाँ भी उसकी चिंता समझ रही थीं।

प्रिया ने कहा—

'दीदी, अगर आपने भी समझौता कर लिया, तो फिर हमारे जैसे लोगों की बात कौन करेगा?'

यह सुनकर अनन्या का सिर झुक गया।

उसे महसूस हुआ कि अब यह सिर्फ उसकी लड़ाई नहीं रही। तीन दिन बाद वह अपने निर्णय के साथ ऑफिस पहुँची।

कॉन्फ्रेंस रूम में फिर वही लोग बैठे थे।

'तो आपने क्या सोचा?' एक अधिकारी ने पूछा।

अनन्या ने फाइल मेज पर रख दी।

'मैं झूठ नहीं लिखूँगी।'

कमरे में अचानक खामोशी छा गई।

'सोच लो,' अधिकारी ने कहा।

'सोच लिया है।'

'तुम्हारा करियर दांव पर लग सकता है।'

'अगर करियर बचाने के लिए सच को मारना पड़े, तो ऐसा करियर मेरे किसी काम का नहीं।'

उस शाम अनन्या ने अपना इस्तीफा दे दिया।

ऑफिस छोड़ते समय उसके कदम भारी थे।

आँखों में आँसू भी थे।

क्योंकि आदर्शों की बातें करना आसान होता है, लेकिन उनके लिए कीमत चुकाना बहुत कठिन।

घर लौटते समय उसे नहीं पता था कि आगे क्या होगा। नई नौकरी मिलेगी या नहीं।

भविष्य कैसा होगा।

लेकिन एक अजीब-सी शांति उसके भीतर थी।

जैसे उसने खुद को बचा लिया हो।

लेकिन किस्मत उसके लिए कुछ और ही लिख चुकी थी। उसकी इस्तीफे की खबर किसी तरह मीडिया जगत में फैल गई।

और कुछ ही दिनों बाद एक ऐसा फोन आने वाला था, जो उसकी जिंदगी की दिशा बदल देता।

वह फोन एक ऐसे व्यक्ति का था, जिसका नाम सुनकर अनन्या खुद हैरान रह गई...

इस्तीफा दिए हुए लगभग पंद्रह दिन हो चुके थे।

हर सुबह अनन्या नौकरी की वेबसाइटें खंगालती, ईमेल भेजती और जवाब का इंतजार करती।

लेकिन जवाब कम और निराशाएँ ज्यादा मिल रही थीं। कुछ संस्थानों ने साफ कह दिया—

'आप प्रतिभाशाली हैं, लेकिन विवादों से जुड़ी पत्रकार को रखने में हमें जोखिम दिखता है।'

कुछ ने कोई जवाब ही नहीं दिया।

धीरे-धीरे उसकी बचत भी खत्म होने लगी।

एक शाम वह कमरे में बैठी हिसाब-किताब कर रही थी। बैंक खाते में सिर्फ सत्रह हजार रुपये बचे थे।

किराया, बिजली, यात्रा और रोजमर्रा के खर्च सामने थे। पहली बार उसे डर लगा।

क्या उसने जल्दबाजी में फैसला कर लिया था?

क्या सच के लिए लड़ना वास्तव में मूर्खता थी?

उसी समय उसका फोन बजा।

स्क्रीन पर एक अनजान नंबर चमक रहा था।

'हैलो?'

दूसरी तरफ से गंभीर आवाज आई—

'क्या मैं पत्रकार अनन्या शर्मा से बात कर रहा हूँ?' 'जी।'

'मैं राघव चौधरी बोल रहा हूँ।'

अनन्या अचानक चुप हो गई।

नाम सुनते ही वह पहचान गई।

राघव चौधरी देश के जाने-माने खोजी पत्रकारों

में गिने जाते थे।

उनकी रिपोर्टों ने कई बड़े घोटालों का खुलासा किया था।

'मैंने आपकी रिपोर्ट पढ़ी,' राघव बोले।

'धन्यवाद सर।'

'धन्यवाद की जरूरत नहीं। मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि जो लड़की नौकरी छोड़ सकती है, क्या वह लड़ाई जारी भी रख सकती है?'

अनन्या कुछ पल चुप रही।

फिर बोली—

'कोशिश कर सकती हूँ।'

फोन के दूसरी तरफ हल्की हँसी सुनाई दी।

'कोशिश नहीं... हिम्मत चाहिए।'

दो दिन बाद अनन्या मुंबई के एक छोटे से ऑफिस में राघव चौधरी से मिली।

ऑफिस किसी बड़े मीडिया हाउस जैसा नहीं था।

न कोई चमक-दमक।

न आलीशान केबिन।

बस कुछ पत्रकार, लैपटॉप और ढेर सारी फाइलें।

राघव ने सीधे मुद्दे पर बात की।

'हम एक स्वतंत्र खोजी पत्रकारिता मंच चला रहे हैं।'

'जी।'

'पैसे कम हैं।'

'ठीक है।'

'सुविधाएँ कम हैं।'

'कोई बात नहीं।'

'लेकिन दबाव के सामने झुकने की अनुमति नहीं है।' अनन्या मुस्कुराई।

'यही तो मैं ढूंढ रही हूँ।'

कुछ ही दिनों में वह नई टीम का हिस्सा बन गई।

अब उसकी रिपोर्टें बड़े विज्ञापनदाताओं के लिए नहीं, बल्कि आम लोगों के लिए लिखी जाती थीं।

इसी दौरान एक नई कहानी उसके सामने आई।

मुंबई के बाहरी इलाके में एक बड़ी पुनर्विकास परियोजना चल रही थी। सैकड़ों परिवारों को नए घर देने का वादा किया गया था।

लेकिन वर्षों बाद भी लोगों को न घर मिला था, न मुआवजा। अनन्या और उसकी टीम ने जांच शुरू की। जैसे-जैसे फाइलें खुलती गईं, कहानी गंभीर होती गई।

करोड़ों रुपये का खेल था।

फर्जी दस्तावेज थे।

राजनीतिक संरक्षण के आरोप थे।

और सबसे चौंकाने वाली बात—

इस पूरे मामले में वही रियल एस्टेट समूह शामिल था, जिसकी झूठी तारीफ लिखने से इंकार करके अनन्या ने नौकरी छोड़ी थी।

अब मामला सिर्फ पत्रकारिता नहीं रह गया था।

यह सच और सत्ता के बीच की लड़ाई थी।

उधर शारदा ताई, सना और बाकी लड़कियाँ उसकी सफलता से खुश थीं।

लेकिन उन्हें अंदाजा नहीं था कि अनन्या जिस रास्ते पर चल पड़ी है, वह कितना खतरनाक है।

एक रात जब वह ऑफिस से घर लौट रही थी, तो उसे महसूस हुआ कि कोई उसका पीछा कर रहा है।

पहले उसने इसे भ्रम समझा।

लेकिन अगले दिन भी वही हुआ।

फिर तीसरे दिन।

अब उसे यकीन हो गया।

कोई उस पर नजर रख रहा था।

राघव चौधरी ने उसकी बात ध्यान से सुनी।

फिर गंभीर होकर बोले—

'लगता है हमारी जांच सही दिशा में जा रही है।'

'मतलब?'

'मतलब जब सच ताकतवर लोगों तक पहुँचने लगता है, तो वे परेशान होने लगते हैं।'

उस रात अनन्या देर तक जागती रही।

खिड़की से बाहर मुंबई की रोशनी चमक रही थी।

उसे पहली बार एहसास हुआ कि पत्रकारिता सिर्फ खबर लिखना नहीं है।

कई बार यह जोखिम उठाने का नाम भी है।

लेकिन असली झटका अभी बाकी था।

जांच के दौरान एक दस्तावेज उसके हाथ लगा।

एक ऐसा दस्तावेज जिसमें सिर्फ बिल्डरों या अधिकारियों के नाम नहीं थे।

उसमें एक ऐसा नाम भी दर्ज था जिसे देखकर अनन्या के पैरों तले जमीन खिसक गई।

वह नाम किसी मंत्री या उद्योगपति का नहीं था...

बल्कि उसकी अपनी बिल्डिंग के सचिव महेंद्र मेहता का था। और यह खुलासा साबित करने वाला था कि महेंद्र मेहता की कहानी अभी खत्म नहीं हुई थी। महेंद्र मेहता का नाम दस्तावेज़ में देखकर अनन्या हैरान रह गई।

जिस व्यक्ति ने पूरी सोसायटी में नैतिकता और नियमों का सबसे बड़ा ठेकेदार बनने की कोशिश की थी, वही पुनर्विकास परियोजना के विवादित सौदों में शामिल था। जांच आगे बढ़ी तो पता चला कि कुछ साल पहले कई गरीब परिवारों को कम मुआवजा देकर उनकी जमीन खाली करवाई गई थी। बदले में कुछ लोगों को भारी कमीशन मिला था। दस्तावेज़ों के अनुसार महेंद्र मेहता भी उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने इस प्रक्रिया को आसान बनाने में मदद की थी।

अब तस्वीर साफ थी।

जो व्यक्ति दिन-रात अकेली लड़कियों के चरित्र पर सवाल उठाता था, वह खुद वर्षों से भ्रष्टाचार के जाल का हिस्सा था।

राघव चौधरी और उनकी टीम ने कई महीनों तक तथ्यों की जांच की। हर दस्तावेज़ को परखा गया। हर बयान की पुष्टि की गई।

आखिर वह दिन आ गया जब पूरी रिपोर्ट

प्रकाशित हुई।

रिपोर्ट का शीर्षक था—

'चेहरे सम्मान के, खेल सौदों का'

रिपोर्ट प्रकाशित होते ही हड़कंप मच गया।

टीवी चैनलों ने खबर उठाई।

प्रशासन को जांच बैठानी पड़ी।

कई अधिकारियों से पूछताछ शुरू हुई।

महेंद्र मेहता का नाम भी सार्वजनिक हो गया।

सोसायटी में माहौल बदल चुका था।

जो लोग कभी सना और उसकी सहेलियों को शक की निगाह से देखते थे, अब उनसे नज़रें चुरा रहे थे।

एक शाम विशेष बैठक बुलाई गई।

इस बार किसी पर आरोप लगाने के लिए नहीं, बल्कि अपनी गलती स्वीकार करने के लिए।

विष्णु काका उठे और बोले—

'हमने जिन लड़कियों को बाहरी समझा, उन्होंने इस सोसायटी का मान रखा। और जिन लोगों पर हमने आँख मूँदकर भरोसा किया, उन्होंने हमारा विश्वास तोड़ा।'

कई लोगों के सिर झुक गए।

तभी शारदा ताई ने सना, प्रिया और बाकी लड़कियों को आगे बुलाया। उनकी आवाज़ भर्रा गई थी। 'बेटियों, हमें माफ़ कर दो।'

सना की आँखों में भी आँसू आ गए।

उसने कहा—

'हमें शिकायत नहीं है। बस इतना याद रखिए कि अकेले रहने वाली हर लड़की गलत नहीं होती, और परिवार के साथ रहने वाला हर व्यक्ति सही नहीं होता।'

पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा।

कुछ महीनों बाद अनन्या की रिपोर्ट को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिला।

लेकिन पुरस्कार लेते समय उसने मंच से जो कहा, वही उसकी सबसे बड़ी जीत थी।

उसने कहा—

'यह सम्मान मेरा नहीं है। यह उन लाखों लड़कियों का है जो अपने घरों से दूर रहकर सपनों के लिए संघर्ष कर रही हैं। जिन्हें किराए का कमरा तो मिल जाता है, लेकिन विश्वास नहीं मिलता।'

हॉल में बैठे लोग खड़े होकर तालियाँ बजाने लगे।

उस रात जब अनन्या अपने कमरे में लौटी तो खिड़की के पास खड़ी होकर शहर को देखने लगी।

वही शहर...

जिसने उसे रुलाया भी था।

डराया भी था।

परखा भी था।

लेकिन उसी शहर ने उसे मजबूत भी बनाया था।

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।

बाहर शारदा ताई, सना, प्रिया और बाकी लड़कियाँ खड़ी थीं।

सबके हाथ में एक छोटा-सा केक था।

उस पर लिखा था—

'हमारी नहीं, इस शहर की बेटी'

अनन्या मुस्कुरा दी।

उसकी आँखें नम थीं।

उसे महसूस हुआ कि वह अब इस शहर में किराए पर नहीं रह रही थी। उसने यहाँ अपना एक परिवार बना लिया था। ■ **-सीमा सिंह**

गजल

अंधेरों में भी हम साया मिला करता है
हमने अंधेरों को ही अपना बना लिया है।

रात होती है तो लोगों को डरते देखा है
हमने तो उसी को अपना हमसफर
बना लिया है।

सुबह होती नहीं जिंदगी के सफर में
इसलिए रात को ही दिन बना लिया।

जब भी मुलाकात हुई जिंदगी से
हमने पाया सुबह हुई नहीं रात बाकी है।

चलते चलते जाने कहां निकल गये
फिर भी मंजिल मिला नही ना ही सुबह।

ये कैसी उलझन है कैसी बेकसी
अब ना गम रहा ना अंधेरों का डर।

ये साहिल के सकून ने डरा दिया
हम तो अंधेरों के मुसाफिर ही सही।

अंधेरों में भी हम साया मिला करता है
हमने अंधेरों को ही अपना बना लिया है।

मधुलिका

न इस वहम पर चलो

हर घडी न तलाशो नक्शे कदम
कुछ दूर तो अपने दम पर चलो

बोझ से ख्वाहिशाँ के थक जाओगे
दिल मैं अरमान कम ले कर चलो

गुजरी बातों का चर्चा क्यों हर घडी
झगडे पुराने सभी दफन कर चलो

ठोकरें न कहीं तेरा हौंसला तोड दें
राहे सफर मैं ऐसा जतन कर चलो

काफिला मँजिल तक पहुँचायेगा
भूल जाओ न इस वहम पर चलो

–महेंद्र कुमार

याद है वो दिन बारिश के...

जब भी निकले- छाते को बंद कर -
लटकाए से घूमा करते थे -
भींगना था पर पानी में ही नही ,
तुम्हारे साथ बीते हुए पलों के
बौछारों में -
सनसनाती हवाएं , सोंधी सी
मिटटी की खुशबू , बताये देती थी ,
मौसम भींगा है -
बहुत देर तक - चुपचाप-जाते हुए
लम्हों को देखा करते थे - कोशिश थी -
पकड़ने की-
वक्त अपने वक्त के हिसाब से -
वक्त दिखाकर चला गया-हम लम्हों -
को ढूँढ़ते रह गए -
रास्ते अब भी वहीं है -
बारिश के दिनों में भींगती हुई -
बस दो हाथ अलग हुए

काजल फुट वेयर

दमदार स्टाइल • बेहतरीन क्वालिटी • वाजिब दाम

स्टाइल आपके हर कदम के साथ

हर मौका के लिए परफेक्ट जोड़ी

पुरुषों के लिए बेस्ट कलेक्शन

स्पोर्ट शूज़ | कैजुअल शूज़ | जॉगिंग शूज़ | रनिंग शूज़

महिलाओं के लिए एलिगेंट कलेक्शन

हील्स | सेंडल | फ्लैट्स | पार्टी वेयर

प्रिमियम क्वालिटी मजबुत, टिकाऊ और आरामदायक

वाजिब दाम बेहतरीन क्वालिटी सबके लिए

आसान एक्सचेंज एक्सचेंज की सुविधा उपलब्ध

100% भरोसा ग्राहक संतुष्टि हमारी पहचान

धमाकेदार ऑफर

विशेष छूट

सीमित समय के लिए

FLAT **20% OFF***

सभी फुट वेयर पर विशेष छूट

*नियम एवं शर्तें लागू

पूरा परिवार एक ही जगह

500+ डिज़ाइन आपके पसंद के

फैशन के साथ कंम्पोर्ट भी

शॉप करें और स्टाइल में रहें

काजल फुट वेयर

मेहरुन चौक, बड़ा बाजार,
आपके शहर - 495001 (छ.ग.)

1234567890

सुबह 10:00 बजे से रात 9:00 बजे तक

हमें फॉलो करें

आइए एक बार सेवा का मौका जरूर दें, हम आपके भरोसे पर खरा उतरेंगे।

रजाई

मास्टर ने देखा, उससे कई गुना अधिक हैसियत वाले लोग डिपो से राशन ले रहे हैं। परंतु वे तो दुकानदार थे, कोई नौकरी-पेशा तो न था। बेचारी सरकार के पास भी तो उनकी स्वयं लिखी हुई बहियों के अतिरिक्त आय मापने का कोई यंत्र अथवा साधन न था। मास्टर झूठ नहीं बोल सकता। उसे हर कोई भद्र पुरुष कहता है। कई व्यंग्य से भी-जैसे दुश्चरित्र या बेईमान होना कोई गुण होता है।...मास्टर कानून का पूरा मानने वाला था। पढ़े-लिखे आदमी की कानून के उल्लंघन की वैसे भी अधिक सजा मिल सकती है।

छुट्टी के समय जब स्कूल-मास्टर स्कूल से बाहर निकलता, तो वह लड़कों की एक बाढ़ में होता। बहुधा उसे अनुभव होता कि लड़कों की बाढ़ में एक बंधन है। आज उसने सोचा यदि लड़कों का प्रवाह सदैव इसी प्रकार न चलता रहे, तो उसका जीवन भी सूखी नदी के रेतीले तटों पर व्यर्थ पड़ी नौका के समान नीरस होकर रह जाय। पुनः उसने सोचा, वास्तव में वह नौका ही है। प्रति वर्ष विद्यार्थियों के समूह पर-समूह परीक्षा-रूपी किनारों से पार उतारता है। उसकी समझ में न आया, कि विद्यार्थी जल-प्रवाह और यात्रियों का संघ दोनों वस्तुएँ कैसे बन सकते हैं? आखिर प्रवाह तो गतिशील ही था, जिसके सहारे उसकी टूटी-फूटी जीवन-नौका तैरकर एक काम किये जा रही थी, चाहे कठिन-से-कठिन गणित के प्रश्न मिनटों में हल कर लेने वाली उसकी बुद्धि उस अदृष्ट प्रवाह को समझ सकने में असमर्थ थी।

मास्टर ने सहज में ही अनेकों परिचितों की सलमों का उत्तर हाथ जोड़ कर दिया। अनेकों की नमस्ते, सत-श्री-अकाल, जय राम जी की झुक-झुककर ब्याज समेत लौटाई : परंतु भीतर से उसे कोई चिंता खाये जा रही थी। बाजार में तो वह यंत्रवत क्रियाएँ करता चला जा रहा था। सहसा एक भागी आ रही गाय उसे बाह्य चेतना में ले आई। वह चकित था कि वह किसी से क्यों नहीं टकराया, अथवा एक ओर वह गहरे नाले में क्यों न जा पड़ा।

मोड़ घूमते समय उसने कबाड़ी की दुकान पर एक रजाई लटकते देखी। मन ही-मन काँपकर उसने इधर-उधर देखा, कहीं उसे किसी ने पुरानी रजाई की ओर ललचाई हुई नजरों से देखते हुए न देख लिया हो।...वह तेजी से मोड़ मुड़ गया।

मास्टर पाँच बच्चों का पिता है। आजकल वह इन्हें पाँच गलतियाँ कहता है। पुराने जर्मन और आजकल के रूस में शायद उसकी पत्नी को अधिक बच्चे पैदा करने का मैडल और पुरस्कार मिलता। वह सोच रहा था कि कैसे परिस्थितियाँ गलतियों को शुद्धियाँ और शुद्धियों को गलतियाँ बना देती हैं। काश कि परिस्थितियाँ हर व्यक्ति के बस में होतीं।...परिस्थितियों की कुंजी केवल धनिकों के हाथ में ही न होती।

पाकिस्तान से शरणार्थी होकर आए तीन संबंधी भी उसके पास रहते थे। कभी उन्होंने भी उसके कठिन समय में उसकी सहायता की थी, जब वे स्वयं सुखी थे। मास्टर का वेतन अब सब कुछ मिलाकर एक सौ साढ़े सत्ताइस रुपये है। बड़ा वेतन है।...केवल वह आटा जो उसे सहायता दिये जाने के समय दो रुपये तेरह

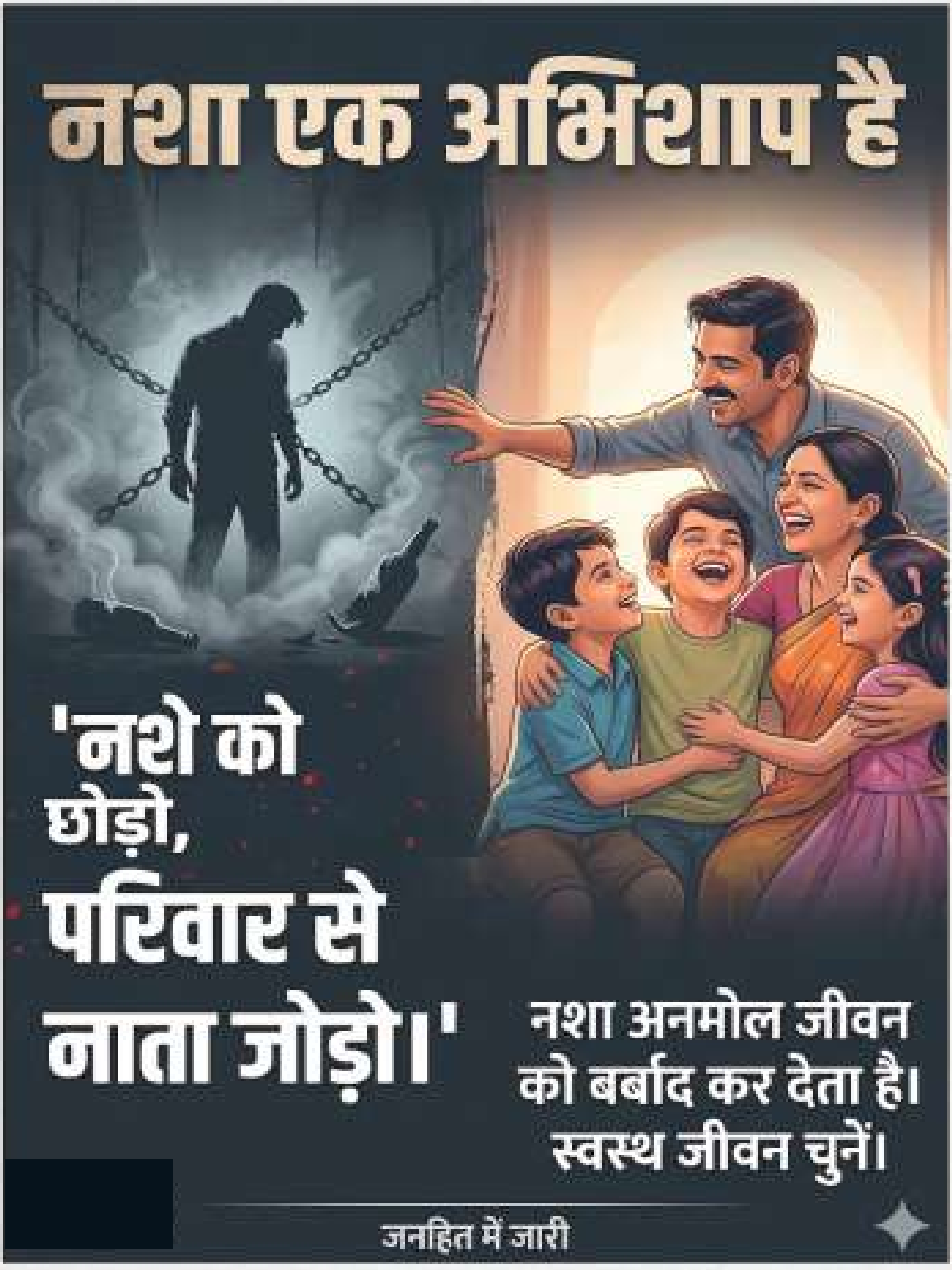
नशा एक अभिशाप है
'नशे को छोड़ो, परिवार से नाता जोड़ो।'
नशा अनमोल जीवन को बर्बाद कर देता है। स्वस्थ जीवन चुनें।
जनहित में जारी

आने मन था, अब तीस रुपये मन बिकता है। परंतु मास्टर का वेतन तो उचित है। एक सौ साढ़े सत्ताइस रुपये, प्रोवीडेंट फंड काटकर। अतएव वह उन्हें कठिन समय में कैसे आश्रय न देता?....कृतघ्न न कहलाने का भी तो मूल्य होता है न।....

राशन-डिपो पर कई लोग ठहरे थे, परंतु मास्टर साहब को डिपो से भी कुछ नसीब न होता था। मास्टर साहब का वेतन एक सौ साढ़े सत्ताइस रुपये है। निर्दिष्ट रकम से एक रुपया अधिक लेने वाला भी डिपो से सस्ता राशन लेने का अधिकारी नहीं और मास्टर साहब तो पूरे ढाई रुपये अधिक ले रहे थे। उसके साथी किराएदारों में एक बैंक क्लर्क भी था। वह एक सौ पन्द्रह वेतन पाता था। उसकी पत्नी और वह-बस यही उसका परिवार था। उसको राशन मिलता था। परंतु मास्टर जी का परिवार भी तो वेतन की तरह बड़ा था। अतएव वह किसी छूट का अधिकारी नहीं था।

मास्टर ने देखा, उससे कई गुना अधिक हैसियत वाले लोग डिपो से राशन ले रहे हैं। परंतु वे तो दुकानदार थे, कोई नौकरी-पेशा तो न था। बेचारी सरकार के पास भी तो उनकी स्वयं लिखी हुई बहियों के अतिरिक्त आय मापने का कोई यंत्र अथवा साधन न था। मास्टर झूठ नहीं बोल सकता। उसे हर कोई भद्र पुरुष कहता है। कई व्यंग्य से भी-जैसे दुश्चरित्र या बेईमान होना कोई गुण होता है।...मास्टर कानून का पूरा मानने वाला था। पढ़े-लिखे आदमी की कानून के उल्लंघन की वैसे भी अधिक सजा मिल सकती है। मास्टर तो देशभक्त भी है। अपने या अपने आदमियों के कारण वह देश और जाति की हानि सहन नहीं कर सकता।

मास्टर निकल गया-सब कुछ देखता। उसे मार्ग में पुनः रजाई का ध्यान आया। नई रजाई के लिए कम से कम बीस रुपये की आवश्यकता है। हिसाब लगाया-ढाई मन आटा, तीस दूना साठ और पंद्रह-पचहत्तर रुपये, घी बनस्पति बारह रुपये, ईंधन पन्द्रह रुपये और बड़ी रकम उसे बाद में याद आई-किराया तीस रुपये, दूध-चाय के लिए तेरह रुपये और आगे इसी प्रकार। कुल जोड़ एक सौ छियासी रुपये। बजट में प्रति मास लगभग साठ रुपये का घाटा। उसे बजट को चैलेंज करना चाहिए। परंतु उसको गृह-विज्ञान के अनुसार नई पुस्तकों एवं पत्रिकाओं पर व्यय की जा रही सात रुपए की राशि के सिवा कुछ अनावश्यक न मिला। वह मन-ही-मन इस खर्च पर लकीर खींचने लगा था, परंतु उसे अनुभव हुआ कि वह खर्च उसकी खुराक पर हो रहे खर्च से भी अधिक आवश्यक है।

आखिर उसने सोचा-'मैं मुख्याध्यापक की आज्ञा से एक ट्यूशन रखूँगा। तीस की आय बढ़ जाएगी। तीस का व्यय जैसे-तैसे कम करूँगा। परंतु रजाई के लिए बीस रुपए कहाँ से आएँगे?...रजाई सर्दी के लिए बहुत आवश्यक वस्तु है।...अतिथियों को अलग-अलग चारपाई और बिस्तर देना भी अत्यावश्यक था। तीन लड़कियाँ इकट्ठी सोती थीं। एक ही चारपाई और एक ही रजाई में सोने से कद नाटे हो जायेंगे। लड़कियों के शरीर नाटे हो जाने से उन्हें आज के संसार में पहले ही कोई नहीं पूछता। कल उसने अपनी घरवाली को उनमें से बड़ी को अलग सुलाने के लिए कहा था।

'थोड़ी चारपाइयाँ हैं कैलाश? फिर इन्हें अलग-अलग क्यों नहीं लेटने को कहती तुम?'

कैलाश ने विनम्र उत्तर दिया था-'चारपाई तो एक और है परंतु और रजाई नहीं है। अभी बिल्लू भी मेरे साथ ही सोता है।'

'बीस रुपए की रजाई' ! पहले ही बजट में घाटा है। तीस की ट्यूशन, तीस खर्च में से कम करने ही पड़ेंगे। परंतु रजाई के लिए बीस और कहाँ से आएंगे? उसे स्मरण हुआ कि उसने परसों ही अपनी पुस्तकें और रद्दी बेचकर सात रुपए बारह आने पाए थे। परंतु रजाई के लिए बीस रुपये!...ओह !...कबाड़ी से पुरानी रजाई! हाँ ठीक है, कल पूछा जाएगा।

कई दिन वह प्रातः समय की ताक में रहा। दिन में वह कबाड़ी से पुनः पूछने का साहस न कर सका। एक दिन रात के समय गया बाजार बंद था। बेचारा 'नेशनबिल्डर' कौम का उस्ताद निराश लौट गया। बनाने वाला स्वयं बनाए जाने वालों के हाथों से क्या बन रहा था।...

उसने पुनः विचार किया-आखिर प्रातः ही दाँव लगाकर काम बनेगा। निगोड़ी रजाई भी थी जिसे कोई खरीदता ही न था। किसी के सामने खरीदकर अपमान होता था-यदि उसका नहीं, तो अध्यापकों की श्रेणी का। परंतु राष्ट्र का बेचारा अध्यापक क्या कर रहा था? वह किसी से क्या छिपा रहा था? उसने पुनः विचार किया-वह 'इज्जत' को आँच न आने देगा।

रविवार का दिन था-छुट्टी का दिन। वह अपने बड़े लड़के को साथ लेकर उस दुकान पर गया। रजाई पूर्ववत वहीं पड़ी थी। वह एक ही छलाँग में दुकान में चला गया। सात रुपये में सौदा पट गया। रुपये देकर वह शीघ्र वापस लौट आया। दस कदम ही चला होगा कि किसी ने आवाज दी-'मुर्दों से उतारी हुई रजाई खरीद ली है।'

उस्ताद घूमकर देखे बिना न रह सका। कहने वाला एक दरजी था। पास ही मास्टर का एक शिष्य था, जिसने आज से उसके घर पढ़ने आना था। उसने भी मास्टर के पास आकर कहा-'यह तो मुर्दों से उतारी गई रजाइयाँ बेचता है, मास्टर जी?'

मास्टर सच का सा झूठ बोला-'हाँ बेटा, परंतु किसी आवश्यकता वाले की आवश्यकता तो पूरी हो जायेगी।'

कहने का ढंग कुछ ऐसा था कि जिस से संशय हो सकता था कि उसने रजाई किसी अन्य व्यक्ति के लिए खरीदी है। आखिर यदि यह झूठ भी था तो धर्मपुत्र युधिष्ठिर के बोले झूठ से बुरा न था। दिन-भर रजाई धूप में पड़ी रही। शाम हो जाने पर रजाई कमरे में लाई गई। दीपक चलने के बाद वही लड़का पढ़ने के लिए आ गया। उसने रजाई पड़ी हुई देखकर नमस्ते कहने के बाद पूछा-'क्यों मास्टर जी, यह वही रजाई है न?'

मास्टर में दूसरी बार झूठ बोलने की सामर्थ्य न थी। उसने कहा-'वही है बेटा, परंतु आज मैं तुझे पढ़ा न सकूँगा, मेरी तबीयत खराब है, तू कल आ जाना।'

सचमुच उसकी तबीयत खराब थी, लड़का वापस लौट गया।

मास्टर ने रसोई में काम कर रही घरवाली से कहा-'कैलाश, नई रजाई मुझे दे दे। मेरे वाली पहली रजाई लड़कियों को दे देना। हाँ, सच-गोमती को अलग सुलाना।'

'क्यों आप खाना न खाएँगे?' -कैलाश ने रजाई पैरों पर ओढ़ते हुए कहा।

'नहीं' -मास्टर ने कहा और मुर्दों से उतारी रजाई अपने पैरों पर खींच ली। कितने समय तक वह सोचता रहा कि कौन मुर्दों से रजाई उतार लेता है और कौन जीवितों से।...वह अशांत था।... ■

-सुजान सिंह

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-110

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

प्रश्नः१ प्रथम विश्व युद्ध किस वर्ष शुरू हुआ था?

प्रश्नः२ विश्व युद्ध घ्घ के दौरान जर्मनी का नेतृत्व किसने किया था?

प्रश्नः३ १८५८ में कौन सा अधिनियम ब्रिटिश क्राउन को ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार सौंपता है?

प्रश्नः४ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (घ्ण्) की स्थापना किस वर्ष हुई थी?

प्रश्नः५ १९३० में दांडी मार्च का नेतृत्व किसने किया था?

प्रश्नः६ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष कौन थीं?

प्रश्नः७ 'इंडिया विंस फ्रीडम' किताब किसने लिखी थी?

प्रश्नः८ किस स्वतंत्रता सेनानी को 'भारत का लौह पुरुष' कहा जाता है?

प्रश्नः९ दिल्ली में लाल किला बनाने वाले प्रसिद्ध सम्राट कौन थे?

प्रश्नः१० भारत में पहला सुलतान बनने वाले शासक कौन थे?

प्रश्नः११ हल्दीघाटी के युद्ध में वीरता के लिए किस राजपूत शासक को याद किया जाता है?

प्रश्नः१२ कौन सा प्रसिद्ध यात्री मोहम्मद बिन तुगलक के दरबार में गया था?

प्रश्नः१३ मुगल सम्राट शाहजहां का असली नाम क्या था?

प्रश्नः १४ बहलुल खान लोदी द्वारा स्थापित किस वंश का था?

प्रश्नः१५ महात्मा गांधी ने अपने सत्याग्रह सिद्धांतों का पहला प्रयोग कहां किया था?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः .....

पूरा पताः .....

.....

.....

फोन नं.: .....

ई-मेलः .....

आज का दौर डिजिटल युग का दौर है। स्मार्टफोन ने जीवन को आसान, तेज और सुविधाजनक बना दिया है। पढ़ाई से लेकर मनोरंजन, खरीदारी से लेकर बैंकिंग तक, लगभग हर काम मोबाइल के माध्यम से होने लगा है। लेकिन जिस तकनीक को सुविधा का माध्यम माना गया था, वही अब बच्चों के लिए एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है। स्मार्टफोन की बढ़ती लत ने बचपन की सहजता, रचनात्मकता और सामाजिकता को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। कुछ वर्ष पहले तक बच्चे मैदानों में खेलते, दोस्तों के साथ समय बिताते और किताबों से ज्ञान प्राप्त करते थे। आज वही बच्चे घंटों मोबाइल स्क्रीन पर वीडियो देखने, गेम खेलने और सोशल मीडिया पर समय बिताने में व्यस्त दिखाई देते हैं। कई घरों में माता-पिता बच्चों को शांत रखने या व्यस्त रखने के लिए कम उम्र में ही स्मार्टफोन थमा देते हैं। शुरुआत में यह एक आसान समाधान लगता है, लेकिन धीरे-धीरे यही आदत लत का रूप ले लेती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि अत्यधिक स्क्रीन टाइम बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। लंबे समय तक मोबाइल देखने से आंखों की समस्या, सिरदर्द, नींद में कमी और शारीरिक गतिविधियों में गिरावट देखी जा रही है। इसके अलावा बच्चों का ध्यान केंद्रित करने की क्षमता भी प्रभावित होती है। कई अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि लगातार डिजिटल कंटेंट देखने वाले बच्चों में धैर्य और एकाग्रता का स्तर कम हो सकता है। स्मार्टफोन की लत का सबसे बड़ा असर बच्चों के सामाजिक व्यवहार पर पड़ रहा है। पहले बच्चे परिवार के सदस्यों और मित्रों के साथ बातचीत करके रिश्ते बनाना सीखते थे, लेकिन अब उनका अधिकांश समय वर्चुअल दुनिया में बीत रहा है। परिणामस्वरूप संवाद कौशल कमजोर हो रहे हैं और अकेलेपन की भावना बढ़ रही है। कई बच्चे वास्तविक जीवन की चुनौतियों की तुलना में डिजिटल दुनिया को अधिक आकर्षक मानने लगे हैं। ऑनलाइन गेम्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी इस समस्या को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। गेम्स को इस तरह डिजाइन किया जाता है कि खिलाड़ी बार-बार लौटकर आए। लगातार मिलने वाले रिवार्ड, लेवल और प्रतियोगिता बच्चों को लंबे समय तक स्क्रीन से जोड़े रखते हैं। वहीं सोशल मीडिया पर लाइक, कमेंट और फॉलोअर्स की दौड़ बच्चों के मन पर अनावश्यक दबाव डाल सकती है। कई बार वे अपनी तुलना दूसरों से करने लगते हैं, जिससे आत्मविश्वास पर भी असर पड़ता है।

ऑनलाइन गेम्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी इस समस्या को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। गेम्स को इस तरह डिजाइन किया जाता है कि खिलाड़ी बार-बार लौटकर आए। लगातार मिलने वाले रिवार्ड, लेवल और प्रतियोगिता बच्चों को लंबे समय तक स्क्रीन से जोड़े रखते हैं। वहीं सोशल मीडिया पर लाइक, कमेंट और फॉलोअर्स की दौड़ बच्चों के मन पर अनावश्यक दबाव डाल सकती है। कई बार वे अपनी तुलना दूसरों से करने लगते हैं, जिससे आत्मविश्वास पर भी असर पड़ता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी स्मार्टफोन का प्रभाव दोधारी तलवार की तरह है। एक ओर यह ज्ञान और जानकारी का बड़ा स्रोत है, वहीं दूसरी ओर पढ़ाई के दौरान आने वाले नोटिफिकेशन, गेम्स और मनोरंजन संबंधी सामग्री बच्चों का ध्यान भटका देती है। ऑनलाइन कक्षाओं के बाद भी कई बच्चे घंटों मोबाइल पर मनोरंजन सामग्री देखते रहते हैं, जिससे पढ़ाई और मनोरंजन के बीच संतुलन बिगड़ जाता है।

इस समस्या के लिए केवल बच्चों को दोष देना उचित नहीं होगा। माता-पिता और समाज की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि घर के बड़े स्वयं हर समय मोबाइल में व्यस्त रहेंगे तो बच्चे भी उसी व्यवहार को अपनाएंगे। बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम की स्पष्ट सीमा तय करना, उन्हें खेलकूद, पुस्तक पढ़ने और रचनात्मक गतिविधियों के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। परिवार के साथ बिताया गया समय और खुला संवाद भी इस समस्या को कम करने में मदद कर सकता है। स्कूलों को भी डिजिटल साक्षरता पर ध्यान देना होगा। बच्चों को केवल तकनीक का उपयोग करना ही नहीं, बल्कि उसका संतुलित और जिम्मेदार उपयोग करना भी सिखाना होगा। उन्हें यह समझाना जरूरी है कि स्मार्टफोन एक उपयोगी उपकरण है, जीवन का केंद्र नहीं। होगी, लेकिन वास्तविक जीवन के अनुभवों और मानवीय संबंधों से दूर होती जाएगी। इसलिए जरूरत इस बात की है कि बच्चों को तकनीक का सही उपयोग सिखाया जाए, ताकि स्मार्टफोन उनका सहायक बने, स्वामी नहीं। ■

रिश्तों की 'शहनाई' में पिघली सियासत की 'बर्फ'

'सौहार्द या सियासत? एक ही मंच पर जुटे देश के धुर विरोधी नेता'

पर्दे के सामने तीखे तीर, पर्दे के पीछे अटूट यारी; राहुल गांधी, मोहन भागवत, देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार की गर्मजोशी देख यूज़र्स बोले- 'सड़कों पर सिर्फ आम कार्यकर्ता ही क्यों लड़े?'

मुंबई (विशेष ब्यूरो रिपोर्ट)

राजनीति में कोई स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता–यह पुरानी कहावत हाल ही में एक बार फिर सच साबित हुई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) की सांसद सुप्रिया सुले की बेटी रेवती सुले का विवाह हाल ही में नागपुर के व्यवसायी सारंग लखानी के साथ बेहद भव्य तरीके से संपन्न हुआ। मुंबई के जियो कन्वेंशन सेंटर में आयोजित इस हाई-प्रोफाइल रिसेप्शन में जो नजारा देखने को मिला, उसने देश के राजनीतिक गलियारों के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी एक बड़ी बहस को जन्म दे दिया है। इस शाही आयोजन में देश और महाराष्ट्र की सियासत के वे तमाम चेहरे एक साथ बेहद दोस्ताना अंदाज में ठहाके लगाते दिखे, जो टीवी डिबेट्स, चुनावी रैलियों और संसद में एक-दूसरे के खिलाफ बेहद तीखे हमले करते हैं। रिसेप्शन के मंच पर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, सपा प्रमुख अखिलेश यादव और केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल जैसी दिग्गज हस्तियां एक ही छत के नीचे नजर आईं।

इतना ही नहीं, महाराष्ट्र की राजनीति में आए सबसे बड़े भूचाल यानी 'पवार बनाम पवार' की कड़वाहट भी यहां गायब दिखी। अजित पवार गुट और शरद पवार गुट के नेता तथा परिवार के सदस्य एक-दूसरे के साथ बेहद सहज होकर तस्वीरें खिंचवाते दिखे। इस मेल-मिलाप की तस्वीरें और वीडियो जैसे ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर वायरल हुए, इंटरनेट यूजर्स और राजनीतिक कार्यकर्ताओं का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया।

ये नेता मंच से एक-दूसरे पर भ्रष्टाचार, व्यक्तिगत आक्षेप और लोकतंत्र की हत्या जैसे गंभीर आरोप लगाते हैं, तो व्यक्तिगत पारिवारिक आयोजनों में वह वैचारिक शत्रुता अचानक कहां गायब हो जाती है? जमीनी कार्यकर्ताओं ने चिंता जताई कि वे पार्टी की विचारधारा के लिए चौबीसों घंटे सड़कों पर लाठियां खाते हैं, केस झेलते हैं और आपसी रिश्ते खराब करते हैं, जबकि शीर्ष स्तर पर 'पॉलिटिकल क्लास' के लिए ये सब महज एक खेल है।
-सोशल मीडिया यूज़र्स का फूटा गुस्सा

ट्रोलिंग के मुख्य कारणः

कार्यकर्ताओं की बलिः नेताओं के चक्कर में आम कार्यकर्ता आपस में दुश्मनी मोल ले लेते हैं, जबकि नेता पर्दे के पीछे एक हैं।

वैचारिक अंतर्विरोधः एक तरफ 'संविधान बचाओ' और 'हिंदुत्व' की जंग, दूसरी तरफ राहुल गांधी और मोहन भागवत का एक साथ मंच साझा करना।

समधी कनेक्शनः सुप्रिया सुले के समधी अरुण लखानी को बीजेपी द्वारा टिकट दिए जाने की चर्चाओं ने भी कार्यकर्ताओं को हैरान किया।

सियासत बनाम शिष्टाचारः

राजनीति के जानकारों का एक धड़ा इसे महाराष्ट्र की 'यशवंतराव चव्हाण परंपरा' और लोकतांत्रिक परिपक्वता का हिस्सा मान रहा है, जहां मतभेद व्यक्तिगत नहीं होते। हालांकि, डिजिटल युग की जागरूक जनता अब इस 'एलीट क्लास सिंडिकेट' को स्वीकार करने के मूड में नहीं दिख रही है। यही वजह है कि ट्विटर (ँ) और इंस्टाग्राम पर मीम्स के जरिए राजनेताओं के इस 'दोहरे चरित्र' पर जमकर तंज कसे जा रहे हैं।

इतिहास के पन्नों से: अन्य बड़े उदाहरण

यह पहली बार नहीं है जब ऐसा राजनीतिक विरोधाभास देखा गया हो, भारतीय राजनीति में ऐसे कई उदाहरण भरे पड़े हैं जहां चुनाव मैदान और संसद में एक-दूसरे के खिलाफ बेहद तीखे, व्यक्तिगत और कटु हमले करने वाले राजनेता पारिवारिक या सामाजिक आयोजनों में पुराने गिले-शिकवे भूलकर गले मिलते नजर आए हैं। जब-जब ऐसी तस्वीरें सामने आई हैं, जनता और कार्यकर्ताओं ने उन्हें सोशल मीडिया पर जमकर आड़े हाथों लिया है।

*** नितिन गडकरी की बेटी की शादी (२०१६)**

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी की बेटी की नागपुर में हुई शादी भी एक बड़ा 'पॉलिटिकल रीयूनियन' थी। केंद्रीय मंत्री Nitin Gadkari की बेटी Ketki Gadkari का विवाह ४ दिसंबर २०१६ को नागपुर में हुआ था। उनकी शादी Aditya Kaskhedikar से हुई, जो उस समय अमेरिका में फेसबुक (Facebook) से जुड़े हुए थे। यह विवाह नागपुर के Empress Palace Hall में आयोजित किया गया था और इसमें देश के कई बड़े राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक नेताओं ने भाग लिया। अतिथियों में Rajnath Singh, Amit Shah, Mohan Bhagwat, Devendra Fadnavis, Uddhav Thackeray, Raj Thackeray, Baba Ramdev और कई केंद्रीय मंत्री शामिल थे। उस समय नोटबंदी (Demonetisation) का दौर चल रहा था, इसलिए यह शादी काफी चर्चा में रही। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार बड़ी संख्या में वीआईपी मेहमानों के आने के लिए चार्टर्ड और विशेष विमानों का उपयोग किया गया था। शादी को लेकर एक और विवाद तब सामने आया जब बाद के वर्षों में स्वीडिश कंपनी Scania से जुड़ी रिपोर्टों में दावा किया गया कि एक लग्जरी बस का उपयोग इस विवाह समारोह में किया गया था। इस मामले को लेकर राजनीतिक बहस और मीडिया में काफी चर्चा हुई, हालांकि यह विषय विवाह से अलग एक विवाद के रूप में सामने आया। २०१६ में केतकी गडकरी की शादी नागपुर की उस वर्ष की सबसे चर्चित वीआईपी शादियों में से एक मानी गई, जिसमें राष्ट्रीय राजनीति और सार्वजनिक जीवन की अनेक प्रमुख हस्तियां उपस्थित थीं।

इस शादी में तत्कालीन गृह मंत्री राजनाथ

सिंह और बीजेपी के अन्य बड़े नेताओं के साथ-साथ कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता, एनसीपी के शरद पवार और शिवसेना के उद्धव ठाकरे (उस समय गठबंधन में तनाव के बावजूद) शामिल हुए थे। सोशल मीडिया पर यूज़र्स ने इस शादी के वीआईपी चार्टर्ड प्लेन्स और नेताओं के एक साथ जुटने पर तंज कसते हुए लिखा था कि 'नेताओं के बीच कोई दुश्मनी नहीं होती, वे सिर्फ वोट बैंक के लिए जनता को बांटते हैं।'

*** मुलायम सिंह यादव के पोते के तिलक में पीएम मोदी की शिरकत (२०१५), लालू प्रसाद यादव की बेटी की शादी**

यह भारतीय राजनीति के सबसे बड़े विरोधाभासों में से एक माना जाता है। साल २०१४ के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और समाजवादी पार्टी (सपा) के बीच बेहद तीखी जुबानी जंग हुई थी। साल २०१५ में मुलायम सिंह यादव के पोते (तेज प्रताप सिंह यादव) के तिलक समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विशेष रूप से सैफई पहुंचे थे। मंच पर पीएम मोदी, मुलायम सिंह यादव और लालू प्रसाद यादव एक साथ हंसते-मुस्कुराते और हाथ मिलाते दिखे थे। चुनावी रैलियों में एक-दूसरे पर तीखे हमले करने वाले नेताओं की इस आत्मीयता को देखकर जमीनी कार्यकर्ताओं में भारी निराशा और सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली थी। बिहार की राजनीति में बीजेपी और आरजेडी को एक-दूसरे का धुर विरोधी माना जाता है। दोनों दलों के नेता एक-दूसरे पर जेल भेजने और भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाते रहे हैं। लालू प्रसाद यादव की बेटी की शादी के रिसेप्शन में बीजेपी के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह पहुंचे थे। वहां लालू यादव ने बेहद गर्मजोशी से उनके गले में हाथ डालकर मीडिया को पोज दिया था। बिहार के स्थानीय कार्यकर्ताओं के लिए यह देखना बेहद अजीब था, क्योंकि वे जिला स्तर पर आरजेडी कार्यकर्ताओं के साथ हिंसक राजनीतिक संघर्षों में उलझे रहते थे। यह विवाह केवल पारिवारिक समारोह नहीं बल्कि एक बड़े राजनीतिक शक्ति-प्रदर्शन के रूप में भी देखा गया था, क्योंकि इसमें सत्ता और विपक्ष दोनों के शीर्ष नेता एक ही मंच पर दिखाई दिए थे।

सिद्धू मूसेवाला के मर्डर के बाद पंजाब की राजनीति (अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग और राघव चड्ढा)

पंजाब विधानसभा चुनाव २०२२ के दौरान कांग्रेस और आम आदमी पार्टी (AAP) ने एक-दूसरे के खिलाफ बेहद आक्रामक प्रचार किया था। चुनाव के कुछ महीनों बाद जब आम आदमी पार्टी के नेता राघव चड्ढा की परिणीति चोपड़ा के साथ शादी और दिल्ली में रिसेप्शन हुआ, तो उसमें पंजाब कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग और अन्य विपक्षी नेता शामिल हुए। सिद्धू मूसेवाला की २९ मई २०२२ को हुई हत्या ने पंजाब की राजनीति को झकझोर दिया था। उस समय पंजाब में हाल ही में बनी Aam Aadmi Party सरकार सत्ता में थी और हत्या से एक दिन पहले ही उनकी सुरक्षा घटाए जाने को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया था। उस समय पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष Amrinder Singh Raja Warring ने सिद्धू मूसेवाला की हत्या को 'राजनीतिक हत्या' बताते हुए राज्य सरकार को सीधे जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि यह केवल एक आपराधिक घटना नहीं बल्कि गंभीर सुरक्षा विफलता का मामला है।

वड़िंग ने मुख्यमंत्री भगवंत मान से नैतिक जिम्मेदारी लेने की मांग की और कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाए। कांग्रेस ने लगातार यह मुद्दा उठाया कि सुरक्षा घटाने की सूची सार्वजनिक किए जाने के बाद ही मूसेवाला की हत्या हुई। बाद के वर्षों में भी वड़िंग पंजाब में बढ़ते गैंगस्टर नेटवर्क और अपराध को मूसेवाला हत्याकांड से जोड़कर इस सरकार पर हमला करते रहे।

हत्या के बाद विपक्षी दलों, विशेषकर भाजपा और कांग्रेस के कुछ नेताओं ने Raghav Chadha का नाम भी राजनीतिक बहस में घसीटा। आरोप लगाए गए कि पंजाब सरकार के महत्वपूर्ण फैसलों पर दिल्ली नेतृत्व और राघव चड्ढा का प्रभाव था। हालांकि मूसेवाला हत्या मामले में राघव चड्ढा के खिलाफ किसी जांच एजेंसी द्वारा प्रत्यक्ष आपराधिक जिम्मेदारी तय नहीं की गई। राजनीतिक स्तर पर विपक्ष ने यह नैरेटिव बनाने की कोशिश की कि पंजाब की सरकार वास्तव में दिल्ली से नियंत्रित हो रही है और सुरक्षा संबंधी चूक के लिए केवल राज्य सरकार ही नहीं बल्कि AAP का शीर्ष नेतृत्व भी जवाबदेह है। मूसेवाला कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ चुके थे, इसलिए कांग्रेस ने इस मुद्दे को भावनात्मक और राजनीतिक दोनों स्तरों पर उठाया। पंजाब में गैंगस्टरवाद, कानून-व्यवस्था और वीआईपी सुरक्षा का मुद्दा राष्ट्रीय बहस का विषय बन गया। मूसेवाला के पिता बलकौर सिंह बाद में भी न्याय की मांग को लेकर सक्रिय रहे और कई मौकों पर राज्य सरकार की आलोचना करते रहे, जिससे यह मुद्दा लंबे समय तक राजनीतिक रूप से जीवित रहा।

जब राजनीति के 'धुर विरोधी' एक मंच पर आए, तो भड़क उठे सोशल मीडिया यूज़र्स!

ई. ए. एस. शर्मा (पूर्व IAS अधिकारी)

'जब देश आर्थिक कठिनाइयों या सादगी की अपील के दौर से गुजर रहा हो, तब मंत्रियों और बड़े नेताओं के परिवारों में होने वाली अत्यधिक भव्य शादियाँ जनता के बीच गलत संदेश देती हैं। सार्वजनिक जीवन में रहने वालों को अपने निजी आयोजनों में भी संयम और उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।'

शेखर गुप्ता (वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक)

'भारतीय राजनीति में सार्वजनिक छवि बेहद महत्वपूर्ण होती है। इसलिए प्रभावशाली नेता अक्सर अपनी जीवनशैली और सार्वजनिक आयोजनों को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरतते हैं, क्योंकि जनता हर दृश्य से एक राजनीतिक संदेश निकालती है।'

विवेक अग्निहोत्री (फिल्म निर्देशक)

'आजकल कई भव्य शादियाँ रिश्तों से ज्यादा सोशल मीडिया, फोटोशूट और सार्वजनिक प्रदर्शन का माध्यम बनती जा रही हैं। असली समारोह से अधिक चर्चा उसकी डिजिटल प्रस्तुति की होती है।'

Reddit यूज़र (r/india)

'एक बड़े राजनीतिक परिवार की शादी में लगभग सभी दलों के नेताओं को एक साथ देखकर एहसास हुआ कि निजी रिश्ते और राजनीतिक विरोध हमेशा एक-दूसरे के विरोधी नहीं होते। कैमरों के सामने दिखाई देने वाली राजनीति और निजी संबंधों की दुनिया अलग हो सकती है।'

एक वेडिंग फ़ोटोग्राफ़र (सोशल मीडिया अनुभव साझा करते हुए)

'वीआईपी शादियों में कई बार लगता है कि मेहमानों से ज्यादा कैमरों और सोशल मीडिया कंटेंट की चिंता होती है। पूरा आयोजन एक सार्वजनिक इमेज बिल्डिंग एक्सरसाइज जैसा दिखाई देता है।'

सोशल मीडिया यूज़र

'जब चुनावी मंच पर एक-दूसरे पर आरोप लगाने वाले नेता किसी शादी में हँसते-मुस्कुराते मिलते हैं, तो लोगों के मन में सवाल उठना स्वाभाविक है। लेकिन हर मुलाकात को राजनीतिक गठबंधन मान लेना भी सही नहीं होगा।'

राजनीतिक टिप्पणीकारों की सामान्य राय

'राजनीतिक शादियाँ केवल पारिवारिक आयोजन नहीं होतीं। यहाँ उद्योगपति, नौकरशाह, फिल्मी हस्तियाँ और विभिन्न दलों के नेता एक साथ मिलते हैं। इसलिए इन्हें नेटवर्किंग, संवाद और शक्ति प्रदर्शन के मंच के रूप में भी देखा जाता है, हालांकि हर उपस्थिति के पीछे राजनीतिक सौदा होना जरूरी नहीं।'

'हर तस्वीर किसी गठबंधन की कहानी नहीं कहती। कई बार नेताओं की एक साथ मौजूदगी केवल पुराने पारिवारिक संबंधों, सामाजिक शिष्टाचार या व्यक्तिगत सम्मान का प्रतीक भी होती है। इसलिए केवल तस्वीर देखकर निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है।' **-सोशल मीडिया यूज़र**

'जनता की नजर में राजनीतिक शादियाँ हमेशा आकर्षण का केंद्र रहती हैं, क्योंकि यहाँ रिश्तों की वह परत दिखाई देती है जो चुनावी भाषणों और टीवी बहसों में अक्सर नजर नहीं आती।' **सोशल मीडिया यूज़र**

'वीआईपी शादियाँ अब केवल पारिवारिक समारोह नहीं रहीं। कई लोग इन्हें राजनीतिक नेटवर्किंग, भविष्य की संभावनाओं और प्रभावशाली रिश्तों को मजबूत करने का सबसे सुरक्षित मंच मानते हैं।' - **सोशल मीडिया यूज़र**

राजनीतिक विश्लेषकों का क्या मानना है?...

भारत में बड़े राजनीतिक परिवारों की शादियों को राजनीतिक विश्लेषक अक्सर केवल पारिवारिक समारोह नहीं मानते, बल्कि उन्हें सामाजिक नेटवर्किंग, शक्ति-प्रदर्शन और राजनीतिक संदेश देने का मंच भी मानते हैं। हालांकि हर शादी का राजनीतिक उद्देश्य हो, यह जरूरी नहीं है। विश्लेषक आमतौर पर निम्न पहलुओं पर ध्यान देते हैं:

१. शक्ति-प्रदर्शन

जब किसी शादी में अलग-अलग दलों के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, सांसद, उद्योगपति और प्रभावशाली लोग एक साथ दिखाई देते हैं, तो इसे संबंधित नेता की राजनीतिक पहुंच और प्रभाव का प्रदर्शन माना जाता है। इससे यह संदेश जाता है कि नेता की विभिन्न वर्गों और दलों में स्वीकार्यता है।

२. राजनीतिक रिश्तों को मजबूत करने का अवसर

शादियां नेताओं के लिए अनौपचारिक बातचीत का अवसर भी होती हैं। यहां ऐसे नेता भी मिलते हैं जो सार्वजनिक मंचों पर एक-दूसरे के विरोधी दिखाई देते हैं। विश्लेषकों का मानना है कि कई बार भविष्य के राजनीतिक समीकरणों की शुरुआती चर्चाएं ऐसे सामाजिक आयोजनों में होती हैं।

३. सामाजिक पूंजी

राजनीति केवल चुनाव नहीं, बल्कि रिश्तों का भी खेल है। बड़े समारोहों में उपस्थिति से नेता अपने सामाजिक और राजनीतिक नेटवर्क को मजबूत करते हैं। इसे 'सामाजिक पूंजी' बढ़ाने का माध्यम माना जाता है।

४. सार्वजनिक छवि निर्माण

कई नेता ऐसे आयोजनों के जरिए खुद को उदार, सर्वस्वीकार्य और सभी दलों से संवाद रखने वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इससे उनकी छवि कट्टर राजनीतिक विरोधी की बजाय सर्वदलीय संपर्क रखने वाले नेता की बन सकती है।

राजनीतिक विश्लेषकों की सामान्य राय यह है कि ऐसी शादियां पारिवारिक आयोजन होने के साथ-साथ राजनीतिक महत्व भी रखती हैं। लेकिन केवल किसी शादी में नेताओं की मौजूदगी देखकर राजनीतिक सौदे, गठबंधन या गुप्त समझौते का निष्कर्ष निकालना उचित नहीं माना जाता। कई बार यह केवल व्यक्तिगत संबंध, सामाजिक शिष्टाचार या वर्षों पुराने पारिवारिक रिश्तों का परिणाम भी होता है। इसलिए किसी राजनीतिक शादी का विश्लेषण करते समय गंभीर विश्लेषक केवल अतिथियों की सूची नहीं देखते, बल्कि उसके बाद की राजनीतिक घटनाओं, गठबंधनों और निर्णयों को भी परखते हैं।

५. मीडिया और प्रतीकात्मक राजनीति

यदि किसी शादी में वैचारिक रूप से विरोधी दलों के नेता एक मंच पर दिखते हैं, तो मीडिया और राजनीतिक विश्लेषक उसके राजनीतिक संकेतों की व्याख्या करने लगते हैं। हालांकि कई बार यह केवल सामाजिक शिष्टाचार भी होता है और उससे किसी राजनीतिक गठबंधन का निष्कर्ष निकालना सही नहीं होता।

६. आलोचना का पक्ष

कुछ विश्लेषक यह भी कहते हैं कि अत्यधिक भव्य राजनीतिक शादियां लोकतांत्रिक मूल्यों और सादगी की सार्वजनिक छवि से मेल नहीं खातीं। खासकर तब जब नेता जनता के बीच सादगी का संदेश देते हों। ऐसे आयोजनों में खर्च, वीआईपी संस्कृति और प्रभावशाली लोगों की मौजूदगी पर भी सवाल उठते हैं। ■

Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
Flat
20% OFF*
on Making Charges of
Gold Jewellery
916 Hallmarked
Gold Jewellery
Certified
Purity
Attractive
Offers
Celebrate Auspicious Moments
with Timeless Elegance
SOUTH INDIA
shopping mall
Textiles | Jewellery | Home | Shopping
SOUTH INDIA SHOPPING MALL
11-8-122/1, Beside Sangeetha Theatre,
Main Road, Kukatpally,
Hyderabad - 500072, Telangana.
VISIT US TODAY
and make your celebrations
even more precious!
*Offer valid for a limited time only. T&C Apply.

रबड़ की खेती

भारत में केरल सबसे ज्यादा रबड़ का उत्पादन करने वाला राज्य है। केरल के साथ ही भारत के अन्य राज्यों में भी रबड़ की खेती की जाती है। विश्व में रबड़ की खेती करने वाले प्रमुख देशों में थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, भारत, चीन तथा श्रीलंका है। भारत का रबड़ के उत्पादन में विश्व में चौथा स्थान है। भारत में रबड़ की खेती करने वाले प्रमुख राज्य केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक हैं। रबड़ का उपयोग करके उपयोग गाडियों के टायर और ट्यूबों के बनाने में तथा जूतों के तले और एड़ियाँ, बिजली के तार, खिलौने, बरसाती कपड़े, चादरें, खेल के सामान, बोतलों और बरफ के थैलों, सरजरी के सामान, टायर, इंजन की सील, गेंद, इलास्टिक बैंड व इलेक्ट्रिक उपकरणों इत्यादि को बनाने में भी किया जाता है।

भारत में ६० प्रतिशत आबादी कृषि क्षेत्र पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से निर्भर हैं। भारत के किसान अब पारंपरिक खेती के साथ-साथ अपनी आय बढ़ाने के लिए व्यावसायिक खेती की तरफ रुझान कर रहें हैं। इसी कड़ी में रबड़ की खेती करके किसान अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। भारत रबड़ उत्पादन के मामले में विश्व में चौथे स्थान पर है। भारत में केरल सबसे ज्यादा रबड़ का उत्पादन करने वाला राज्य है। केरल के साथ ही भारत के अन्य राज्यों में भी रबड़ की खेती की जाती है। रबड़ का उपयोग करके उपयोग गाडियों के टायर और ट्यूबों के बनाने में तथा जूतों के तले और एड़ियाँ, बिजली के तार, खिलौने, बरसाती कपड़े, चादरें, खेल के सामान, बोतलों और बरफ के थैलों, सरजरी के सामान, टायर, इंजन की सील, गेंद, इलास्टिक बैंड व इलेक्ट्रिक उपकरणों इत्यादि को बनाने में भी किया जाता है। कोरोना जैसी महामारी में रबड़ का उपयोग करके पीपीटी किट भी बनाई गई थी। इसीलिए भारत के साथ-साथ विश्व में रबड़ की डिमांड दिन- प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

रबड़ की खेती करने वाले प्रमुख देश

विश्व में रबड़ की खेती करने वाले प्रमुख देशों में थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, भारत, चीन तथा श्रीलंका है। भारत का रबड़ के उत्पादन में विश्व में चौथा स्थान है। भारत में रबड़ की खेती करने वाले प्रमुख राज्य केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक हैं।

अनुकूल जलवायु, उपयुक्त मिट्टी व समय

रबड़ की खेती करने के लिए हल्की नरम जलवायु की आवश्यकता होती हैं। रबड़ का पौधा मुख्य तौर पर दक्षिण पूर्व एशिया में उष्ण कटिबंधीय जलवायु वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। रबड़ की खेती करने के

पौधे से रबड़ कैसे बनता है?

रबड़ के पौधे से रबड़ को बनाने के लिए उसके पेड़ के तनों में छेद कर पेड़ से निकलने वाले दूध (लेटेक्स) को इकट्ठा कर लिया जाता है। दूध (लेटेक्स) को इकट्ठा करने के बाद इस लेटेक्स का केमिकल्स के साथ परीक्षण करते है, ताकि अच्छी गुणवत्ता वाला रबड़ प्राप्त हो सके। इसके बाद लेटेक्स को गाढ़ा होने के लिए रख देते है, लेटेक्स में मौजूद पानी के सूख जाने के बाद केवल रबड़ ही रह जाता है।

रबड़ के पेड़ से निकलने वाले दूध (लेटेक्स) पानी से भी हल्का होता है, जिसमें रबड़ के अलावा शर्करा, प्रोटीन, रेज़िन, खनिज लवण और एंजाइम्स भी पाया जाता है। रबड़ में इतना लचीला पन पाया जाता है, जिससे रबड़ अपने आकार से ८ गुना तक लंबा हो सकता है, रबड़ के इसी गुण की वजह से रबड़ के जूते, गेंद और गुब्बारे जैसी वस्तुओं को बनाया जाता है।

एक बार रबड़ का पेड़ लगाने पर ४० साल तक उत्पादन

रबड़ का पेड़ एक बार लगाने पर ५ वर्ष का होने के बाद उत्पादन देना शुरु कर देता है, लेकिन १४ साल में उत्पादन उच्च स्तर पर पहुंचता है और लगभग ४० वर्षों तक पैदावार देता रहता है। एक एकड़ के खेत में रबड़ के १५० पौधे लगाए जा सकते हैं। एक पेड़ से एक साल में २.७५ किलो तक रबर का उत्पादन प्राप्त होता है। इस तरह से किसान भाई १०० से ३५० किलो तक रबड़ का उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। रबड़ का एक पेड़ १४ साल से लेकर २५ साल तक दूध (लेटेक्स) का अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है। हालांकि २५ साल बाद पेड़ों से लेटेक्स का उत्पादन कम प्राप्त होना शुरू हो जाता है। जिसके बाद इन पेड़ों को दूसरे कामों के लिए बेच दिया जाता है। सामान्तयः रबड़ के पेड़ ४० साल के बाद गिर जाते हैं। इन पेड़ों से प्राप्त लकड़ी का इस्तेमाल रबड़वुड फर्नीचर बनाने में होता है।

लिए २५ से ३० डिग्री का तापमान उपयुक्त होती हैं और १५० से २०० सेंटीमीटर की वर्षा रबड़ की खेती करने के लिए उपयुक्त होती हैं। रबड़ की खेती करने के लिए लेटेराइट युक्त लाल दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी का पीएच मान ४.५ से ६.० के बीच का होना चाहिए। रबड़ के पौधों को लगाने का सही समय जून से जुलाई के मध्य का है। रबड़ के पौधों का अच्छा विकास करने के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है, सूखा होने की स्थिति में पौधा कमजोर होता है, इसमें अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है।

खेत की तैयारी कैसे करें

रबड़ की खेती करने से पहले इसके पौधों की रोपाई करने के लिए खेत की तैयारी करना आवश्यक होता है। क्योंकि रबड़ की खेती करने के लिए इसके तैयार पौधों की रोपाई गड्ढ़ों में की जाती है। इसलिए खेत में गड्ढ़ों को तैयार करने से पहले खेत की कल्टीवेटर की मदद से गहरी जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी कर लेनी चाहिए। उसके बाद पाटा लगाकर खेत को समतल करना आवश्यक होता है। पाटा लगाने से खेत समतल हो जाता हैं जिससे खेत की सिंचाई करने में आसानी होती हैं।

उन्नत किस्में

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान ने कई सालों के शोध करने के बाद रबड़ की कई उन्नत किस्में विकसित की हैं, इन किस्मों की खेती से अच्छी मात्रा में लेटेक्स प्राप्त होता है। रबड़ की कुछ उन्नत किस्में हैं- तजीर १, पीबी ८६, बीडी ५, बीडी १०, पीआर १७, जीटी १, आरआरआईआई १०५, आरआरआईएम ६००, पीबी ५९, पीबी २१७, पीबी २३५, आरआरआईएम ७०३, आरआरआईआई ५, पीसीके-१, २ और पीबी २६० आदि हैं।

पौधों की रोपाई

रबड़ की खेती करते समय खेत की तैयारी करने के बाद रबड़ की पौधों की रोपाई गड्ढ़ों में की जाती हैं। इसके लिए खेत में एक गड्ढ़े से दूसरे गड्ढ़े के बीच ३ मीटर की दूरी रखना आवश्यक होता हैं। गड्ढ़े एक फीट चौड़े और एक फीट गहरे होने चाहिए। सभी गड्ढ़ों को एक कतार में तैयार करें। इसके साथ ही पौधों की रोपाई के समय मिट्टी के अनुसार कृषि विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर जैविक खाद एवं रासायनिक उर्वरक जैसे पोटाश, नाइट्रोजन और फॉस्फोरस का उचित मात्रा में प्रयोग करें। रबड़ की पौधों की रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई अवश्य कर दे।

खाद व उर्वरक प्रबंधन

रबड़ की पौधे की रोपाई के लिए गड्ढा तैयार करते समय प्रत्येक पौधे के गड्ढे में १० से १२ किलो अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद या जैविक खाद और २२५ ग्राम रॉक फॉस्फेट का उपयोग करना चाहिए। रबड़ के पौधों का विकास करने के लिए समय-समय पर पोटाश, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस से पर्याप्त मिश्रित उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए और रबड़ की खेती में खरपतवार नियंत्रण के लिए समय-समय पर निराई-गुड़ाई करना आवश्यक होता हैं।

पौधों की सिंचाई व देखभाल

रबड़ के पेड़ को अधिक पानी की जरूरत होती है, इसलिए इसके पौधों को बार-बार पानी देने की आवश्यकता होती है। रबड़ का पौधा सूखा जैसी स्थिति नहीं सहन कर पाता। इसलिए रबड़ के खेत में नमी बनाए रखने के लिए समय-समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए। रबड़ के पौधों को सही संतुलन और उचित जलवायु की जरूरत होती है। इसका अर्थ है, कि अधिक प्रकाश और नम भूमि पौधों को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त उर्वरक प्रदान करता है। इसके पौधों पर पत्तियां मोमी वाली होती है, जिसका रंग शुरुआत में गुलाबी-कोरल का होता है। रबड़ के पौधे की लंबाई अधिक होती है, जिस वजह से इसे गिरने से रोकने के लिए लंबी लकड़ी का सहारा देना पड़ता है।

रबड़ की खेती के लिए बीज, कहां बेचे रबड़ की प्राप्त उपज

रबड़ की खेती की शुरुआत करने से पहले आप रबर बोर्ड व कृषि वैज्ञानिक से अधिक उत्पादन के लिए सलाह ले सकते हैं। छोटे व सीमांत किसान स्थानीय रबड़ नर्सरी से जाकर रबड़ के पौधे खरीद सकते हैं। रबड़ की खेती करने के लिए रबर बागान योजना के अंर्तगत किसानों को बीज उपलब्ध कराए जाते हैं। रबड़ की प्राप्त उपज की बिक्री की बात करें, तो किसान कंपनियां व रबड़ प्रोसेसिंग यूनिट्स को अपनी उपज बेच सकते हैं। ■ साभार : ट्रैक्टर जंक्शन

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।

आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।

किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount
1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532